विचार दृष्टि

वर्ष : 8 अंक : 26 जनवरी-मार्च 2006 15 रुपये

- बिहार में सत्ता-परिवर्तन
- नीतीश कुमार का यही सपना, एक नया बिहार हो अपना
- संसद को शर्मसार किया बिकाऊ सांसदों ने

'विचार दृष्टि' की सहायक संपादक
अंजलि परिणय सूत्र में बंधी

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा आयोजित सरदार पटेल की 130वीं जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में राष्ट्रीय एकता यात्रा एवं जयंती समारोह के अवसर की चित्रमय झलकियाँ

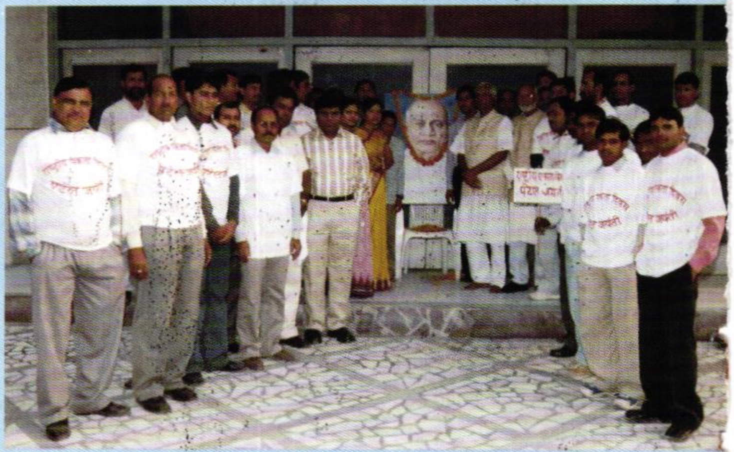

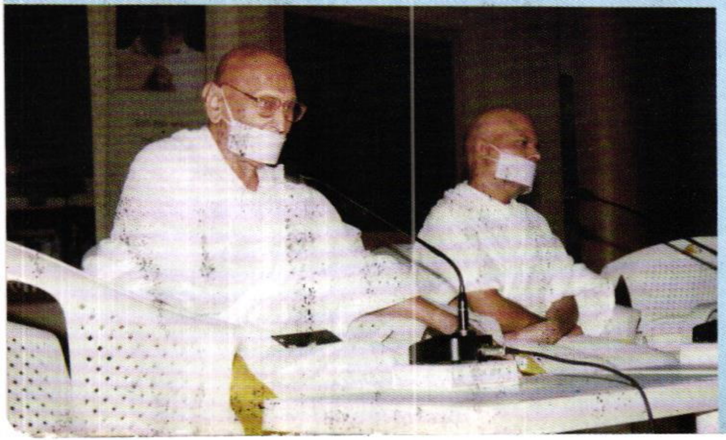

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)
वर्ष- 8 जनवरी-मार्च, 2006 अंक- 26

संपादक-प्रकाशक : **सिद्धेश्वर**
सं. सलाहकार : **गिरीश चंद्र श्रीवास्तव**
प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**
उप संपादक : **डॉ० शाहिद जमील**
सहायक संपादक : **अंजलि**
आवरण साज-सज्जा :
शब्द संयोजन : **एस०पी० इनफोटेक डी-55, शिपरा होटल के पास, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92**

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय
'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
☎ : (011) 22530652 / 22059410
मोबाईल : 9811281443 / 9811310733
फैक्स : (011) 52487975
E-mail: vichardrishti@hotmail.com
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
☎ : 0612-2228519

पटना कार्यालय
आर० ब्लॉक, पथ सं० 5, आवास सं० सी०/6, पटना-800001 ☎ : 0612-2226905

ब्यूरो प्रमुख
नागपुर : मनोज कुमार ☎ : 2553701
कोलकाता : जितेन्द्र धीर ☎ : 24692624
चेन्नई : डॉ० मधु धवन ☎ : 26262778
तिरूवनंतपुरम : डॉ० ऋषभदेव शर्मा
बैंगलूर : पी०एस०चन्द्रशेखर ☎ : 26568867
हैदराबाद : श्री चंद्रमौलेश्वर प्रसाद
जयपुर : डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎ : 2225676
अहमदाबाद : रमेश चंद्र शर्मा 'चन्द्र'

प्रतिनिधि
दिल्ली : श्री उदय कुमार 'राज़'
लखनऊ : प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,
ग्वालियर : डॉ. महेन्द्र भटनागर
सतना : डॉ. राम सिया सिंह पटेल
देहरादून : डॉ. राज नारायण राय

मुद्रक
प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य एक प्रति :	25 रुपये
वार्षिक :	100 रुपये
द्विवार्षिक :	200 रुपये
आजीवन सदस्य :	1000 रुपये
विदेश में एक प्रति :	US $ 05
वार्षिक :	US $ 20
आजीवन:	US $ 250

एक नज़र में रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना ... 02
संपादकीय ... 05

विचार-प्रवाह :
सरफ़रोशी की तमन्ना...कवि कौन? 07
-डॉ० शांति जैन

साहित्य :
जाले में फँसी मकड़ी (कहानी) ... 10
-डॉ० शाहिद जमील

काव्य-कुंज : ... 14
कीर्ति वर्द्धन, कमाल ज़ाफ़री, शशि शेखर शर्मा, मो० सुलेमान, अमृता प्रीतम, 'पाचर' डॉ० देवेन्द्र आर्य, जिया लाल आर्य, मोहजीत कुमार, अक्षय जैन

व्यंग्य :
आप हैं कार्यकर्ता ... 18
-सत्यनारायण भटनागर

अध्यात्म :
पड़ोसी के अधिकार एवं कर्त्तव्य ... 20
-डॉ० जाहिद अनवर
तुम चंदन हम पानी ... 22
-डॉ० सुभाष शर्मा

समीक्षा :
सर्वथा उत्कृष्ठ, अभिनव एवं कमनीय कहानी -परमानंद दोषी... 24
संवेदना के स्तर पर झकझोरती मयुरा की रचनाएँ -उदय कुमार 'राज'.. 25
उपेक्षित पात्र को नायकत्व प्रदान करता खण्ड काव्य -भगवती प्रसाद द्विवेदी 26

राजनीतिक नजरिया :
संसद को शर्मसार किया सांसदों ने - सिद्धेश्वर ... 28
बिहार की जनता के आहत का स्वाभिमान -डॉ० कलानाथ मिश्र ... 30

शख्सियत :
संत आचार्यश्री तुलसी ... 31
-रतन लाल कोठारी

दृष्टि :
अलौकिक प्रेम का अद्‌भुत-चिरस्मरणीय प्रतीक ताज़महल
-अंजलि ... 33

गतिविधियाँ
विचार दृष्टि की संपादक अंजलि परिणय-सूत्र में बंधी ... 34
सरदार पटेल की 130वीं जयंती ... 36
हैदराबाद की चिट्‌ठी ... 38
आचार्यश्री महाप्रज्ञ का कवि रूप ... 39
पुस्तक-लोकार्पण ... 40

सम्मान :
बरदोई को नोबेल शांति पुरस्कार ... 44
अन्नान को पर्यावरण पुरस्कार ... 44

संस्मरण :
निर्मल वर्मा 47
अमृता प्रीतम.... ... 49
मधु दंडवते.... ... 51

श्रद्धांजलि
के० आर० नारायणन ... 52
साभार-स्वीकार ... 54

सत्ता परिवर्तन

संसद शर्मसार

शख्सियत

दृष्टि

पटेल को प्रणाम

अंजलि संग प्रवीण

संस्मरण / श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि' ❑ प्रो० राम बुझावन सिंह ❑ प्रो. धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑ श्री बाँकेनन्दन प्र० सिन्हा ❑ डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑ डॉ० एल०एन० शर्मा

पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं
रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का संहमत होना आवश्यक नहीं।

प्रिय पाठकों! प्रकाशित रचनाओं तथा अंक के प्रस्तुति पक्ष पर आपकी प्रतिक्रिया, पत्रिका परिवार के लिए एक संबल है। हमें आपकी प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं से हम केवल उन्हीं प्रतिक्रियाओं को शामिल कर पाते हैं, जिनमें वस्तुनिष्ठ, कृतियों से संदर्भित संक्षिप्त समीक्षा / टिप्पणी या मार्ग-दर्शक बिंदु आदि होते हैं। भ्रामक प्रशंसा और इर्ष्या-दर्शी विचारों के प्रेषण से डाक-खर्च ज़ाया होता है। ❍ **संपादक**

प्रेरक संपादकीय

संपादकीय प्रेरक, प्रबोधात्मक, सारगर्भित एवं अत्यंत सामयिक बन पड़ी है। महामहिम राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम कृत 'अंतरात्मा पर चिंतन' शीर्षक रचना युग-बोध को भलीभाँति शब्द दे रही है। यह गद्य-रचना पाठकों को 'आत्मनिरीक्षण' की दिशा में उन्मुख कर रही है। काव्य-रचनाओं की राह से होकर गुज़रना सुखदायक रहा। 'लघुकथा' विधा की रचनाएँ प्रिय लगीं। श्री सिद्धेश्वर-कृत 'आधी आबादी पर अँकुश का औचित्य' शीर्षक आलेख आज के यथार्थ को हमारे सामने रख रहा है। विचारक एवं लेखक ने इस समस्या के निराकरण के लिए 'शिक्षा' को अपरिहार्य माना है जो निश्चय ही निरापद समाधान है।

राजेन्द्र प्रसाद गुप्त-कृत 'गाँधी और हम' नाम्नी गद्य-रचना पठनीय एवं अनुकरणीय है। सविता लखोटिया की रचना वस्तुपक्ष की दृष्टि से सशक्त होते हुए भी अभिव्यक्ति-पक्ष की दृष्टि से अशक्त लगी। अंजलि की रचना के आधार पर लेखिका को विचारप्रेरक मान लेना चाहिए।

संपादन कला की सराहना करने को जी चाहता है।

❍ **डॉ॰ महेश चन्द्र शर्मा,**
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
'अभिवादन' 128 ए, श्याम पार्क (मेन)
साहिबाबाद (ग़ाज़ियाबाद) उ॰प्र॰-201005

ध्यान इस ओर भी

विषय की बहुलता और आस्वाद की विविधता की दृष्टि से यह अवश्य ही एक समग्र पत्रिका है। आवरण से तो यह अवश्य ही 'राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना विशेषांक' को अन्वर्थ करता है, परंतु तदनुकूल विशिष्ट सामग्री का समावेश इस अंक में अपेक्षित रह गया है। फिर भी, इसमें प्रचार और विचार दोनों संतुलित विनियोग में आपका संपादकीय मनीषा और पत्रकारोचित अनन्वीक्षिकी साधुवाद के योग्य है। इस बार यह अंक मुद्रणगत अशुद्धियों से कुछ अधिक ही आक्रांत हो गया है। आपका ध्यान इस ओर भी रहना चाहिए।

❍ **डॉ॰ श्रीरंजन सूरिदेव**
37, एस॰बी॰आई॰ ऑफ़िसर्स कॉलोनी, काली मंदिर मार्ग, हनुमाननगर, कंकड़बाग़, पटना -20

पठनीय एवं संग्रहणीय

प्रकाशित प्राय: सभी रचनाएँ पर्याप्त स्तरीय हैं। 'राष्ट्रीय एकता के समक्ष नयी चुनौतियाँ' विषयक 'संपादकीय' चिंता एवं चिंतन दोनों ही आयामों को लिए हुए है। निश्चय ही इन चुनौतियों का समाधान राष्ट्रभाव के जागरण से ही संभव है। राष्ट्रभाव का जागरण 'स्व' को विस्तार देता है तथा विसर्जनीय क्षमता भी बढ़ाता है। डॉ॰ महेश चन्द्र शर्मा का लेख जहाँ वैचारिक क्रांति पर बल देता है, वहीं डॉ॰ शत्रुघ्न प्रसाद ने बंगभंग विरोधी आंदोलन के स्वरूप को सुंदर वाणी प्रदान की है। डॉ॰ ध्रुव का 'जैन संस्कृति तथा इतिहास बोध' भी प्रशंसनीय लेख है। कविताएँ विशेष रूप से 'निर्दोष तितलियों की हत्या', 'कुदरत का कहर' तथा 'लहरों का दानव' पर्याप्त प्रभावी हैं। समीक्षाएँ उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक हैं।

कुल मिलाकर प्रस्तुत अंक न केवल पठनीय है वरन संग्रहणीय भी है।

❍ **डॉ॰ गणेशदत्त सारस्वत**
संपादक 'मानस चंदन' सीतापुर, उ॰प्र॰

विचारणीय मुद्दे

'राष्ट्रीय एकता के समक्ष नई चुनौतियाँ' शीर्षक संपादकीय में जिन मुद्दों को उठाया है वह अक्षुण्णरूप से विचारणीय है। बहुत ही विचारोत्तेजक ढंग से राष्ट्रीय एकता के समक्ष उपस्थित नई चुनौतियों की पहचान कर उन पर प्रहार किया है।

डॉ॰ महेश चन्द्र शर्मा, दिवाकर वर्मा, राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, सविता लखोटिया एवं अंजलि के आलेख भी समकालीन सामाजिक जीवन की विविध स्थितियों पर स्वस्थ चिंतन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। पुस्तकों की समीक्षा स्तरीय है। कविताएँ, लघुकथाएँ और गतिविधियों की जानकारी पत्रिका की उपादेयता बढ़ाने में सक्षम हैं।

❍ **रामयतन यादव**
मक़सूदपूर पो॰- फ़तूहा, पटना- 803201

विचार परोसने वाली पत्रिका

विचारगर्भित एक से एक आलेख पढ़कर विपुल जानकारी प्राप्त की गई। विषय-वस्तु भी अनेक प्रकार के हैं, जिनसे पाठकों के लिए यह बहुत उपयोगी हो गयी है। वर्तमान समस्याओं से संबंधित विचार परोसनेवाली यह पत्रिका विशिष्ट ढंग की है।

❍ **दरोगा शर्मा 'शैलशिखर'**
नीलम पथ, मुंगेर- 811201

श्रम बेकार नहीं जाएगी

यह अंक पिछले सभी अंकों से अलग-स्तरीय लगा। रचनात्मक और संपादन दोनों दृष्टिकोण से। ऐसी साहित्यिक-राजनीतिक पत्रिका निकालने में आप जो परिश्रम कर रहे हैं वह बेकार नहीं जाएगा।

स्मिता पाटिल की कहानी 'कड़वा सच' प्रभावित करती है और कविताओं के स्तर में सुधार की आवश्यकता है। डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा, डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र और राजेन्द्र प्रसाद गुप्त की रचनाएँ श्रेष्ठ हैं। पुस्तक समीक्षा में परिपक्वता है। साहित्यिक पृष्ठों की संख्या कम है। कुछ लेख कम करके इसकी संख्या बढ़ा सकते हैं। कलात्मक चित्रों का प्रयोग अच्छा है।

❍ **सिद्धेश्वर**
अवसर प्रकाशन, पोस्ट बक्स सं॰ 205, करबिगहिया, पटना- 800001

अज्ञानता पर क्षोभ हुआ

एक सिटिंग में पूरी पत्रिका देखा और पढ़ा। अपनी अज्ञानता पर क्षोभ हुआ कि 'विचार दृष्टि' अब तक दृष्टि से ओझल रही। जितना कुछ पढ़ा ... काफ़ी ताज़गी भरा लगा।

❍ **महेशचन्द्र सोती**
सी॰/ 125, विवेक विहार, दिल्ली-95

कविताएँ भी सामयिक

यह अंक सत्य, शिव और सुंदर का समुचित समाहार है। राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम का 'अंतरात्मा पर चिंतन' के अतिरिक्त डॉ॰ महेश चन्द्र शर्मा, डॉ॰ शत्रुध्न प्रसाद एवं अंजलि की रचनाएँ विचारोत्तेजक तथा कविताएँ सामयिक और सुरुचिपूर्ण हैं।

❍ राजभवन सिंह
पोस्टलपार्क, बुद्धनगर, पथ सं॰-2, पटना-1

संपादकीय में वैचारिक पारदर्शिता

'विचार दृष्टि' को आपने अत्यंत ही कम अवधि में अपने लगन और सत्प्रयासों के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर दिया। स्तरीय रचनाओं के साथ-साथ कागज़ और मुद्रण की दृष्टि से भी पत्रिका अत्यंत सराहनीय है। संपादकीय वैचारिक पारदर्शिता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूण है। किन-किन बातों के लिए धन्यवाद दूँ? बस आभार ही प्रकट कर सकता हूँ।

❍ डॉ॰ कलानाथ मिश्र
अभ्युदय, ई 112, श्रीकृष्णापुरी, पटना-1

सामग्री राष्ट्रचेतना की परिपोषक

राष्ट्रीय एकता व सद्‌भावना विशेषांक में संग्रहित समस्त सामग्री राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रप्रेम एवं भारतीय संस्कृति की परिपोषक है। साहित्य, लघुकथा, काव्य कुंज ही नहीं, समस्त संकलन स्तुत्य है।

संपादकीय 'राष्ट्रीय एकता के समक्ष नई चुनौतियाँ' देश की वर्तमान यथार्थ स्थिति का हृदयस्पर्शी पारदर्शी चित्रण है। नि:संदेह 'विचार दृष्टि' पत्रिका हिंदी भाषा, राष्ट्रोत्थान एवं भारतीय संस्कृति को संवारने में मील का पत्थर बनेगी।

❍ त्रिभुवन सिंह चौहान
532 ए॰/45, चौधरी टोला, अलीगंज, लखनऊ (उ॰प्र॰)

विविधवर्णी

'विराट विमर्श' की समीक्षा आपने प्रकाशित की। आभार व्यक्त करता हूँ। अंक की सामग्री पाठकों को संतुष्ट करने में सक्षम है। विविधवर्णी पाठकीय रचना है।

❍ चंद्रसेन 'विराट'
121, बैकुण्ठधाम कॉलोनी, इंदौर (म॰प्र॰)

नज़रिया जनजागरण का

'विचार दृष्टि' सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना विकसित करनेवाली पत्रिका है। इसका नज़रिया जन जागरण का है। डॉ॰ महेश चंद्र, डॉ॰ शत्रुध्न प्रसाद, डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद और डॉ॰ ध्रव कुमार की रचनाएँ पसंद आईं। सिद्धेश्वर का लेख राष्ट्रीय चेतना का विषय है। इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

❍ राधेलाल बिजधावने
ई॰ 8/73 भरतनगर शाहपुरा, भोपाल

इस पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए

महाममि राष्ट्रपति जी का 'अंतरात्मा पर चिंतन' दिग्भ्रमित राष्ट्र को मार्ग दर्शन कराती है। वस्तुतः इसी चिंतन का अभाव हमें भौतिकतापूर्ण जीवन जीने का आनंद दे रहा है जो बढ़ती बिपदा का कारण है। अंजलि जी का वात्सल्य सराहनीय है। आपका जनसंख्या पर विचार सभी धर्मों के व्यक्तियों के लिए एक सामान्य कानून को बनाने की प्रेरणा देता है। पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय बहस इस पर होनी चाहिए।

❍ राजेंद्र प्रसाद गुप्ता
कवैया रोड, लखीसराय, बिहार

विविध साम्रग्रियों से पूर्ण

संपादकीय सराहनीय है। पत्रिका विविध सामग्रियों से पूर्ण है। 'विचार प्रवाह', 'साहित्य', 'दृष्टि', राजनीतिक नज़रिया' आदि ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया।

मेरा विश्वास है कि हिंदी जगत में यह पत्रिका अपना अलग स्थान सिद्ध करने में समर्थ होगी।

❍ रघुवंश प्रसाद वर्मा
सरिस्ताबाद रोड, शांति पथ, पटना-1

ललकारते ही रहते हैं

अपनी परंपरा के अनुरूप इस अंक में भी कई उत्कृष्ट रचनाएँ पढ़ने को मिलीं। समीक्षा के पृष्ठ बहुत अच्छे लगे। डॉ॰ महेशचंद्र शर्मा का आलेख 'वैचारिक क्रांति : क्यों और कैसे' से नया दृष्टिकोण मिलता है। उन्होंने कुछ क्षेत्रों पर से पर्दा हटाने का प्रयास किया है, जो प्रशंसनीय है। लेकिन इसमें और अधिक मुँह खोलने की ज़रूरत है।

राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम की कविता उत्साह बढ़ाने और नये जीवन के प्रति आशा जगाने वाली है। वे तो भारतवासियों को आगे बढ़ने के लिए ललकारते ही रहते हैं।

❍ गोविंद शर्मा
प्रेम-विहार, इंद्रपुरी, रोड न॰- 1 पटना

हर बार की तरह

हर बार की तरह अंक तो इस बार भी आकर्षक ही लगा। 'संपादकीय' में विचार का विस्तार काफ़ी है। पुस्तक समीक्षाओं के पृष्ठ कुछ ज्यादा ही थे।

❍ रामगोपाल राही
लाखेरी, जिला- बूँदी (राज॰)

नियमित प्रकाशन का कीर्तिमान

मेरी निगाह में पत्रिका के स्तरीय होने के साथ-साथ उसके नियमित प्रकाशन को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि संपादक-प्रकाशक संयुक्तांक प्रकाशित कर यह समझ लेते हैं कि पत्रिका के नियमित प्रकाशन का दायित्त्व निभा दिया। ज़ाहिर है कि अनियमित प्रकाशन से पत्रिका के प्रति उत्सुकता और दिलचस्पी घटती है।

'विचार दृष्टि' ने आठ साल तक (बिना संयुक्तांक) पत्रिका के नियमित प्रकाशन का कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके लिए संपादक-प्रकाशक सिद्धेश्वर और उनकी टीम को मुबारकबाद। पर्दे के पीछे महसूस किए जानेवाले वार्षिक ग्राहक-पाठक और विज्ञापनदाता भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

❍ साजिद सलीम
स्टेशन रोड, समस्तीपुर, बिहार

अंक में नयापन

"विचार दृष्टि" बराबर मिलती रही है। वैचारिकता के साथ साहित्य एवं साहित्यकारों के परिचय, सम्मान आदि से सज्जित अंक में नयापन है। आज जब साहित्यिक पत्रिका निकालना अभिशाप है, तब आपका प्रयास सराहनीय है।

❍ कमला प्रसाद 'बेखबर'
संपादक 'शैली'
कामायनी प्रोफेसर कॉलोनी
फारबिसगंज-854318 (बिहार)

मनन, ग्रहण एवं ज्ञानबर्धक

'विचार दृष्टि' का अंक 25 पाकर और उसमें भगवती प्रसाद द्विवेदी द्वारा स्व० रघुनाथ प्रसाद 'विकल' पर लेख पढ़कर मन को शांति हुई। उनको गऐ ग्यारह महिने हो गऐ। पत्र की प्रतीक्षा सदा के लिऐ चली गई। 'विकल' जी से पत्राचार कर रहा था। वह शुभेच्छु, प्रेरक एवं साहित्य रचना के मार्गदर्शक भी थे। उनकी छबि आपने इस अंक में छापकर मुझे दुर्लभ वस्तु प्रदान की है इसके लिए लेखक भगवती प्रसाद 'द्विवेदी' को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी पत्रिका आदि से अंत तक मनन, ग्रहण एवं ज्ञानवर्द्धक एवं सामाजिक चेतना से पूर्ण है। साहित्यिक तो है ही संपादकीय लेख भी विचारणीय है। पत्रिका संवृद्ध एवं संग्रहणीह है।

❍ श्रीमती कान्ति अय्यर
द्वारा तुलसी हॉस्पीटल, पीज भागोल
नडियाद-387001 (गुजरात)

स्तरीय पत्रिका

आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका 'विचार दृष्टि' प्राप्त हुई। ऐसी स्तरीय पत्रिका हमारे इस इलाके में विरले ही मिलते है, अत: वार्षिक सदस्यता प्राप्त करने को इच्छुक हूँ।

❍ श्रीमती शुक्ला चौधरी
हिंदी शिक्षा-साहित्यकार
22/सी, जगत राय चौधरी रोड
पत्रालय-बारिसा, कोलकाता-8
दूरभाष : 033-2447-4513

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।
(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।
(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।
(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जातीं, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।
(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।
(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएँ 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।
(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

दृष्टि 6, विचार बिहार,
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92,
दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

सिद्धेश्वर
संपादक, 'विचार दृष्टि'

हम आपसे ही मुख़ातिब हैं

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मज़ा आता है उतना मुफ़्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका के नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बनना अपना कर्त्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निबंधित होने पर पिछले आठ साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य-सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तक़ाज़ा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और हम भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकेंगे। पिछले छः महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरुचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता, उदारता एवं सेवाभाव का द्योतक है। हम तहेदिल से आभारी हैं आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें। पत्रिका परिवार की ओर से नव वर्ष की बधाई।

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय

'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 फोन: 011-22059410 / 22530652
'बसेरा', पुरन्दरपुर पटना-800001 फोन: 0612- 2228519 एवं
आर० ब्लॉक, पथ सं०-5, आवास सं०-सी०/6, पटना- 800001 फोन: 0612- 2226905

जरा इनकी भी सुनें

अगर केंद्रीय मंत्रिमंडल के प्रस्तावित फेरबदल में कोई दागी मंत्रिमंडल में शामिल किया जाता है तो निश्चय ही यह अच्छी बात नहीं होगी।
– राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम

स्थानीय क्षेत्र सांसद विकास निधि को बंद किया जाना चाहिए
– उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत

भारतीय वास्तविकताओं एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही युद्ध कला तैयार की जानी चाहिए और इस संबंध में केवल पश्चिमी देशों की नकल करने से काम नहीं चलेगा।
– थलसेनाध्यक्ष, जनरल जे०जे०सिंह

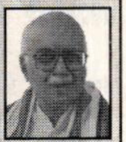

राजनीति में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए इंद्रजीत गुप्ता समिति की सिफारिशों पर अमल कर चुनाव का खर्च सरकार उठाए।
– प्रतिपक्ष के नेता लाल कृष्ण अडवाणी

शायद कोई कोबरा या नागिन डॉट कॉम मुझे स्टिंग ऑपरेशन में फँसाना चाहती है।
–स०पा० नेता अमर सिंह

सोनिया के विदेशी मूल का मुद्दा अब कोई मुद्दा नहीं रह गया है या यूँ कहें कि पूरी तरह समाप्त हो गया है।
–पूर्व लोकसभाध्यक्ष पी०ए० संगमा

हमारा लक्ष्य सत्ता का नहीं, व्यवस्था परिवर्तन का है। विरोधी न माने तो मैं गद्दी छोड़ दूँगा, फिर जागृत जनता विरोधियों को करारा जवाब देकर सपा को पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में वापस लाएगी।
– उ०प्र० के मुख्यमंत्री मुलायमसिंह यादव

लालू तो मेरे गाल की तरह बिहार की सड़कें न बनवा सके पर नीतीश अब ऐसा करके दिखाएँगे।
–सांसद हेमामालिनी

बिहार में सत्ता-परिवर्तन

अक्टूबर-नवम्बर, 2005 में संपन्न बिहार विधान सभा चुनाव के बाद जद (यू॰) नेता नीतीश कुमार ने बिहार के 33 वें मुख्यमंत्री का पद संभाला और इस प्रकार आखिरकार बिहार को पंद्रह वर्षों के पश्चात् 'जंगलराज' से मुक्ति मिली। मगर आनेवाला वक़्त मुख्यमंत्री श्री कुमार के लिए परीक्षा की घड़ी है, क्योंकि बिहार की बिगड़ी स्थिति को पटरी पर लाना कोई आसान काम नहीं है और उसमें भी तब जब बिहार की राजनीति जातिगत समीकरणों में आकंठ डूबी है। हालांकि यह भी सच है कि बिहार में पहली बार निर्वाचन आयोग के सलाहकार के॰जे॰ राव के अथक प्रयास के चलते निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव हुए और बिहार के मतदाताओं ने जाति, धर्म, वर्ग एवं संप्रदाय से ऊपर उठकर मतदान किया। जिस राज्य में झोपड़ियों के अंदर अपनी चोंच में वोट दबाए सफ़ेद कबूतरों के वोट काले मटमैले गिद्ध छीन ले जाते थे, उस राज्य में एक भी गिद्ध के पंख नहीं फड़फड़ाए। हिंसामुक्त चुनाव किसी रक्तहीन क्रांति से कम नहीं। इस तरह के चुनाव के लिए बिहार के मतदाता सहित के॰जे॰ राव को हार्दिक बधाई। इस प्रयास के लिए के॰जे॰ राव को लंबे समय तक याद रखा जाएगा। यह चुनाव बिहार के लोकतांत्रिक इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। विश्वास है के॰जे॰ राव से प्रेरणा प्राप्त कर बिहार के नए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार को न केवल उसकी खोई प्रतिष्ठा एवं गरिमा वापस ला सकते हैं, बल्कि तक़दीर बदल सकते हैं। ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि राज्य के प्रशासन का लगाम वेसे अधिकारियों के हाथों में सौंपा जा सकेगा जो अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण पिछले डेढ़ दशक से प्रशासनिक ज़िम्मेदारियों से दूर थे, अथवा सजा काट रहे थे।नए मुख्यमंत्री ने इसी वजह से नौकरशाहों को खुली छूट देकर उन्हें उनकी ज़िम्मेदारियों का एहसास कराया है। चुनाव आयोग विशेषकर उनके सलाहकार श्री राव ने थोड़े दिनों के लिए ही सही बिहार के 'जंगलराज' को 'मंगलराज' में बदल दिया। नतीजतन अपने ही जंगल में शेर शिकार हो गया और मृदुभाषी, गंभीर और विकास को मुद्दा बनाने में सफल रहे नीतीश कुमार अराजक और विकास विरोधी सरकार से सत्ता छीनने में कामयाब रहे।

बिहार का ताज़ा चुनाव नतीजा इस बात का प्रमाण है कि 1990 के मंडल आंदोलन के साथ लालू प्रसाद ने पिछड़ों में जो उम्मीदें जगाई थी, उन्हें पूरा करने में वे बुरी तरह विफल रहे और इसकी सज़ा उन्हें पिछड़ों-अति पिछड़ों तथा गरीबों ने इस चुनाव में दे दी। फ़र्ज़ी नेतई, चम्मचई सब धरी की धरी रह गई। जूठन पर कटा बचपन, भीख पर रेंगता बचपन, नंगों को लूटते-नोचते भूखे और कुत्ते से भी बदतर भूख की लड़ाई लड़ते बिहार की यही पहचान बनकर रह गई थी। इसमें कोई शक नहीं कि नीतीश कुमार को काँटों का ताज मिला है। बिहार की मौजूदा हालात में सुधार लाना सहज नहीं है लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें एक ऐसा अवसर दिया है कि बिहार को पटरी पर लाकर वे इतिहास पुरुष बन सकते हैं। वैसे भी पूर्व में रेलमंत्री के पद पर रहकर बिहार झारखण्ड के साथ-साथ भारत के प्राय: सभी क्षेत्रों में रेलों का जाल उन्होंने बिछाया और बृहत पैमाने पर रेल-निमार्ण का कार्य किया उससे 'विकासपुरुष' के रूप में उन्होंने ख्याति अर्जित कर रखी है। अब देखना यह है कि बिहार को लेकर जो उनके समक्ष चुनौतियाँ उपस्थित हैं उनपर वे कितना खरा उतरते हैं क्योंकि लालू प्रसाद पराजित तो ज़रूर हुए हैं पर समाप्त नहीं हुए हैं। इसीलिए विधि-व्यवस्था को ठीक करने, विकास की गति को बढ़ाने, बिहारियों को रोज़गार के लिए पलायन रोकने तथा बाढ़-सुखाड़ जैसे मुद्दों पर नीतीश कुमार को काम करके दिखाना होगा, पूँजी निवेश के लिए अपराधियों पर अंकुश लगाना होगा, क्योंकि बिहार की जनता का इस सत्ता-परिवर्तन से काफ़ी आशाएँ और अपेक्षाएँ हैं। इसलिए क्रांतिकारी बदलाव के लिए उन्हें बिहार की ध्वस्त हो चुकी आधारभूत संरचना को ठीक करना होगा। बिहार की जनता अगड़ों और पिछड़ों की राजनीति के साथ-साथ नक्सलियों के आतंक से भी त्रस्त है। इस चुनौती का सामना करने के लिए मुख्यमंत्री को सबसे पहले सामाजिक सद्भाव स्थापित करने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त उन्हें राजनीतिक चुनौतियों से भी निपटना होगा।

बिहार विधान सभा चुनाव के बाद सत्ता परिवर्तन से यह संकेत मिल गया है कि बिहार की जनता अपनी बदरंग पहचान बदलना चाहती है। बिहार के लोग प्रत्येक पेशे में अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर खास पहचान रखते हैं लेकिन अपने नेताओं के आचरण और व्यवहार के चलते उन्हें वह सम्मान नहीं मिल पाता है, जिसके वे हकदार हैं। इस दृष्टि से वहाँ की जनता में आयी नवचेतना का खुली बाहों से स्वागत किया जाना चाहिए। साथ ही बिहारवासियों को परिवर्तन की इस व्याकुलता को राजनीति से आगे बढ़कर व्यवहार में भी लाना होगा।

ख़ैर जो हो, भूख, भय और भ्रष्टाचार के भँवर में फँसे बिहार की जर्जर नौका खेने की ज़िम्मेदारी संभालने में नीतीश कुमार सफल होंगे, ऐसा विश्वास इसलिए भी है कि उनमें बिहार को विकास के पथ पर अग्रसर करने की पूरी इच्छाशक्ति है। आख़िर तभी तो भ्रष्टाचारियों और अपराधियों से मिली चुनौतियों का सामना करने के लिए वे अडिग हैं। आपने देखा नहीं जैसे ही पटना के गाँधी मैदान में शपथ-ग्रहण समारोह के बाद सचिवालय में पधारने पर उन्हें जीतनराम माँझी के शिक्षा घोटाले में संलग्न होने की पत्रकार से सूचना मिली तो श्री माँझी से त्यागपत्र लेने में तनीक हिचकिचाहट नहीं हुई। यह एक उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि वे भ्रष्टाचार को ख़त्म करने पर आमादा हैं। इस भूल-सुधार से भ्रष्टाचार को मिटाने की प्रतिबद्धता को बल मिलता है। इस प्रकार मंत्रिमंडल में एक भी अपराधी व बाहुबली को शामिल नहीं करके उन्होंने यह दर्शाया है कि राजनीति में अपराधियों के बोलबाला को वे समाप्त करना चाहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नए मुख्यमंत्री ने इस बात को पूरी तरह समझ लिया है कि बिहार में सुशासन राजनीतिक बाध्यताओं से समझौता करके स्थापित नहीं किया जा सकता।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि बिहार के सामंती समाज में लालू प्रसाद का

उदय पिछड़ी व दलित जातियों के आत्म-सम्मान और गौरव का प्रतीक बन गया था। सत्तू और लिट्टी-चोखा खाकर गुज़र करनेवाले गरीब लोगों को लगा था कि लालू प्रसाद और उनकी पत्नी राबड़ी देवी के मुख्यमंत्री बनने के बाद उनके दिन फिरेंगे। लालू को प्रचंड जन-समर्थन भी मिला, लेकिन दूरदृष्टि के अभाव, अनाप-शनाप बोली, समाज के सभी वर्गों को साथ न लेकर केवल मुसलमान-यादव के 'माय' समीकरण पर विश्वास और तत्काल लाभ के लिए परिवारवाद को बढ़ावा देने के चलते उन्होंने सुनहरा मौका गँवा दिया। लालू जी यह भूल गए कि लोकतंत्र में मूल शक्ति जनता की होती है और जनता ही नेता को सत्ता देती और लेती है। जो नेता इस सच्चाई को भूल जाते हैं, उन्हें इसका फल भुगतना ही पड़ता है।

बिना खून बहे बिहार में सत्ता का परिवर्तन हो गया। नीतीश कुमार स्वयं इंजीनियर हैं इसलिए उन्हें अब अपने इस हुनर का इस्तमाल सोशल इंजीनियरिंग में करना होगा। चूँकि बिहार अपराध, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार-उद्योग, रंगदारी आदि हर क्षेत्र में समस्याओं की खान है और ये समस्याएँ इसीलिए हैं कि उनका समाधान नहीं निकाला गया, बल्कि ठीक उसके विपरीत उन्हें फलने-फुलने दिया गया। नीतीश कुमार के नेतृत्त्व में बनी नई सरकार को भाई-भतीजावाद, अपराध का राजनीतिकरण, बाहुबलियों एवं धनपशुओं का महिमामंडन, नौकरशाहों की निरंकुशता, सक्षम और निष्ठावान लोगों को दरकिनार करने की प्रवृत्ति आदि पर ठोस प्रहार करना होगा क्योंकि राज्य की जनता ने किसी स्वप्निल परिवर्तन की आस में मत दिया है। बिहार की जनता में परिवर्तन और विकास की चाहत थी, केवल कोरा आश्वासन और भाषण नहीं। लालू-राबड़ी सरकार ने कोरा आश्वासन दिया। उनके लिए इस चुनाव का स्पष्ट सबक़ है कि जनता को सिर्फ़ लफ़्फ़ाज़ी से खुश नहीं किया जा सकता। लालू प्रसाद को स्वंय को एक गंभीर नेता के रूप में पुनः विकसित करना होगा तभी वे और उनका दल प्रतिपक्ष की भूमिका भी निभा सकेंगे जिसकी लोकतंत्र में ज़रूरत है।

पिछले पंद्रह साल में बिहार ने पहली बार अँधी कोठरी से बाहर पाँव रखा है, इसीलिए बिहार के चुनाव परिणाम से इस देश के सारे लोग खुश हैं, क्योंकि 15 वर्षों की अराजकता ने राज्य प्रशासन के पोर-पोर को ढीला कर दिया है। नए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार यदि बिहार के मामले में सारे भारत को खुश देखना चाहते हैं तो उन्हें अपनी प्रचंड इच्छाशक्ति का परिचय देना होगा और इसके लिए उन्हें शख़्त क़दम उठाने होंगे।

'विचार दृष्टि' का आठवें वर्ष में प्रवेश

इस अंक से 'विचार दृष्टि' अपने आठवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह पत्रिका अपने मूल मिज़ाज में कितनी सामासिक, सुचित्रित एवं प्रगतिशील बन पाई है यह इसके 'पाठकीय पन्ना' में व्यक्त पाठकों की प्रतिक्रियाओं से दृष्टिगोचर तो होता ही है, इससे इस पत्रिका की एक मुकम्मल पहचान भी बनती है। सभी प्रकार की स्थितियों की सार्थक पड़ताल करके इसने एक महत्वपूर्ण संकेत किया है कि इसमें हमारे समय के समझने की दृष्टि मिलती है।

सात वर्षों की यात्रा में 'विचार दृष्टि' ने न केवल लोकरुचि को परिष्कृत करने की कोशिश की है, बल्कि राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के उदेश्य से राष्ट्रीय चरित्र एवं अनुशासन, पारस्परिक सौहार्द और भावनात्मक एकता को सुदृढ़ एवं परिपुष्ट बनाने के लिए स्वस्थ वातावरण का सृजन किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वर्तमान दौर की बढ़ती नकारात्मक पत्रकारिता के विरूद्ध 'विचार दृष्टि' अपने सकारात्मक लेखन के साथ खड़ी है। हालांकि यह भी सत्य है कि सकारात्मक सोच और अव्यावसायिक दृष्टि की वजह से इसे सदैव अर्थ संकट से जूझना पड़ा है फिर भी इसके नियमित प्रकशन में कभी रुकावट नहीं आई है और हमेशा व्यावसायिक पत्रकारिता की भीड़ से इसने अपने को अलग रखा है। दरअसल समाज में परिवर्तन लाने और राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की जो ललक 'विचार दृष्टि' में है वही इसे जीवित रखे हुए है, वरना इस भौतिकवादी व्यावसायिक युग में 'विचार दृष्टि' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन संभव नहीं। समाज के सपनों को धरती पर उतारने का जो संकल्प इस पत्रिका ने ले रखा है इसका समय पर प्रकाशन उसी का परिणाम है। इसीलिए विचार, व्यवहार और संस्कार-समाज रचना के इन तीन मुख्य आधार को इसने अपना मूल सूत्र बनाकर अपने पथ पर यह अग्रसर है। आख़िर तभी तो रूढ़ धारणाओं, मिथ्या मान्यताओं, अँध विश्वासों, पाखण्ड एवं अर्थहीन मूल्यों को विघटित कर स्वस्थ समाज एवं सबल राष्ट्र के निर्माण के लिए यह पत्रिका नई पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर रही है।

इसी के मद्देनज़र साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक विषयों के अतिरिक्त 'विचार दृष्टि' में इस अंक से प्रबुद्ध पाठकों एवं लेखकों की सलाह पर 'अध्यात्म' स्तंभ की शुरूआत कर इसके माध्यम से भारतीय मनीषा के सार्वभौमिक, सार्वकालिक, शाश्वत अभिव्यक्ति को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा ताकि पाठक अपनी चेतना के दीप को प्रज्ज्वलित कर अँधकार को मिटा सकें। धार्मिक विचार की इस एक रश्मि से न केवल उनका जीवन आलोकित हो सकेगा, बल्कि उनके चिंतन की धारा भी आगे बढ़ सकेगी। इस स्तंभ में व्यक्त विचार चाहे किसी धर्म के नेता या विचारक के हों, सद्‌विचार सदा सत्य ही होंगे। वैचारिक शाखाएँ चाहे जितनी हों, पर जड़ में कल्याणकारी धाराएँ ही होंगी। विश्वास है इसके लेखक की क़लम की रोशनाई से तलवार की धार भी कुंद हो सकेंगी और तमसावृत्त राष्ट्र को उनकी लेखनी से दिशाबोध भी मिल पाएगी। कोशिश यही की जा रही है कि समाज के सभी वर्गों में चारित्रिक आस्था पैदा करने के लिए एक व्यापक अभियान चलाया जाए, क्योंकि व्यक्ति-व्यक्ति का चरित्र ही राष्ट्रीय चरित्र का आधार है।

एक पत्र की यात्रा में इस पत्रिका ने अनेक उतार-चढ़ावों को पार कर अपनी सात साल की उम्र पूरी की है और विचार क्रांति की यह संवाहिका विचारों की कुप्रवृत्तियों को मिटाने और अँधकार से लड़ने का संकल्प लेकर खड़ी है। इस संकल्प को पूरा करने के पीछे संपादन से जुड़े सहयोगियों का हाथ रहा है। में उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ और यह विश्वास रखता हूँ कि उनके सहयोग से अपनी अग्रिम यात्रा में यह पत्रिका अपने दायित्वों को बख़ूबी निभाती रहेगी।

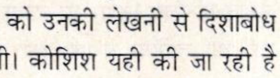

"सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" का कवि कौन?

○ डॉ॰ शांति जैन

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है

ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
ले तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफ़िल में है।

वाए-किस्मत पाँव की ऐ ज़ोफ़ कुछ चलती नहीं
कारवाँ अपना अभी तक पहली ही मंज़िल में है

रहरवे राहे मोब्बत! रह न जाना राह में
लज़्ज़ते सेहरा नवरदी दूरी-ए-मंज़िल में है

शौक़ से राहे मोब्बत की मुसीबत झेल ले
इक खुशी का राज़ पिंहाँ जाद-ए-मंज़िल में है

आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार
आएँ वह, शौक़े शहादत जिनके दिल में है

मरनेवालों आओ अब गर्दन कटाओ शौक़ से
यह ग़नीमत वक़्त है ख़ंजर कफ़े क़ातिल में है

माने-ए इज़हार, तुमको है हया, हम को अदब
कुछ तुम्हारे दिल के अंदर, कुछ हमारे दिल में है

मयकदा सुनसान, खुम उल्टे पड़े हैं, जाम चूर
सिरनगू बैठा है साक़ी जो तेरी महफ़िल में है

वक़्त आने दे दिखा देंगे तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्यों बताएँ क्या हमारे दिल में है

अब न अगले वलवले हैं और न अरमाँ की भीड़
सिर्फ़ मिट जाने की इक हसरत दिले **बिस्मिल** में है

उक्त ग़ज़ल के रचयिता अमर शहीद रामा प्रसाद 'बिस्मिल' हैं या वतनदोस्त नामवर शायर 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी? कतिपय लोगों ने इसे आज भी विवादित बना रखा है, जबकि उर्दू अदब के बड़े से बड़े विद्वान एक मत हैं कि उक्त अमर कृति के शायर अज़ीमाबाद के लब्धप्रतिष्ठ 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी हैं। ख़ास तौर पर भ्रांति फ़ैलानेवाले और भ्रांति के शिकार लोगों के लिए तथ्यों और साक्ष्यों के माध्यम से सच को साबित करने की कोशिश की गई है।

'बिस्मिल' अज़ीमाबादी का पूरा नाम सैयद शाह मोहम्मद हसन उर्फ़ झब्बू साहब है। यह पटना सिटी यानि अज़ीमाबाद के मूल निवासी थे। इनका जन्म सन् 1901 ई॰ में एक ज़मीन्दार घराने में हुआ था। दो वर्ष की उम्र में इनके पिता का देहांत हो गया था। इस कारण उनकी परवरिश में कुछ दिक्क़तें पेश आईं। 10-12 वर्ष की उम्र तक इन्हें घर पर ही अरबी-फ़ारसी की शिक्षा दी जाती रही। आगे की पढ़ाई के

लिए छोटे भाई सैयद शाह नबी हसन के साथ कोलकाता भेजा गया। वहाँ उन्होनें वेटनरी कॉलेज के प्रोफ़सर डॉ॰ सुलतान अहमद खुसरूपुरी के घर में रहकर तालीम हासिल की। पाँच- छः वर्षों के बाद उनकी माँ ने उन्हें वापस बुला लिया।

उन दिनों उर्दू शेर-व-अदब के आसमान पर हज़रत शाद अज़ीमाबादी मानिंदे आफ़ताब चमक रहे थे। शायरी का शौक़ 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी को दबिस्ताने (स्कूल) अज़ीमाबाद के मोतबर शायर शाद अज़ीमाबादी के पास ले गया। शाद के शागिर्दों में शामिल हुए और 'बिस्मिल' के उपनाम से उर्दू शायरी के गेसू संवारने लगे। रवायत के मुताबिक़ अपने कलाम में उस्ताद से इस्लाह लेने लगे।

सन् 1920-21 ई॰ के आसपास वतन की आज़ादी का जज़्बा ऊरूज पर था। पुरजोश मंज़रनामे लोगों के दिलो-दिमाग़ पर छा चुके थे। 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी रगों में भी मुल्क की मोहब्बत का ऐसा ही उफान था। आज़ादी के दीवानों के साथ 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी भी सरफ़रोशों की सफ़ में जा खड़े हुए। क़ौमी जज़्बों के शोलों को हवा देकर भड़कानेवाली उक्त ग़ज़ल को उन्होंने सन् 1921 ई॰ में तहरीर किया था।

सन् 1921 ई॰ में ही कोलकाता में कांग्रेस के अधिवेशन में नामचीन उर्दू साहित्यकार क़ाज़ी अब्दुल वदूद के साथ 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी गए थे। जहाँ उन्होंने उक्त ग़ज़ल पढ़ी थी। इसका एक-एक शब्द इतना पुरअसर था कि लोगों, ख़ास तौर पर नौजवानों के दिलों में उतर गया और दिमाग़ों में महफ़ूज़ हो गया था। उन्हीं नौजवानों में राम प्रसाद 'बिस्मिल' भी एक थे। वतन की आज़ादी के लिए प्रेरित करनेवाली और ठंडे ख़ून में भी उबाल लानेवाली इस ग़ज़ल ने अँग्रेज़ों की नींद उड़ा दी। उक्त क्रांतिकारी रचना के कारण अँग्रेज़ पुलिस 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी के पीछे पड़ गई। उन्हें भूमिगत होना पड़ा। उनके घर पर छापे पड़े। उनकी रचनाएँ ज़ब्त की गईं। ज़ब्तशुदा रचनाओं में उक्त ग़ज़ल भी थी। क़ाज़ी अब्दुल वदूद ही 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी को अपने साथ कोलकाता ले गए थे। इसलिए इस आफ़त का ज़िम्मेदार उन्हें ही ठहराया गया। 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी की माँ क़ाज़ी साहब से बहुत नाराज़ हुईं। इंगलैंड में पढ़ाई के दौरान क़ाज़ी साहब ने 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी

को एक ख़त लिखा था, जिनमें अन्य बातों के साथ इस बात का भी ज़िक्र है। मूल ख़त की छायाप्रति ख़ुदा बख़्श ओ॰पी॰ लाइब्रेरी, पटना के जनरल संख्या 10 में मौजूद है।

उक्त ग़ज़ल के शायर 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी ही हैं इसका दूसरा प्रमाण यह है कि 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी की हस्तलिखित ग़ज़ल में उनके उस्ताद शाद अज़ीमाबादी ने इस्लाह की है। यह दस्तावेज़ी सबूत उनके परिवार वालों के पास और ख़ुदा बख़्श ओ॰पी॰ लाइब्रेरी में महफ़ूज़ है। 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी के नाती डॉ॰ एस॰ मसूद हसन इन दिनों उक्त लाइब्रेरी में बहैसियत लाइब्रेरी इनफ़ॉर्मेशन असिस्टेंट हैं। उनके पास भी प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं।

'बिस्मिल अज़ीमाबादी के साथ एक शाम' शीर्षक से एक टेप (सं॰-80) आज भी ख़ुदा बख़्श ओ॰ पी॰ लाइब्रेरी में महफ़ूज़ है, जिसकी रिकॉर्डिंग सन् 1968 ई॰ में हुई थी। इस टेप में तत्कालीन निदेशक, डॉ॰ आबिद रज़ा बेदार के साथ बिस्मिल की बात-चीत में उक्त दिनों के उनके अनुभव भी हैं जब यह ग़ज़ल लिखी गई थी। इस में बिस्मिल अज़ीमाबादी की आवाज़ में ग़ज़ल "सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" भी रिकॉर्डेड है।

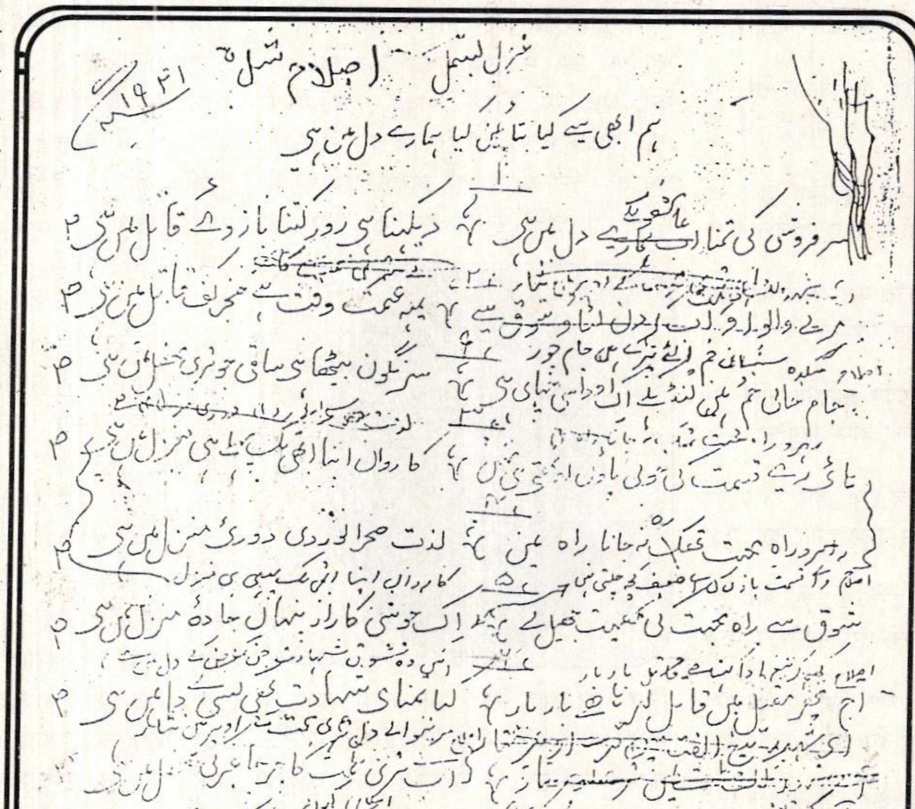

'बिस्मिल' की हस्तलिखित उक्त ग़ज़ल के चंद शेरों की इस्लाह शाद अज़ीमाबादी ने की थी, जिसे उन्होंने कहीं स्वीकार कर लिया और कहीं ज्यों का त्यों रहने दिया था। जैसे;

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
को शाद अज़ीमाबादी ने
सरफ़रोशी की तमन्ना आशिक़ों के दिल में है
और
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
को
ऐ शहीदे तेग़ उल्लफ़त मैं तेरे ऊपर निसार
अथवा
मरनेवाले दिल तेरी हिम्मत के ऊपर निसार
और
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार
को
खेंचकर तेग़ अदा कहता है क़ातिल बार-बार
और
मरनेवालो आओ अब गर्दन कटाओ शौक़ से

उक्त मिसरे को शाद अज़ीमाबादी ने काटा लेकिन कुछ नहीं लिखा। हो सकता है वह बाद में सोचकर इस्लाह करना चाहते हों लेकिन इसकी नौबत ही नहीं आई हो और बिस्मिल ने बेइस्लाह ही ग़ज़ल को शाया करा दिया हो।

उर्दू पत्रिका "आजकल", नई दिल्ली अंक सितम्बर, 1978 ई॰ में नामवर शायर जनाब अता काकोवी के लेख "सरफ़रोशी की तमन्ना" में बिस्मिल अज़ीमाबादी का जीवन-वृत्त, उनकी तस्वीर और उनकी हस्तलिखित तथा शाद अज़ीमाबादी की इस्लाह वाली ग़ज़ल की छायाप्रति प्रकाशित हो चुकी है।

'याराने मैयकदा' जो अगस्त, 1957 ई॰ में प्रकाशित हुई है, उसके पृष्ठ संख्या 77-78 पर बिस्मिल की लिखी हुई ऑटो बायोग्राफ़ी छपी है। उन्होंने लिखा "जब जंगे आज़ादी

का हंगामा बरपा हुआ तो वहशते दिल ने उस हंगामे के सुरों से सुर मिलाने की कोशिश की। उस वक्त की बाज़ नज़्में बहुत मक़बूल हुईं। मेरी एक नज़्म का मतला सुनें- सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है"

इस पुस्तक का संपादन महबूब अली खाँ ने किया था।

"हिकायते हस्ती" बिस्मिल अज़ीमाबादी की ग़ज़लों का संग्रह है जिसमें "सरफ़रोशी की तमन्ना" भी है। इस पुस्तक में जनाब अता काकोवी ने बिस्मिल अज़ीमाबादी की बायोग्राफ़ी लिखी है।

जनाब क़ाज़ी अब्दुल वदूद ने "आवारागर्द अशआर" नाम से बहुत-सी ऐसी रचनाओं पर शोध किया, जिन पर विवाद था। इसी क्रम में उन्होंने प्रमाण के आधार पर "सरफ़रोशी की तमन्ना" के शायर के रूप में बिस्मिल अज़ीमाबादी को ही उसका ख़ालिक़ तसलीम किया है।

जनाब अता काकोवी ने उर्दू के मशहूर शायर अली सरदार ज़ाफ़री को बिस्मिल अज़ीमाबादी की इस ग़ज़ल के प्रमाण दिए थे। इसका ज़िक्र ज़ाफ़री साहब ने "लम्हों के चिराग़" नामक संस्मरण में किया है और जिसे उर्दू पत्रिका "आजकल" के फ़रवरी 1996 के अंक में भी प्रकाशित किया गया है।

"उर्दू दुनिया", नई दिल्ली के जुलाई-सितम्बर, 1998 ई॰ अंक में अली सरदार जाफ़री का एक लेख प्रकाशित है "अगर आरज़ू और तमन्ना हो तो तारीख़ में लज़्ज़त है" जिसमें उन्होंने कहा है कि "यह उर्दू जुबान का करिश्मा है कि हमारे बहुत-से इंकलाबी शहीदों की जुबान पर आख़री वक़्त तक उर्दू के अशआर थे। मिसाल के तौर पर काकोरी केस के शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने अपने हमनाम बिस्मिल अज़ीमाबादी की ग़ज़ल को फाँसी के तख़्ते से पढ़कर लासानी बना दिया।"

दिल्ली से प्रकाशित दैनिक "क़ौमी तंज़ीम" में राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा से प्रो॰ गोपीचंद नारंग की इस विषय पर चर्चा है।

सन् 1999 ई॰ में 'उर्दू मरकज़' अज़ीमाबाद प्रकाशित हुआ। जिसका संपादन प्रो॰ जारि हुसैन, सभापति, बिहार विधान परिषद् ने किया है। इसमें ओरियण्टल कॉलेज, पटना सिटी के उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो॰ शकेब अयाज़ ने "सर फ़रोशी की तमन्ना" शीर्षक अंतर्गत शायर बिस्मिल अज़ीमाबादी के व्यक्तित्त्व और कृतित्वों पर प्रकाश डालते हुए बहुत से महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए हैं।

दैनिक "आज", पटना ने डॉ॰ ओम प्रकाश प्रसाद के लेख "ये वो बिस्मिल नहीं" में इस बात की पुष्टि है।

बिस्मिल अज़ीमावादी की स्वः हस्तलिखित और शाद अज़ीमावादी द्वारा संशोधित मूल ग़ज़ल की छाया प्रति पृष्ठ-८ के बॉक्स में देखी जा सकती है। - उप संपादक

प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली से मदन लाल वर्मा कांत द्वारा संपादित "सरफ़रोशी की तमन्ना : राम प्रसाद बिस्मिल" के दूसरे भाग में बिस्मिल की ज़ब्तशुदा जिन आग्नेय कविताओं में "सरफ़रोशी की तमन्ना " का ज़िक्र है, उसका खण्डन "इंडिया टुडे", (हिंदी) 1997 ई॰ के अप्रैल-जून अंक में "दृष्टि की सीमा" शीर्षक लेख में हो चुका है।

हाल ही में महाराष्ट्र से भारत-भारती बाल पुस्तकमाला प्रकाशन के अंतर्गत एन॰पी॰ शंकर नारायण (मूल मराठी तथा अनुवादक दीनदयाल पुरोहित) द्वारा लिखी गई है। राम प्रसाद बिस्मिल की जीवनी छपी है, जिसमें उनकी रचनाओं की चर्चा करते हुए उन्हें एक क्रांतिकारी हिंदी कवि बताया गया है। उस जीवन-वृत में सरफ़रोशी की तमन्ना का कोई ज़िक्र नहीं है।

दिल्ली उर्दू अकादमी की मासिक उर्दू पत्रिका 'ऐवान उर्दू' में भी बिस्मिल अज़ीमाबादी की उक्त ग़ज़ल पर बहस शुरू की गई थी। इस बहस में अन्य साहित्यकारों के साथ-साथ शाद अज़ीमाबादी के पोते जनाब बहज़ाद फ़ातमी ने भी उक्त ग़ज़ल को बिस्मिल अज़ीमाबादी की कृति सिद्ध किया है। आरंभ में बहस का नतीजा यही निकला कि ग़ज़ल के शायर 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी ही हैं। उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक डॉ॰ शाहिद जमील ने भी इसे बिस्मिल अज़ीमाबादी की ग़ज़ल स्वीकारा है।

वस्तुतः राम प्रसाद बिस्मिल और बिस्मिल अज़ीमाबादी के उपनामों की, जीवनकाल की और ज़ज़्ब-व-जोश की समानता ने लोगों को इस भ्रम में डाल रखा है। सच तो यह है उन दिनों यह ग़ज़ल एक शहीदी गीत के रूप में प्रचलित थी। यह बड़े दुःख का विषय है कि आकाशवाणी और दूरदर्शन से राम प्रसाद बिस्मिल के नाम से इस ग़ज़ल का प्रसारण भी लोगों को भ्रमित करता रहा है। बिस्मिल अज़ीमाबादी जैसे बड़े शायर की अमरकृति का सेहरा उनके हमनाम कवि के सिर बाँधा जाए यह अनुचित है।

बिस्मिल अज़ीमाबादी गंभीर प्रकृति के एक अच्छे इंसान थे। वह शुहरत और लोकप्रियता के पीछे कभी नहीं भागे। परंतु वह सभी जाति और संप्रदाय के मनपसंद और अज़ीज़ शायर थे। जीवन के अंतिम चरण में वह पटना सिटी में होमियोपैथिक चिकित्सा के ज़रिए मानव सेवा करने लगे। ग़रीब मरीज़ों का मुफ़्त इलाज़ करते और दवा भी दे दिया करते थे। इस तरह वह एक अच्छे इंसान, एक अच्छे डॉक्टर और एक अच्छे समाजसेवी भी थे। उनके परिवार वाले आज भी उनकी यादों को समेटे-सहेजे पटना सिटी में रह रहे हैं। 20 जून, 1978 ई॰ में 'बिस्मिल' अज़ीमाबादी ने इस दार फ़ानी से कूच किया। उनका यह शेर उनके दिल के दर्द को बयाँ करता है;

कहाँ तमाम हुई दास्तान 'बिस्मिल' की
बहुत कुछ तो कहने को रह गई ऐ दोस्त

संपर्क : मधुराज, राजेन्द्र पथ, सी॰डी॰ए॰ कार्यालय के सामने,
पटना-८००००१
दूरभाष : ०६१२-२६८७७१६

जाले में फँसी मकड़ी

○ डॉ. शाहिद जमील

खुली छत पर दुपट्टे के अंदर हाथ फैलाए रिफ़अत उस वक्त तक बेआवाज़ दुआएँ माँगती रही जब तक ईद का चाँद आसमान की पेशानी से चिपका रहा। धुँधलके में तनहा उदास खड़ी रिफ़अत के दुपट्टे का एक सिरा झण्डी की तरह लहरा रहा था। ज़ुल्फ़ें धीरे-धीरे आज़ाद होकर मचलने लगी थीं। सिर के हलके झटके खाकर भी दायीं आँख के सामने आ धमकने वाली गुस्ताख़ लट को कान के पीछे दबाकर दुपट्टा दुरुस्त करते हुए उसने ग़ौर से उस मुक़ाम को देखा, जहाँ कुछ देर पहले बारीक-दिलकश चाँद था। उसने सोचा बेऔलाद इंसान की ज़िंदगी भी बेचाँद आसमान की तरह सूनी और उदास होती है।

बेख़्याली में रिफ़अत का दायाँ हाथ पेट पर चला गया। उसकी ममता जागृत हो गई। नयन-कटोरे आँसू से भर गए तो झिलमिल आँखों में उसे एक दृश्य नज़र आया। उसके जिगर का टुकड़ा आग़ोश में आने के लिए मचल रहा है और वह उसे सब्र दिला रही है। बेक़रारी पर क़ाबू पाने के लिए उसने आसमान की तरफ़ देखा। टिमटिमाते सितारों में भी नूर बढ़ गया था।

वक्त के क़दम समुद्री लहर की तरह चलते रहते हैं। दिन, माह और साल कछुआ-गति से लंबी दूरियाँ तय कर लेते हैं। आँगन में उतरी धूप कब दीवार पर चढ़ती और कैसे उतर जाती है, पता नहीं चल पाता। रिफ़अत ने ठंडी साँस भरकर सोचा शादीशुदा ज़िंदगी के दो साल भी दबे पाँव निकल गए।

वर्षों पूर्व की एक रात उसकी आँखों में घटना-सहित उतर आई। उस रात उसने एशा (रात्रि) की नमाज़ कुछ देर से पढ़ी थी। मच्छरदानी लगाने से पहले अब्बा उसके बिस्तर पर आ बैठे थे। घबड़ाकर उसने पूछा था,

''आज फिर भैया से झगड़ा हुआ क्या ...?''

उन्होंने फ़ौरन कोई जवाब नहीं दिया था, कुछ देर ख़ामोश रहकर बोले,

''बेटी! ... ईद के चाँद की 11 तारीख मैंने तय कर दी है ... वे लोग सीवान जिला के हसनपुरा गाँव के रहने वाले हैं। मास्टर बरकतुल्लाह मरहूम के तीन बेटे और चार बेटियाँ हुईं और सभी हयात से हैं। अजीमुल्लाह की शादी खालाजाद बहन से हुई है। हलीमुल्लाह आई॰ ए॰ पास है। वह आरा मशीन लगाने वाला है। कुदरतुल्लाह ने मैट्रिक का इम्तिहान दिया है। दो बेटियाँ नीम बालिग हैं। बड़ी बेटी के दो बच्चे ननिहाल में रहकर अँग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। शकूर मियाँ ने मुझे इतना ही बताया था ... हाँ, एक बात और नकद या दहेज में खास चीजों की फर्माइश नहीं है ... अपने तौर पर मैंने तहकीकात

कर ली है। आसिम मियाँ पर मुझे अब भरोसा नहीं रह गया है। इसीलिए अपनी ज़िंदगी में इस फ़र्ज से सुबुकदोश (निवृत्त) होना चाहता हूँ ...।''

बेटी की मर्ज़ी जाने बग़ैर वे कमरे से निकल गए थे। उन्हें जाते हुए देखकर उसने सोचा था, ''अब्बा उसके कमरे में नहीं, बल्कि चर्च में आए थे और कॅनफ़ेशन (Confession) के बाद दबे पाँव लौट रहे हैं। उम्र के तीसरे दशक में क़दम रख चुकी, मामूली सूरत-शक्ल की पंद्रह हज़ार रुपये माहवार पानेवाली लड़की के लिए बिना दहेज शादी के पैग़ाम को एक बाप कैसे ठुकरा देता, वह भी ऐसी हालत में जब छोटी बेटी की शादी हो चुकी हो ...।''

रिफ़अत ने ख़्यालों का तार तोड़ दिया। बचपन में भी उसे जब कभी अपने ही तार में झूलती मकड़ी नज़र आ जाती, वह उँगली से उसका तार तोड़ दिया करती थी। बेचारी मकड़ी बदहवास होकर दौड़ती हुई दीवार पर चढ़ जाती। मकड़ी को वह बड़े ग़ौर से देखा करती थी। उसका लक्ष्य भेदना उसे अच्छा लगता। ध्यान भटकाने के लिए उसने सितारों को गिनना शुरू किया लेकिन उसकी गिनती गड़बड़ा गई। हमेशा की तरह दो-चार नये सितारे नज़र आ ही गए।

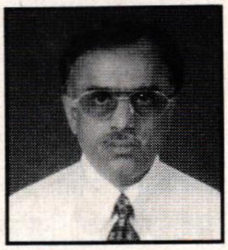

रिफ़अत को सितारा गिनने का शौक़ बचपन से है। उसे पड़ोसन सुषमा याद आ गई। अक्सर वह उसके साथ सितारा गिना करती थी। मन-पंछी उड़ान भरता है और सुषमा के साथ गुज़री एक संध्या के कलश पर जा बैठता है ... मामू जान ढेर सारे बीजू आम लेकर आए थे। उसने चुनकर दस-बीस आमों को बाल्टी में रखा। अम्मी की नज़रें बचाकर सुराही के ठंडे पानी को बाल्टी में उड़ेलकर ताज़ा पानी भर दिया था। तीन बार छत पर छिड़काव भी किया गया था।

स्वभाव से चुलबुली और शरारती सुषमा के आने का अंदाज़ निराला होता। कभी वह बिल्ली की तरह दबे पाँव आती और रफ़्फ़ू के जूड़े को झटका देकर खोल देती और कभी चुपके से पीठ के पीछे खड़ी होकर उसकी गर्दन पर फूँक मारकर जिस्म में सिहरन पैदा कर देती। एक बार अचानक दुपट्टा खींच लेने पर रफ़्फ़ू दोनों हथेलियों से सीना छुपाकर बैठ गई थी, तब सुषमा ने दुपट्टे का घूँघट बनाकर कहा था, ''रफ़्फ़ू! ज़िंदगी का एहसास तो महसूस

करने से ही होता है ना ...।''

फिर सुषमा ने उसकी आँखों को हथेलियों से बंद करके उँगलियों का दबाव बढ़ाते हुए उससे पूछा था,

''रंग बिरंगे कुमकुमों (प्रदीप्त बल्बों) का संसार नज़र आया ...?''

''आया ...।''

''अब तू जैसा महसूस करेगी वैसा ही नज़र आएगा...महसूस किए बिना, न तो दुःख होता है और न सुख मिलता है... आँखों में सपने और दिल में अरमान हों तो जीने की इच्छा बढ़ जाती है ... तू भी खुलकर जीना सीख ले रफ़्फ़ू ...।'' आँखों से हाथ हटाकर सुषमा ने कहा था।

उस शाम सुषमा ने आँख बचाकर बेले का एक बड़ा-सा हार रफ़्फ़ू की गर्दन में डालकर उसे डरा दिया था। उसकी बदहवासी पर क़हक़हा लगाते हुए उसने कहा था,

''औरत और चिड़िया दोनों एक समान होती हैं... छूओ, छेड़ो तो बदहवास हो जाती ...।''

उसने एक आम उठाकर एलान किया था,

''आज तो मैं सिर्फ़ आम खाऊँगी... इन बूढ़े सितारों से मेरा कोई रिश्ता नहीं ...।''

''नहीं सुषमा... हम आम भी खाएँगे और सितारों को भी गिनेंगे ...।''

रफ़्फ़ू ने इल्तजा की थी।

आम खाते हुए सितारा शुमारी शुरू हुई लेकिन सुषमा की शरारतों से शिकस्त खाकर रफ़्फ़ू बज़ाहिर नाराज़ हो गई, तब सुषमा ने उसे बाहों में भरकर कहा था,

''माई डियर रफ़्फ़ू ! ... सितारों को क्यों गिनना चाहती हो? अच्छा बताओ तो ...तुम्हारी क़िस्मत का सितारा कौन-सा है ...?''

उसने उँगली से इशारा करते हुए एक प्रदीप्त सितारा को दिखाकर कहा,

''देख! वह भी हो सकता है ... और वह मरियल-सा टिमटिमाता हुआ भी ... या फिर वह, जो हमें नजर ही नहीं आ रहा है। भगवान जाने इस समय वह कौन-सी चाल चल रहा होगा? ... सच कहूँ रफ़्फ़ू ! अगर हम उन्हें पहचान भी लें तो कोई फ़ायदा नहीं ... सभी अपने मन-मर्जी की चाल चलते रहेंगे ...।''

''सितारों और उनकी चालों के भेद को मैं नहीं जानती सुषमा! लेकिन ख़ुदा जाने क्यों ऐसा लगता है इंसान से उनका कोई न कोई रिश्ता ज़रूर है ... उनकी चालें हमारी ज़िंदगी पर असर डालती हैं ...।''

इतना कहकर रफ़्फ़ू ने आधा चूसे आम को हवा में उछाल दिया था।

''बहूरानी ... बहूरानी ... अब नीचे उतर आओ ... देखो तो जरा कौन-कौन मिलने आई हैं ...।''

रिफ़अत सितारों की सभा और ख़्यालों की दुनिया से लौट आई। सास अम्मा की पुकार पर ख़ामोश क़दमों से सीढ़ियाँ उतरने लगी। शाकरा बेगम पेशकार साहब की बीवी से कह रही थीं,

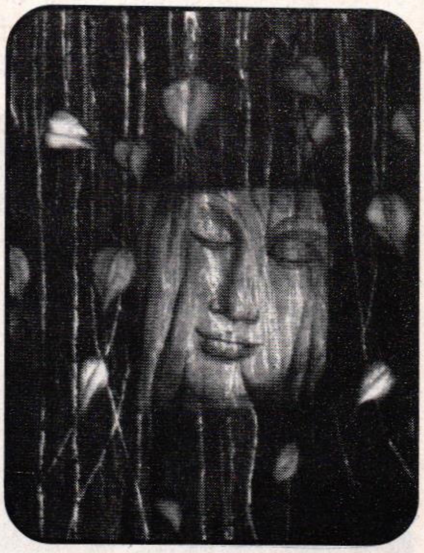

''तीस रोज़े का इनाम ईद। चाँद रात को ख़ुदा झूट न बुलवाए लड्डन की अम्मा! बड़ी बहू तो बहन की बेटी है, उसके गुणों का बखान क्या करना ...अलबत्ता छोटी बहू की जितनी भी तारीफ़ करूँ समझो कम है। कहने को बहू कहती हूँ लेकिन बेटी से कम नहीं समझती ...।''

''बुरा न मानो तो एक बात कहूँ? ... दोनों बहुओं की किस्मत से तुम्हारे दिन बहुरे हैं ... बेचारे मास्टर साहब की किस्मत में ये ऐशो आराम नहीं लिखा था वरना उनकी मौत से पहले भी दिन फिर सकते थे ... ख़ुदा मरहूम को जन्नत नसीब करे ...।''

पेशकार साहब की बीवी ने बात काटकर बज़ाहिर अफ़सोस करते हुए कहा।

क़दमों की आहट सुनकर शाकरा बेगम चुप हो गईं। आँगन में स्थाई बिछी चौकी पर बैठी पड़ोसिनों को रिफ़अत ने सलाम किया, उनसे दुआएँ लीं और बच्चों के सिरों और गालों पर मोहब्बत से हाथ फेरकर ''बस, अभी आई'' कहकर चली गई। शाकरा बेगम दबी ज़ुबान में फिर शुरू हुईं,

''पूरा घर संभाल रखा है .... अपनी तनखाह मेरी हथेली पर रख देती है और ऑफिस जाते वक्त बस किराए के बीस रुपये मुझसे माँगकर लेती है ...।''

ट्रे सजाए जाने की आवाज़ सुनकर शाकरा बेगम कमरे में चली गईं।

पेशकार साहब की बीवी ने चाय में बिस्कुट डुबाकर बड़ी महारत से मुँह में डाला। बिस्कुट में मौजूद काजू के टुकड़ों को चबाकर चाय की घूँट भरी। लीफ़ का ज़ाएक़ा लेते हुए सोचा, ''ख़ुदा की शान निराली। इन आँखों ने वह दिन भी देखे हैं, जब इस पक्के दो तल्ले मकान की जगह दो छोटे-छोटे कमरों का एक बूसीदा मखदूश (बदबूदार-ख़तरनाक) खपरैल घर था। मास्टाईन दिन-रात आमदनी के नये-नये जुगार तलाश करने में लगी रहतीं। सबसे पहले मुर्गियाँ पाली गईं। देखते ही देखते घर-आँगन मुर्गियों और चूज़ों से भर गया। मुर्गे-अंडे बेचे जाते। फिर कबूतर और बकरियाँ पाली गईं। घर में ऐसी बदबू फैली रहती कि बच्चे नाक पर हाथ रखकर ही कुछ लाने जाते। घास-पात खाकर पले-बढ़े ख़स्सी हर साल बकरीद में अच्छी कीमत अदा कर जाते। मिडिल स्कूल के उर्दू मास्टर की औक़ात ही क्या है? तनखाह बीवी की हथेली पर रखकर उन्होंने घरेलू मामलात में कभी दखल नहीं दिया। बहुत कोशिश की लेकिन मरते दम तक बेचारे को ट्यूशन पढ़ाने का मौका नहीं मिला। मौलवी साहब ही बच्चों को अरबी के साथ मुफ्त में उर्दू पढ़ा दिया करते थे ...।''

घूमने आई औरतें जा चुकी थीं। भाभी के कमरे में ईद की आख़री तैयारियाँ चल रही थीं। कमरुननिसा सोफ़ा पर आलतीपालती मारे गोद में थाल रखकर मेवे कुतर रही थी। मेहरुननिसा पलंग पर बैठी भाभी के गोटे लगे दुपट्टे में सलमा-सितारा टाँक रही थी। दूसरे सिरे पर भाभी बैठी थी। ज़मीन पर बिछी चिटाई पर बैठा

हलीमुल्लाह अब भाभी के पाँव में मेंहदी लगा रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर पर कमरुननिसा उठकर भाभी के मुँह में कुतरे हुए मेवे डाल दिया करती थी। कुदरतउल्लाह ईद-मिलन की बैठक से लौटा नहीं था।

हलीमुल्लाह अब आख़री टच दे रहा था। ग़ौर से देखने पर उसे जिस जगह ख़ामी या कमी नज़र आई उसे दुरुस्त किया। संतुष्ट होकर उसने कुर्सी के हत्थों पर पाँव रखवाकर भाभी की गोद में मसनद रख दिया। मसनद पर हाथ रखकर वह एक ख़ास अदा से बोली,

''अल्लाह! कहीं अब कोई गुदगुदी न लगाए ...।''

हाथ धोने के लिए जाते हुए हलीमुल्लाह को शरारत सूझ गई। वह किचन में एक तिलचट्टा मारकर उसकी मूँछ पकड़े कमरे में दाख़िल हुआ। भाभी देखते ही चीख़ पड़ीं। उनका दुपट्टा सरक गया। बाज़ुओं से सीना छुपाते हुए उन्होंने कहा,

''या अल्लाह! अब मैं क्या करूँ ...?''

तिलचट्टा को खिड़की से फेंककर हलीमुल्लाह ढलके दुपट्टे को दुरुस्त करके सेफ़्टीपिन लगा रहा था। नीम तारीकी में सीढ़ियाँ चढ़ते हुए रिफ़अत ने खड़ी होकर सब कुछ देख लिया। आत्मिक-दंश से बना नासूर रिसने लगा। दर्द की शिद्दत बर्दाश्त करने के लिए आँखें बंद करके वह सिर को दाएँ-बाएँ घुमाने लगी। बंद आँखों में अतीत उतरने लगा तब उसने घबराकर आँखें खोल दीं। अब वे भाभी की कमर के पीछे दूसरा मसनद लगा रहा था। उसने ठंडी आह भरकर सोचा,

''क्या यह वही इंसान है? जिसने पहली रात उसके मेंहदी लगे हाथों को हटाते हुए कहा था, मेंहदी की बू से सिर चकराता है ...।''

उसने मेंहदी रहित हथेलियों को देखा। नीम तारीकी में हथेली की मोटी लकीरें नटखट बालक द्वारा किताब के पन्नों पर खींची लकीरों की तरह नज़र आईं।

''समायोजन नारी-स्वभाव में शामिल है। भावुक औरतें पानी की तरह तुरत अपना वजूद खो देती हैं। दूध में मिलकर दूध और शराब में मिलकर शराब कहलाने में पानी को आपत्ति नहीं होती ...।''

उसे सुषमा की कही बातें याद आ गईं।

रिफ़अत तेज़ क़दमों से सीढ़ियाँ चढ़कर पलंग पर मरीज़ की तरह लेट गई। आँखें बंद करते ही दो साल की शादीशुदा ज़िंदगी सजीव हो गई। हर वह क्षण जिसने दुःख दिया था, अपमानित किया था, आँखों को आँसू की सौग़ात बख़्शी थी और जिगर जलाया था, क़ातिल की तरह मुस्करा रहा था। बेबसी में तकिया को सीने से लगाकर उसने सोचा ''अगर अम्मा ज़िंदा होतीं तो उनके सीने से लगकर ख़ूब रोती। अम्मा क्या मरीं मायका ही वीरान हो गया। अलमारी के कारख़ाने पर आसिम भैया पूरी तरह क़ाबिज़ हो गए। भाभी की उल्टी-सीधी हरकतों और भैया की चुप्पी से दुखी अब्बा तबलीग़ी जमात (धार्मिक-मंडली) में वक़्त गुज़ारने

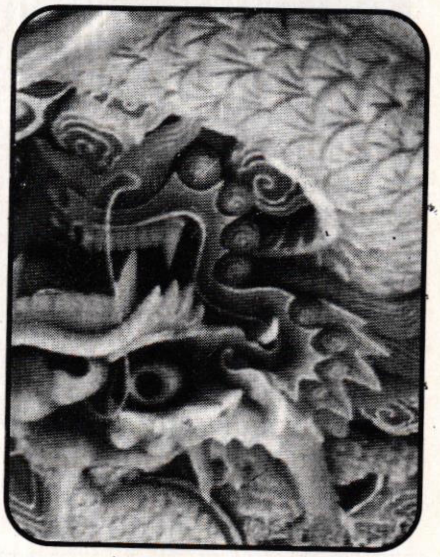

लगे। सुना है, अब तो वह ज़्यादातर सफ़र में ही रहने लगे हैं। प्यारी इफ़अत अपने घर में ख़ुश है या नहीं, ख़ुदा को मालूम। सुषमा को अचानक बनारस क्यों ले जाया गया? वहाँ है भी या नहीं? अगर है तो किस हाल में है, पता नहीं। अगर मुलाक़ात हुई तो ज़रूर पूछूँगी, कोमल भावनाओं को भाव-स्पर्ष से सुख पहुँचानेवाला कोई है ...? तुम्हारी शरारतें तुम्हारा साथ दे रही हैं ...?''

म्युज़िक सिस्टम से निकलती अँग्रेज़ी धुन चुनाव प्रचार की तरह अप्रिय लग रही थी। ख़्यालों की धमाचौकड़ी से सिर आबले की तरह दुखने लगा था। उसने तकिया सिर के ऊपर रखकर सोने की कोशिश शुरू कर दी।

''क्या हाल बना रखा है ...?''

''अम्मा! मेरी अम्मा! आप ज़िंदा हैं ...?''

रिफ़अत दौड़कर उनसे लिपट गई। दुपट्टे से अम्मा के बहते आँसू को पोंछते-पोंछते वह भी रो पड़ी।

''तेरी मुसीबतों का सिलसिला खत्म नहीं हुआ ...?'' उसे सीने से लगाकर सिसकते हुए उन्होंने कहा।

''इसे रख लो ... शादी में कुछ भी नहीं दे सकी थी ...।'' एक लाल जोड़ा देकर बोलीं।

''तू शुरू से ही बेजुबान है। गमों को आँसू बनाती और दूसरों को सुख बाँटती रही है ... यहाँ भी तेरे साथ ज़ुल्म हो रहा है ... तेरा हक मारा जा रहा है। कब तक आँसुओं से तकिया तर करती रहेगी? ... यह फैसले की घड़ी है ... बहुत सह लिया, अब और नहीं ... बेटी! तेरे साथ ख़ुदा है ...।''

दरवाज़ा खोलकर बाहर निकलने से पहले मुड़ीं।

''अपने अब्बा की सुधबुध ले लिया करना ...।''

इतना कहकर वे तेज़ क़दमों से निकल गईं।

''नहीं ... मुझे छोड़कर मत जाओ ...।''

रिफ़अत की दिल हिला देनेवाली चीख़ सुनकर माँ-बेटियाँ कमरे में पहुँचकर उसे दहशतज़दा नज़रों से देखने लगीं। वह पलंग पर बैठी दोनों घुठनों को बाज़ूओं से लपेटकर उसपर सिर रखे सिसकियाँ ले रही थी। शाकरा बेगम आगे बढ़ीं। उसके सिर को ऊपर उठाकर आँचल से आँसू पोंछते हुए बोलीं,

''शाम के वक्त छत पर बुरे साये का भी गुजर होता रहता है ... परहेज करना चाहिए बहू ...।''

दायीं ओर गर्दन घुमाकर बेटियों को जाने का इशारा करके बोलीं,

''कोई खास बात नहीं ... ख़ाब में डर गई है ... कमरा भी तो अंधेरा कर रखा था ...।''

थोड़ी देर बाद उठते हुए बोलीं,

''मौलवी साहब से पानी पढ़वाकर मँगवाती हूँ ...।''

उसने उनका हाथ पकड़कर कहा,

''कुछ देर और ठहर जाइए ...।''

शाकरा बेगम ने पहली बार उसे भयभीत नज़रों से देखा और कसमसाकर बैठ गईं।

''अम्मा! अब मुझे रिहाई चाहिए ...।''
उसने सपाट लहजे में कहा।

वे चुप्प रहीं। उसने उकताकर कहा,
''भाभी के साथ इनके नाजायज़ रिश्ते हैं ... मैंने कई बार अपनी आँखों से देखा है ... खुदा-रसूल का ख़ौफ़ भी दिलाया, सब बेसूद। अब पानी सिर से ऊपर हो गया है ...।''
''ये रिश्ता शादी के पहले से है ...।''
''क्या कह रही हैं आप ...?''
''सच कह रही हूँ बहू! ... सोचा था पढ़ी-लिखी कमाऊ बीवी खुद ही लगाम लगा लेगी ... मगर इसमें हलीमुल्ला का कसूर कम है ...।''
''ममता ढाल बन रही है अम्मी! ... ताली दोनों हाथों से बजती है ...।''
''बहू! तू सचमुच नेक औरत है ... आज मुँह खोला है। खोट तुझमें नहीं। मेरा ही सिक्का खोटा है।
''लेकिन, अब्बा तो बड़े नेक इंसान थे ...।''
''हाँ! बेशक। जब तक जिंदा रहे आबरू की चादर बेदाग रही ...।''
''यानी, उनकी मौत के बाद ...।''
''बेटी! अब तुझसे क्या छुपाना। गुर्बत से बड़ी कोई लानत नहीं। हमपर बहुत बुरे दिन गुजरे हैं। तुम्हारे ससुर दवा-इलाज के बिना खून थूक-थूककर मरे हैं। उन्हीं की मौत पर पुरसा देने बेटी को साथ लेकर साबरा आपा आई थीं। आते ही घर का सारा खर्च उठा लिया। चालीसवें (श्राद्धकर्म) के बाद जब आपा जाने को तैयार हुई तो नसरीन साफ इनकार करते हुए बोली,
''मैं नहीं जाऊँगी ... खाला (मौसी) भी रो-रोकर जान दे देंगी ...।''
''नस्सू बेटा! तुझे छोड़कर जाने में हमें कोई उज्र (अपत्ति) नहीं लेकिन इस घर में जवान लड़के भी हैं ... लोगबाग के मुँह बेलगाम होते हैं ...।''
आपा ने अपनी मजबूरी जाहिर की तो मशशाता (शादी का रिश्ता तय कराने वाली औरत) खुर्शीदा ने फौरन कहा,
''बहन! निकाही (विवाहिता) बेटी तो छोड़कर जा सकती हो ना ... सगी बहनों के बीच के रिश्ते में जाँच-परख कैसा और क्या लेना क्या देना ... जब कि सारा धन-दौलत एकलौती नसरीन बेगम ही का है ... लगा लो रिश्ते में एक गाँठ और ... बन जाओ समधन।''
नसरीन उठकर कमरे में चली गई।
''बड़ी हयादार है ... लाखों में एक है ...।'' उसे जाते हुए देखकर खुर्शीदा ने कहा। फिर आपा से मुखातिब हुई,
''बहन! इसे ही कहते हैं चिराग तले अँधेरा। आखिर ...।''
''मैं तो बेटीवाली हूँ ... शाकरा राजी हो जाएँ तो मुझे खुशी होगी ...।'' आपा बात काटकर बोलीं।
''अच्छा बेटे से तो पूछ लूँ पहले ...।'' यह कहकर मैंने उस वक्त जान छुड़ाई।

अजीमुल्ला से पूछा तो वह बोला,
''अब्बा के मरने के बाद ही हमारे दिन फिरनेवाले हैं, वरना ख़ाला इतनी रहमदिल न थीं। लगता है खुदा को यही मंजूर है ...।''

बेटी! मुस्तकिल दुःख झेलते रहने से आदमी की अकिल (अक्ल) मारी जाती है। मैंने भी सोचा घर का नक्शा बदल जाएगा। अभी दो नाबालिग लड़कियाँ सिर पर बैठी हैं। लड़के भी बेरोजगार हैं। बस मैंने अल्ला का नाम लेकर 'हाँ' कह दिया।

आपा ने वापसी का सफर मुल्तवी किया। नौशे भाई को आदमी भेजकर बुलवाया गया। मौत के सबब सिर्फ निकाह हुआ और पंच का हाथ धुलवाया गया। नौशे भाई ने अपनी निगरानी में तीन माह में इस मकान को तैयार करवा दिया। मुझे मुर्गियों, बकरियों और कबूतरों के झमेले से निजात मिल गई। गल्ला-पानी घर में रहने लगा। खान-पान और रहन-सहन सब में बड़ा फर्क आ गया।

शादी के बाद वाले रमजान में आपा के गाँव की एक फकीरन फितरा-जकात (भीख) माँगती हुई आई। उसने भेद खोला। ''बीबी दो ढाई माह का हमल गिराकर आई थीं। मास्टर साहब की मौत उनके काम आई। मशशाता को एक हजार रुपये और एक धोवा पुरानी बनारसी साड़ी दी गई है। बहन! चाहो तो उसे बुलवाकर मेरे सामने पूछ लो ... उसे सब मालूम है ...।''

खुदा गवाह है पाँव के नीचे से जमीन निकल गई। हालात का रुख बदल देना मेरे बस में नहीं था। भला निगली मक्खी का कोई एलान करता है? उस औरत को अच्छा खाना खिलाकर रुखसत करते वक्त पाँच-पाँच सौ के दो नोट और नये-पुराने कपड़े देकर तीन बार औलाद की कसम दिलाई कि इस बात को अपने सीने में दफन कर लेगी।

साल भी पूरा नहीं हुआ था कि मियाँ-बीवी के लड़ाई-झगड़े और तू-तू मैं-मैं से घर का सुकून जाता रहा। बदकार औरत का शौहर से जी भर गया। लेकिन बेटी! गजब की औरत है। घर बैठे-बैठे ही उसने मियाँ को कमाने के लिए अरब भेजने का सारा इंतजाम करवाकर हवाई जहाज पर चढ़ाकर दम लिया। मैंने सोचा चलो अच्छा ही हुआ। आमदनी बढ़ेगी और घर का सुकून भी लौट आएगा। लेकिन यह मेरा वहम था। अजीमुल्ला के गए अभी हफ्ता-पंद्रह दिन भी नहीं गुजरा था कि मुँह अँधेरे हलीमुल्ला को चोर की तरह बहू के कमरे से निकलते देखा। सिर-कलेजा पीटकर हारे जुआरी की तरह सब्र से काम लेने लगी। लेकिन धीरे-धीरे पानी सिर से ऊपर चढ़ने लगा और दोनों की दीदादिलेरी बढ़ने लगी। सोचा शादी ही इसका वाहिद इलाज है। तू भी तो अल्ला (अल्लाह) मियाँ की गाय निकली।

बेटी! अल्ला बड़ा कारसाज (काम बनानेवाला) है। बस कुछ दिन और सब्र कर लो। समझ लो तुझे तेरा शौहर मिलने ही वाला है ... कुदरतुल्ला को इसी हफ्ते मुँह अँधेरे उसके कमरे से निकलते देखा है ...।''

शाकरा ख़ानम इतना कहकर पलंग से उठ गईं।

रिफ़अत बुत की तरह पलंग पर बैठी रही। उसने सोचा यह सब सितारों का खेल है।

नीम तारीकी में सीढ़ियाँ उतरती शाकरा बेगम लड़खड़ा गईं। आवाज़ सुनते ही मदद के लिए रिफ़अत दौड़कर पहुँची। सीढ़ी के दोनों हत्थों को पकड़कर शाकरा बेगम ने खुद को बचा लिया था। उन्हें इस हालत में देखकर रिफ़अत ने सोचा,
''सुषमा होती तो कहती जाले में फँसी मकड़ी झूल रही है।

संपर्क : आर॰ ब्लॉक, पथ सं॰-५, आवास सं॰-सी॰/६, पटना -८०००१
: : ०६१२- २२२६९०५ (आ॰)

हो मुबारक नया साल

O कमाल जाफ़री

हो मुबारक मेरे अहबाब नया साल आया
हो मुबारक यह महकता हुआ दिन और यह शाम

आया हर क़दम पर हो मुबारक यह मुसर्रत भरा
जाम हो मुबारक यह नया साल मगर याद रहे

बाग़ में जाओ तो जाओ नए अंदाज़ के साथ
आज से नग़्मा सुनाओ तो नए साज़ के साथ

हर तरफ़ आज बहारों की बरात आई है
सबके होंठों पे मुसर्रत की बात आई है

आज सीनों में महकते हैं खुशी के जज़्बात
आज का दिन जो हसीन है तो हसीनतर है रात

आज हर गोशे में गुलरंग घटा छाई है
ज़िंदगी आज नई शान से लहराई है

आओ दिल खोलकर हमलोग सभी रक़्स करें
दूर नफ़रत से रहें प्यार के नग़्मे गाएँ

यह नया साल हो ख़ाबों के गुलाबों का चमन
शान से बहते रहें सुबह व शाम गंगो जमन

संपर्क : कार्यक्रम अधिशासी,
आकाशवाणी केंद्र, पटना

ग़ज़ल

पड़ जाए अगर बाल तो वह ज़र्फ़ है नाकिस
कहते हैं ग़ज़लगोई को फ़न शीशागरी का

लहू से लिख तो दी तारीख़े आज़ादी असीरों ने
किसे फ़ुर्सत दरो दीवारे ज़िंदा कौन देखेगा

बदल जाते हैं चेहरे जब हवा का रुख़ बदलता है
बहुत देखा है ऐ **बहज़ाद** हमने अहले दुनिया को

O बहज़ाद फ़ातमी

ग़ज़ल

O शशि शेखर शर्मा

क्या संभालोगे तुम ऐ दोस्त मुक़द्दर मेरा
तुम्हारे शाने से संभला नहीं सर मेरा

हर एक मौजे हवादिस पे बेतरह लरज़े
किसी होबाब की मानिंद है ये घर मेरा

है पुरउम्मीद इशारों से तेरी आराईश
फ़िक्रे आदाब से मजबूर है पैकर मेरा

हवा ने छोड़ भी दी है दरख़्त की टहनी
बरा-ए-शौक़ ही उजड़ा है गुलमोहर मेरा

वो बेखुदी में भी फ़र्ज़ाना बने रहते हैं
मुझी से ज़िक्र किया करते हैं अक्सर मेरा

मैं बाज़ आया हूँ दावत से मसीहाओं के
खुदा की राह है और अज़्म है रहबर मेरा

मैं एक बार ही महफ़िल में उनके आया था
पता वे पूछते रहे हैं उम्र भर मेरा

दरक भी जाए तो ग़ाफ़िल न तेरे
अक्स से हो तुम्हारे आईने से दिल ही
बेहतर मेरा

संपर्क : सचिव, मंत्रिमंडल एवं समन्वय,
सूचना एवं जनसंपर्क तथा
राजभाषा विभाग।

ग़ज़ल

O मु॰ सुलेमान

जीतकर भी हारना अच्छा लगा।
रब! तेरा हर फ़ैसला अच्छा लगा।

मौत का चखना मज़ा हर नफ़्स को,
फिर मौत से डरना, क्या? अच्छा लगा

मुश्किलों के बाद हैं आसानियाँ,
आपने जो ये कहा, अच्छा लगा

सब यतीमो दीन पर रहमत रहे,
भूख में खाना देना, अच्छा लगा।

मक्र के जाल हैं फैले बहुत,
वक़्त से लड़ना मेरा, अच्छा लगा।

फूस का घर आग में जब जल गया,
जीस्त का ये हादसा, अच्छा लगा।

बाद मुद्दत जब वहाँ से घर चला,
जिसने देखा, यह कहा, अच्छा लगा।

गरचे सबसे प्रेम के हामी हैं हम,
बॉस से कुछ फ़ासिला अच्छा लगा।

इश्क़ है सुलेमां तेरा ओरूज़ पर
यार तेरा जब मिला अच्छा लगा

संपर्क : अपर समाहर्त्ता, प॰ चंपारण,
बेतिया, बिहार

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित :

मे. श्रीराम आयरन
लफार्ज सीमेंट और छड़ के थोक एवं खुदरा विक्रेता
मीठापुर, खगौल रोड,
पटना-८०००१
मोबाईल : ३३३७३६५
प्रोपराइटर : नरेश कुमार सिंह

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी

O अमृता प्रीतम

बीमारी की हालत में इमरोज़ के लिए लिखी गई कविता

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी
कहाँ? किस तरह? पता नहीं
शायद तुम्हारी कल्पना की चित्रकारी बन
तुम्हारे कैनवास पर उतरूँगी
या तुम्हारे कैनवास पर
एक रहस्यमय रेखा बनकर
चुपचाप तुम्हें देखती रहूँगी
या शायद सूर्य की रोशनी बन
तेरे रंगों में घुल जाऊँगी
या तेरे रंगों की बाहों में बैठकर
कैनवास पर बिछ जाऊँगी
पता नहीं किस तरह कहाँ
पर तुझे ज़रूर मिलूँगी
शायद एक चश्मा बन पानी
की फुहार तेरे
बदन पर बरसाऊँगी
एक ठंडक-सी बनकर
तेरी छाती से लग जाऊँगी
मैं और कुछ नहीं जानती
पर इतना जानती हूँ
कि समय जो कुछ भी करेगा
यह जन्म मेरे साथ चलेगा
यह जिस्म मरता है
तो सब कुछ मर जाता है
पर स्मृति के धागे
कायनाती कणों के होते हैं
मैं उन कणों को चुनूँगी
धागों को बुनूँगी
और में तुम्हें फिर मिलूँगी।

(पंजाबी से अनुवाद)

O निरुपमा दत्त

ग़ज़ल

O एहसान 'शाम'

सुर्ख़ो नाज़ुक गुलाब-सा चेहरा
कितना दिलकश है आपका चेहरा

राज़ छुपता नहीं छुपाने से
दिल का होता है आईना चेहरा

ख़ूबसूरत-सी एक ग़ज़ल होगी
आज देखा है आपका चेहरा

जिसको देखो लगाए फिरता है
एक चेहरे पे दूसरा चेहरा

मुझसे कहिए कि माजरा क्या है
आपका है उड़ा-उड़ा चेहरा

अजनबी था कि आशना कोई
जो मेरा घूरता रहा चेहरा

ज़ख़्म खाकर भी मुस्कराता था
शहर में देखा एक नया चेहरा

दोस्ती आप क्या निभाएँगे
पढ़ लिया है ज़रा-ज़रा चेहरा

अपने चेहरे को ग़ौर से देखो
कितने ज़ख़्मों से है भरा चेहरा

शहरे बेचारगी में भीड़ में 'शाम'
खो गया है कहीं मेरा चेहरा

संपर्क : इस्लामिया चौक,
गंजजला, सहरसा

किसे दूँ ?

O डॉ० सहदेव सिंह 'पाचर'

मेरे पास संविधान प्रदत्त
एक पवित्र सिक्का
जिसे गिरिजा, गुरुद्वारा, काशी,
काबा और मक्का.
किसको दूँ ?
घेरे हैं गुलाम, बेगम, बादशाह
उधर माँग रहा इक्का.
और ये ताश के छोटे-छोटे पत्ते
जैसे बिरनी के छत्ते
मौका पाते काट खाते
शहद-सा चाट जाते
और यह जोकर-मामूली
और अदना हकीर
जब जैसा तब तैसा
गुलाम को बादशाह से लड़ादेता
जैसे साँढ़ भैंसा
टुकुर-टुकुर बीबी देख रही टी०
दुक्की को तिक्की को सिर चढ़ा रखा है
संसद का पास बना रखा है
वादा पर वादा कोई कम कोई ज़्यादा
सिर झुकाए हाथ जोड़े जैसे कोई प्यादा
वाह रे प्रजातंत्र वाह रे नेता
बहुरूपिया-सा दल बदल लेता
घोड़े को गदहे को कोयल को कौओं को
एक तरफ़ काँव-काँव एक तरफ़ कूँ
आख़िर किसको दूँ
होड़ में कलंदर है
बापू के नाम पर बापू के बंदर हैं
मंच से ज़्यादा बैठे कुछ अंदर है।
उल्लू भी रातों में गिद्ध की बारातों में
सियार भी आया है लोमड़ी के साथ में
बाघ भी बैठे हैं कंगन ले हाथों में
कैसे लूँ ?
आख़िर किसे दूँ ???

संपर्क : पटेल चौक, भभुआ, वार्ड नं० १

अनगिन गीत बहार के

O डॉ॰ देवेन्द्र आर्य

कितनी बार मिटा दोगे तुम
मेरा नाम किताब से
हर पन्ने पर दर्द लिखा है
अनगिनत गीत बहार के।

सुख, दुख दोनों थे
पर मेरी नियति बँधी है शूल से
जूझ रही जो मझधारों से
नाव डरेगी कूल से?
जग के अमृत रस पीकर भी
दिया ज़हर का दंश है
पतझर को साधा है फिर भी

कितनी बार करोगे घट-बढ़
सच के सही हिसाब से
सब अंकों पर मुहर लगी है
जीते कब क्या हार के?

मैं पागल जो खोज रहा हूँ
परिचय इस अनुबंध में
सबके अपने स्वार्थ बँधे हैं
जग भर के संबंध में,
पाती किसको लिखूँ
न मेरे कल थे, ना जो आज हैं
मन का नायक हार न जाए
दुख के नए प्रबंध में।

कितना बार ढकोगे सूरज
छल बल मेरे छिपाय से
माँग रहे हैं कबसे उत्तर
सब कॉलम अख़बार के।

किसको नमन करें
हर मूरत लिए मुखौटा घूमती
ऊपर-ऊपर के संवेदन
भीतर दर्द बिसोरती,
सरेआम अपहरण स्वत्व का
पर राजा ख़ामोश है
रिश्तों की चटकन से माला
प्रेम-प्यार की टूटती।

खुले रहें अंदर बाहर से
ढकना किसे नक़ाब से
बनी रहे साँसों की दुलहन
डोली बिना कहार के।

❋❋

संपर्क : वाणी सदन, बी॰-९८, सूर्यनगर, गाज़ियाबाद-२०१०११

दो कविताएँ

O अक्षय जैन

जय बोलो जवाहरलाल की
विश्व बैंक का क़र्ज़ चुकाना है
है बाक़ी
विश्व बैंक का सूद चुकाना है
हैं बाक़ी
धीरे-धीरे बिक जायेंगे
हाथी
घोड़ा
पालकी।

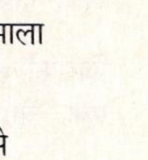

मैंने ईश्वर से कहा
अब तू भी
मंदिर से बाहर निकल
देख
अपनी बनाई हुई दुनिया को देख
और तू भी हमारी तरह
घर से बाहर निकलने में डर।

संपर्क : १३, रशमन अपार्टमेंट, एस॰एस॰ रोड, मुलुंड (प), मुम्बई- ४०००८०

काव्य-कणिकाएँ

O मुनि मोहजीत कुमार

जल जीवन है
यह सच्चाई है
जल मृत्यु है
यह भी सच्चाई है
सत्य को
सीमा में नहीं
उसे ...
एक-एक कोण से
परखें
जिससे कथन सिद्ध होगा
'सत्य'
सत्य है।

जीवन की
अंधेरी रात में
सुबह को उतारो
काँटों की
चुभन से
गुलाब को उतारो
स्वप्न
सच के ...
झरोखे से निहारो
तब ही
सार्थक होगा
'दूरदर्शी लक्ष्य'

संपर्क : अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर मोड़, महरौली, नई दिल्ली

२००६ का संकल्प

O जिया लाल आर्य

सुबह रोज़ सूरज उगता है, आशाएँ लेकर।
ऊर्जा चाहे जितनी भर लो, निर्भर करता यह तुम पर॥

उवगंठी यामिनी हटाकर, स्वागत करती सहस्त्रांसु का।
हल्दी, चंदन अक्षत कर में राजतिलक माथे का टीका॥

अगवानी में खड़े समुत्सुक, नये साल की नई सुबह पर।
हो कृतार्थ, उत्साहपूर्ण, समभाव, सुखी उन्नत जीवन भर॥

जनजीवन भयमुक्त प्रेम से मिटा भेद मानव-मानव का।
बिना दाग़ चादर से, सम्मान करे अब जनमानस का॥

राष्ट्रभावना जीवन-दर्शन अंतर्मन में हो उल्लास।
लेकर यह संकल्प आज हम आओ गढ़ें नया इतिहास॥

**संपर्क : 'आर्य निवास', २३, आई॰एस॰ कॉलोनी,
क़िवईपुरी, पटना-१**

मम

तुमपे नाज़ है

O डॉ॰ हीरालालनंदा 'प्रभाकर'

अपने चेहरे का मुलाहिज़ा तो फर्माइए।
दर्पण ही आपको सही चेहरा दिखाने वाला॥

सियासते वतन की क्या कहने जनाब।
तामील से बहुत दूर है क़ानून बनाने वाला॥

कितने रंगों से लैस है तुम्हारी जम्हूरियत।
तुममें से ही कोई है आतंक फैलाने वाला॥

फ़र्ज़ को अपने भूल न जाना मेरे अज़िज़ों।
तुमसे बढ़ के दूजा नहीं वतन को चाहने वाला॥

नौजवानों तुम पे नाज़ है ये गुलिस्ताँ को।
तुम ही में से कोई इसे बुलंदी पे पहुँचाने वाला।

मम

अजय अपार्टमेंट्स, ज़मीनी तल, ए /२, मलाड (प॰) मुंबई ९५

जीवन एक समर है

O जगदीश प्र॰ सिन्हा 'दयानिधि'

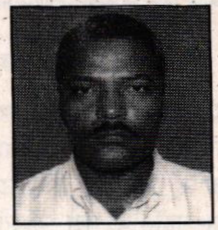

जीवन बस पर्यंक नहीं काँटों से चुभन भरा है।
नहीं ख्वाब का महल विपद् का पद-पद यह घेरा है॥
अत: मर्त्य को जो ललकारे होता वही अमर है।
... जीवन एक समर है॥

संघर्षों के उष्णदाह में जो तिल-तिल मुसकाया।
विजय महारथ वह क्या पाए, रथ खुद दौड़ा आया॥
ऐसे ही वीरों पे गर्वित होता शैलशिखर है।
... जीवन एक समर है॥

संकल्पों की दीप-शिखा तूफ़ानों में न डोली।
प्राणों का लवस्नेह सहारा पाकर गर्वित बोली॥
खाक बुझा सकती आँधी क्या? उसको मेरा डर है।
... जीवन एक समर है॥

रुको नहीं यह समझ कि सागर बहुत अधिक गहरा है।
नभ के चाँद ग्रहों को लें क्या? तारों का पहरा है॥
अविरल बढ़ नौका से तट पर चाहे उच्च लहर है॥
... जीवन एक समर है॥

नहीं खड्ग की धार कभी चलतें हैं वीर अनेकों।
देख बाल सूरज की किरणें छूती हिमश्रृंगों को॥
घटाटोप कितना भी हो युग-युग निकला दिनकर है।
... जीवन एक समर है॥

मम

**संपर्क : संपदाक 'पाटलिपुत्र एक्सप्रेस,
लक्ष्मी भवन, राम सहाय लेन, महेन्द्रू, पटना- ६**

आप हैं कार्यकर्ता

O सत्यनारायण भटनागर

वे मेरे सामने बैठे हैं और मुस्करा रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि वे क्यों मुस्करा रहे हैं। मैं मुस्करा नहीं रहा हूँ। जानता हूँ कि यह अशिष्टता है। मैं उन्हें जानता नहीं, वे मुझे जानते नहीं, इसलिए मुस्कराने का कोई कारण भी नहीं। मुझे लगा वे फोकट में मुस्करा रहे हैं। उनके पीले दाँत के दर्शन से निजात पाने के लिए मैंने प्रश्न का गोला दागा,

''कहिए, कैसे आना हुआ ...?''

''अब बिना कारण तो कोई आता नहीं। सकारण ही कोई कहीं आता-जाता है या फिर बुलावे पर आता है। आपने बुलाया हम चले आए ...।'' उन्होंने एक प्रेस-विज्ञप्ति का कतरन हमें थमा दिया, जिसपर मेरा ही हस्ताक्षर था।

विज्ञप्ति देखकर सारी बात समझ में आ गई। मैंने बड़ा बाबू को छोटे बाबू के साथ संबंधित फाइल के साथ बुलाया। भाग्य अच्छा था, बाबू लोग चाय-पानी के लिए अभी निकले नहीं थे। जल्द ही हाजिर हो गए। फाइल देखा। एक शिकायतनुमा आवेदन-पत्र है या आवेदन-पत्रनुमा शिकायत, यह तो पढ़ने पर ही पता चलेगा। बेरोज़गार युवकों के आवेदन-पत्र की तरह शिकायत-पत्र आते रहते हैं। अब इन्हें कौन पढ़े? कितना पढ़े? मैंने उनका नाम पढ़ा, जिसके नीचे लिखा था, ''जन सेवक एवं सामाजिक कार्यकर्ता'' पढ़कर मैं ठहर गया। पूछा,

''कहिए, क्या शिकायत है ...?''

''इस आवेदन में हमने सब खोल-खोलकर लिख दिया है। अब देखिए साहब! आज कल गुण्डागर्दी कितनी बढ़ गई है। छेड़-छाड़ का तो अंत नहीं। भले घर की लड़कियाँ अब सड़क पर चल नहीं सकतीं। यह सब सिनेमा का प्रभाव है। हमारे क़स्बे में अभी तक सिनेमा हॉल नहीं है। साहब बड़ी शांति है। घरों में बैठकर लोग दूरदर्शन पर सिनेमा देख लेते हैं। लेकिन अब कुछ लोग इस क़स्बे की शांति भंग करना चाहते हैं। दरअसल ये असामाजिक तत्त्व हैं। एक सिनेमा घर चालू करना चाहते हैं। अब आप ही कहिए शांत क़स्बा अशांत हो जाएगा या नहीं? पास में धार्मिक स्थल भी है। शोर-शराबा बढ़ेगा या नहीं? सांप्रदायिक झगड़े होंगे या नहीं? इसलिए हमारी आपत्ति है कि सिनेमा का लायसेंस न दिया जाए। आपने विज्ञप्ति जारी की तो मैंने आपत्ति पेश कर दिया है। हम क़स्बे में शांति भंग नहीं होने देंगे। क़स्बे को सिनेमा घर नहीं चाहिए ...।''

वे चुप हुए तो मुझे राहत मिली। बयान लिया और हस्ताक्षर करने को कहा। उन्होंने कलम को तलवार की तरह पकड़कर बड़े जोर देकर हस्ताक्षर कर दिया।

मैंने कहा, ''यह क्या लिखा है ...?''

वे बोले, ''हमारा नाम 'क' है। हमने लिख दिया। बस हम इतना ही लिखना जानते हैं ...।''

मैंने हँसते हुए कहा, ''आपकी योग्यता तो बहुत है। बहुत से सामाजिक कार्यकर्ता तो अँगूठा लगाते हैं। आपका भविष्य उज्ज्वल है ...।''

वह भी हँसा। हाथ मिलाने के लिए जबरन हाथ बढ़ाते हुए बोला, ''मेरे योग्य कोई काम हो तो जरूर याद कीजिएगा। अपुन सामाजिक कार्य करते हैं। अच्छा तो हम चलते हैं ...।'' उसने हाथ जोड़ा और चला गया।

मेरा अनुभवी बड़ा बाबू खड़ा था। उसके निकलते ही बोला,

''साहब इससे मुँह मत लगाना। यह अच्छा आदमी नहीं है। इसने जिस थाली में खाया है उसी में छेद किया है ...।''

मैंने उसे इस सलाह के लिए धन्यवाद देते हुए कहा,

''आपने ठीक ही फरमाया, आज कल अधिकतर तो जिस डाल पर बैठे होते हैं, उसी को काट रहे होते हैं, यह आदमी कुछ ज्यादा समझदार है ...।''

बाबू चला गया और बात आई-गई हो गई। ऐसे लोग तो रोज आते हैं। किस-किस को याद रखें ...।''

कुछ दिनों बाद एक दिन श्री 'क' मुझसे भी पहले दफ़्तर की कुर्सी पर जमे पान चबाते हुए मेरा इंतजार कर रहे थे।

नमस्कार और मुस्कान के आदान-प्रदान के बाद वे बोले,

''साहब आज विज्ञप्ति पर आपत्ति दर्ज कराने का अंतिम दिन है। सोचा आप से मिल लूँ और किसी की आपत्ति तो नहीं है ...?''

''आपको किसी और की आपत्ति से क्या लेना-देना? आप का बयान हो चुका है। आपने तो माननीय उच्च न्यायलय में भी जनहित याचिका दायर कर चुके हैं। हमें भी पार्टी बनाया है। अब आप परेशान क्यों हो रहे हैं ...?'' मैंने बेरुख़ी से कहा।

वे मुस्कराए। मुस्कराना उनकी आदत है। मुस्कराहट पर क़ाबू पाकर बोले, ''दरअसल हमारा विश्वास प्रशासन पर से उठ गया है। बहुत भ्रष्टाचार है। कुछ भी गोलमाल हो सकता है। इसीलिए माननीय उच्च न्यायालय में गुहार लगानी पड़ी है। हाँ, तो कोई और आपत्ति भी दर्ज हुआ है? जरा देख लीजिए साहब ...।''

''देख लेंगे। आप बेचैन क्यों हो रहे हैं ...?'' मैंने कहा।

मेरी बात सुनकर वे हँसते हुए बोले,

''लगता है आप नाराज हो गए हैं। सच कहूँ, हम ठहरे सेवक यानी सामाजिक कार्यकर्ता। हमारा सबसे लेना देना लगा ही रहता है।

किसी का नुकसान हो या कोई दु:खी हो जाए यह हम सहन नहीं कर सकते। बात दरअसल यह है कि अगर किसी दूसरे ने आपत्ति दर्ज नहीं करवाई है तो मेरी आपत्ति को निरस्त कर दें। हम चलाना नहीं चाहते ।''

''आखिर क्यों ...?'' मैंने पूछा।

''समझौता हो गया है ...।'' उसने कहा।

मुझे हैरान देखकर वह बोले,

''आप ही बताइए साहब! इस आधुनिक युग में किसी क़स्बे में सिनेमा हॉल होना प्रगतिशीलता का चिन्ह है कि नहीं ...? क़स्बे की चहल-पहल बढ़ेगी। धंधे का विकास होगा। अभी लोग आठ बजे ही बिस्तर पकड़ लेते हैं। चारों ओर सन्नाटा पसर जाता है, जैसे कर्फ़्यू लगा हो। सिनेमा हॉल खुलने के बाद ही तो जागरण प्रारंभ होगा। रोजी-रोजगार बढ़ेगा। हमारा क़सबा भी आधुनिक क़सबे में गिना जाने लगेगा। सिनेमा हॉल तो समय की माँग है ...।''

''श्रीमान् जब आप इतना जागरुक हैं तो आपत्ति क्यों लगा दी थी ...?'' मैंने टोका।

हँसते हुए बोले,

''यह एक व्यक्तिगत बात है। आप ही बताइए साहब क्या एक सामाजिक कार्यकर्ता को पेट-परिवार नहीं होता ...? जुगाड़ तो लगाना ही पड़ता है। हमने फकीरचंद भाई से कहा कि साईकिल स्टैंड समाजसेवक को दे दो। वह अकड़ गया तो हमने आपत्ति लगा दी। अब जब वो सहमत हो गए तो मुझे आपत्ति क्यों होगी। इसीलिए आपत्ति वापस लेने आए हैं ...।''

मुझे समाजसेवक का अर्थ समझ में आ गया। फिर भी व्यंग्यात्मक स्वर में पूछा,

''अब आप मुक़दमें का क्या करेंगे ...? उसमें तो काफी खर्च आया होगा ...।''

''सो तो साहब! इस मामले में भी बात चल रही है। हम माँग रहे हैं दस हजार और वह दे रहे हैं पाँच हजार। मामला सात-आठ पर तय हो ही जाएगा। किसी हाल में घाटा नहीं होगा। जनहित की भावना जगाकर नवसिखुआ वकील से केस फाइल कराया है ...।''

मैं अपनी हँसी रोक नहीं पाया। उन्होंने भी साथ दिया। फिर मैंने पूछा,

''यह तो हुई सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका। जनसेवक वाली भूमिका पर भी प्रकाश डाल दें ...।''

''भाई साहब! आप भले मनुष्य निकले। इसलिए बताने में हर्ज नहीं है। अब जरा आप ही बताइए एक धंधे से चलता नहीं ना? इसीलिए जनसेवा के रूप में हम लोग राशन कार्ड, ड्राइविंग लाईसेंस, मनचाहे स्थान पर तबादले आदि का ठेका लेते हैं। इस हाथ दे और उस हाथ ले। जनता को घर बैठे इच्छित सेवा मिल जाती है। काम कराने के लिए भी तो सेवा शुल्क देना पड़ता है। आप भले मनुष्य हैं अगर कोई काम हो तो कहिएगा खास रियायत कर देंगे ...।''

अचानक उन्हें कुछ याद आ गया। घड़ी देखकर उठते हुए बोले,

''बातों में फँस गया। मंत्री जी को सर्किट हाऊस में पकड़ना था। अब शायद ही पकड़ाएँगे ...।

लपककर निकलते श्री 'क' को देखकर मैंने सोचा,

श्री 'क' भी संसद भवन मार्ग पर चल रहा है ...।''

संपर्क : अर्हम्- सी०/१६, जमना नगर सोडाला, जयपुर-३०२००६

संवाद

○ ए० कीर्ति वर्द्धन

जीवन में संवाद बनाए रखिए
वाद तक चलाए रखिए।
विवाद न होने दीजिए
अन्यथा प्रतिवाद को रास्ता मिल जाएगा।
संवाद ज़रूरी है मतभेद मिटाने में
वाद ज़रूरी है बात समझाने में
विवाद से कुछ हल नहीं होता,
प्रतिवाद दुश्मन बना देता है।
संवाद में मधुरता है
वाद में अधीरता है
विवाद में गुस्सा है
प्रतिवाद में निराशा है।
संवाद मन के भावों को दर्शाता है
वाद तर्कों को आधार बनाता है
विवाद कुतर्कों का हिमायती कहलाता है।
प्रतिवाद केवल बदले का भाव लाता है।
इसलिए जीवन में संवाद बनाए रखिए
वाद को आधार बनाए रखिए
विवाद को जड से मिटाकर
जीवन को खुशहाल बनाए रखिए।

५३, महालक्ष्मीएंकलेव, जानसठ रोड, मुज़फ़्फ़र नगर, (उ०प्र०)

Sudhir Ranjan (M Sc. MCSE)
9811281443

SP INFOTECH

SOLUTIONS IN :

COMPUTER ASSEMBLING, MAINTENANCE,
AMC, LAPTOP REPAIR, NETWORKING, WEB SITES,
GRAPHIC DESIGNING, SOFTWARE DEVELOPMENT

D-55, Near Shipra Hotel, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi-92

Tel.: 011-52487975, 22059410, Telefax : 22530652

Mobile : 9811310711, 9873434085 /6 /7

E-mail : spinfotech@email.com

इस्लाम में पड़ोसी के अधिकार और कर्त्तव्य

○ डॉ॰ जाहिद अनवर

वह मुसलमान जो अल्लाह को पूरी दुनिया का रब और पैग़ंबर हज़रत मोहम्मद सल्लम को पूरी दुनिया के लिए रहमत मानता है वही मुसलमान अपने वतन और हमवतनों के लिए ज़हमत कैसे बन सकता है? वह दहशत का पर्याय हो ही नहीं सकता। इंसानियत का ध्वजधारी, अमन का संदेशवाहक, मासूम बच्चों, अबला नारियों, बूढ़ों, लाचारों और दलितों का मुहाफ़िज़ ख़ून की नदियाँ बहा सकता है? अमन की नगरी को आग का दरिया बना सकता है? नहीं, कभी नहीं। एक मुसलमान ख़ुदा के हुक्म और हज़रत मोहम्मद सल्लम के फ़रमान की नाफ़रमानी नहीं कर सकता।

हर मुसलमान के लिए कुरान जीवन की आचार संहिता है और हज़रत मोहम्मद सल्लम की हदीस (बातें) आचार संहिता की व्याख्या और दिशा-निर्देशक। आम लोगों की जानकारी के लिए दैनिक जीवन में पड़ोसी के क्या-क्या दायित्त्व और कौन-कौन से अधिकार हैं, इन्हें कुरान और हदीस के हवालों के साथ पेश किया जा रहा है।

कुरान करीम के सूरा अलनिसा-36 में खुदा का फ़रमान है कि

''... और रिश्तेदार से, अजनबी हमसाए से, पहलू के साथी और मुसाफ़िर से और लौंडी गुलामों से जो तम्हारे कब्जे में हों, एहसान का मामला रखो ...।''

खुदा ने इस आयत में इमानवालों को इंसान के अधिकारों को अदा करने का हुक्म दिया है। पड़ोसी चाहे रिश्तेदार हो या अजनबी उससे अच्छा सुलूक करना चाहिए। ख़ुदा के हुक्म में मुसलमान या हमकौम का शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया है। यानी हर इंसान का पड़ोसी वही है जो उसका हमसाया है। अलबत्ता किसी अजनबी पड़ोसी के मुकाबले रिश्तेदार हमसाया का हक़ दुगुना है अर्थात् एक हक़ पड़ोसी का और दूसरा रिश्तेदारी का है।

अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लम की एक हदीस (कथन) है कि

''अपने पड़ोसी से नेक सुलूक करो।''

यानी एक मोमिन होने की हैसियत से मुसलमानों पर उसके पड़ोसी (चाहे वह किसी धर्म-जाति और कबीले का हो) के लिए उसका फ़र्ज़ बनता है कि जब वह बीमार पड़े तो उसकी मिज़ाजपुर्सी करे, देख-भाल करे। कर्ज या किसी तरह की मदद माँगे तो उसे दे। परेशानी में हो तो उसे तसल्ली दे, हमदर्दी का इज़हार करे और अगर कामयाबी मिली हो या कोई नेमत हाथ लगे तो उसे मुबारकबाद दे।

मोहम्मद सल्लम ने फ़रमाया है कि

''अल्लाह के नज़दीक बेहतर दोस्त वह है जो अपने दोस्त के लिए अच्छा हो और बेहतर पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के लिए अच्छा हो।''

एक दूसरी हदीस में उन्होंने फ़रमाया यह है कि

''पड़ोसी के बारे में जिबरैल अलेहिस्लाम (खुदा के संदेशवाहक) मुझे बार-बार ताकीद करते थे यहाँ तक कि मैंने ख़्याल किया कि वह एक पड़ोसी को दूसरे पड़ोसी का वारिस (उत्तराधिकारी) करार देंगे।''

पड़ोसी के संदर्भ में एक तीसरी हदीस है कि

''... कोई बंदा मोमिन (मुसलमान) नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने पड़ोसी के लिए वही चीज़ पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।''

एक बार हज़रत आईसा रजि॰ (मोहम्मद सलम की पाक पत्नी) ने अल्लाह के रसूल से फ़रमाया कि ''मेरे दो पड़ोसी हैं। मैं इनमें से किसके यहाँ हदिया (तोहफ़ा) भेजूँ?'' आपने फ़रमाया,

''जिसके घर का दरवाज़ा तेरे घर के दरवाज़े से ज़्यादा करीब हो।''

अल्लाह के रसूल फ़रमाते हैं कि

''ऐ मुसलमान औरतों! पड़ोसन, पड़ोसन के लिए तोहफ़ा देने को हक़ीर (तुच्छ) न जाने चाहे वह बकरी का एक खुर (अत्यंत मामूली वस्तु) हो।''

यानी हर मुसलमान औरत को अपनी हैसियत के मुताबिक़ पड़ोसन के यहाँ तोहफ़ा भेजते रहना चाहिए। उसी तरह किसी पड़ोसन के यहाँ से आए हुए मामूली तोहफ़ा को ख़ुशदिली से कुबूल करे। इस लेन-देन से एक-दूसरे के ख़िलाफ़ राग-द्वेष दूर हो जाता है और मोहब्बत बढ़ने लगती है।

हज़रत अबूज़र रजि॰ कहते हैं कि हज़रत मोहम्मद सलम ने फ़रमाया है कि

''अबूज़र! जब तू शोरबे वाला (रसदार) सालन पकाने लगे तो उसका पानी ज़्यादा कर दे और अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी कर।''

हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ कहते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह को फ़रमाते हुए सुना कि

''वह मोमिन नहीं है जो ख़ुद पेट भरकर खाना खा ले और उसके पहलू में उसका हमसाया भूखा रह जाए।''

एक बार हज़रत मोहम्मद सलम ने फ़रमाया कि

''अल्लाह की कसम वह मोमिन नहीं है, अल्लाह की कसम वह मोमिन नहीं है।''

पूछा गया ''कौन? ऐ अल्लाह के रसूल।''

आपने फ़रमाया ''जिसके शर (आतंक) से उसका हमसाया अमन में न हो।''

यानी ईमानवाला फ़सादी और आतंकी नहीं हो सकता। वह अपने पड़ोसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, उसपर जुल्म नहीं कर सकता, इस पर आरोप नहीं लगा सकता, उसकी इज़्ज़त आबरू पर हमला नहीं कर सकता, बल्कि वह अमन और सलामती का द्योतक होगा।

अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि

''तुम में से कोई शख़्स अपनी दीवार में पड़ोसी को लकड़ी गाड़ने से न

रोको।''

अक्सर ऐसा देखा गया है कि एक पड़ोसी अपने पड़ोसी की दीवार से कुछ फ़ायदा उठा सकता है लेकिन जब वह अपनी इच्छा ज़ाहिर करता है तो पड़ोसी इच्छा-पूर्ति की इजाज़त नहीं देता। उक्त हदीस में इसी अमल को रोका गया है।

अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि ''क़ियामत (महाप्रलय) के दिन जिन दो झगड़ा करनेवालों का मुक़दमा सबसे पहले सुना जाएगा वह दो पड़ोसी होंगे।''

एक आदमी ने अल्लाह के रसूल से पूछा कि ''ऐ अल्लाह के रसूल! जब मैं नेकी करूँ तो मुझे कैसे मालूम हो या जब मैं बुराई करूँ तो मुझे कैसे मालूम हो?''

आप ने फ़रमाया कि

''जब तू अपने पड़ोसी को यह कहते सुने कि तूने नेकी की है तो बेशक तूने नेकी की है और जब तू उनको यह कहते हुए सुने कि तूने बुराई की है तो बेशक तूने बुराई की है।''

उपर्युक्त बातों के आलोक में एक अल्प बुद्धि व्यक्ति भी इतना तो समझ ही सकता है कि अल्लाह के हुक्म को मानने वाला और अल्लाह के रसूल के फ़रमानों और हदीसों की पैरवी करनेवाला मुसलमान अपने पड़ोसी के लिए उसका सच्चा दोस्त होगा। मुसीबत की घड़ी में उसका मुहाफ़िज़ होगा। ऐसा व्यक्ति उसके मालो दौलत को हड़प नहीं सकता। उसकी बेटी-बहू को बुरी नज़र से नहीं देख सकता। मुसीबत की घड़ी में नज़र नहीं फेर सकता। उसके ख़िलाफ़ साज़िश नहीं कर सकता। उसे क़तल नहीं कर सकता। उसे भूखा-नंगा और बीमार नहीं छोड़ सकता। उसके मज़हबी जज़्बात को ठेस नहीं पहुँचा सकता। उसकी इबादत में अड़चन पैदा नहीं कर सकता। उसे अपने व्यक्तित्त्व और माल से सहूलत पहुँचाने में पीछे नहीं हट सकता। उसके आतंक से रातों की नींद हराम नहीं हो सकती। उसकी उपस्थिति में किसी का अग़वा नहीं हो सकता। एक मुसलमान क़ौम और मुल्क के लिए प्रेरणादायी व्यक्तित्त्व होगा।

क़ुरानपाक के सूर-ए-फ़ुर्क़ान में अल्लाह ने अपने बंदों के संबंध में कहा है कि

''... और अल्लाह के बंदे वह हैं जो ज़मीन पर विनम्रता के साथ चलते हैं और जब मूर्खगण उनसे मुर्खता की बात करते हैं तो वह दुष्कृत्य निवारण की बात करते हैं और जो रातों को अपने रब के आगे सिज्दा और निवास (आराधना) में लगे रहते हैं कि ऐ ख़ुदा हम से नरक के कष्ट को दूर रखिए क्योंकि कष्ट पूरी तबाही है। बेशक़ नरक बुरा ठिकाना है और वह लोग जो ख़र्च करते हैं तो न फ़िज़ूलख़र्ची करते हैं न तंगी और उनका ख़र्च दरमियाना रहता है और जो अल्लाह के साथ किसी और ख़ुदा की पूजा नहीं करते और जिस जान को अल्लाह ने सम्मानित ठहराया है उसे क़तल नहीं करते मगर हक़ पर और वह बलात्कार नहीं करते और जो ऐसा करेगा तो अपने किए की सज़ा पाएगा, क़ियामत में उसे दुगुनी सज़ा मिलेगी और वह उसमें हमेशा के लिए ज़लील और रुसवा होकर रहेगा मगर जो तौबा कर ले, ईमान ले आए और नेक अमल करे तो अल्लाह ऐसे लोगों के गुनाहों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बड़ा रहम करनेवाला है।''

संपर्क : 'खान विला', मिर्चा राम, पो॰ सराय, जिला- वैशाली

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

आठवें वर्ष में प्रवेश

विचार दृष्टि

अब नये तेवर व कलेवर में

अपने 22वें अंक के साथ विचारोत्तेजक एवं प्रभावोत्पादक आलेख जाने-माने लेखकों की कलम से शानदार कागज पर जानदार छपाई आकर्षक साज-सज्जा में बोलती तस्वीरें सामाजिक राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ व कविताएँ सम-सामयिक मुद्दों पर निष्पक्ष एवं निर्भिक विचार व दृष्टि राष्ट्र चेतना, शिक्षा, सेहत, महिलाओं पर विशेष सामग्री कला, संस्कृति एवं साहित्य पर गहरी पड़ताल दिखने में सुंदर और पढ़ने में बेहतर सदस्यता ग्रहण कर आप अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ और एक अच्छी मानसिक खुराक पायें।

अंजलि
सहायक संपादक
'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
दूरभाष : 22530652

तुम चंदन हम पानी

○ डॉ॰ सुभाष शर्मा

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"
डॉ॰ सुभाष शर्मा

धर्म शब्द 'धृ' धतु से बना है, जिसका तात्पर्य है धारण करना, पालन करना। धर्म वही है जिससे आनंद की प्राप्ति हो। हमारे यहाँ कितने सारे धर्मों के नाम हैं। सभी सत्य को परिभाषित करते हैं। अत: सभी धर्म सत्य एवं ऋण का गठबंधन है। हमारे तीन धर्म विशेष हैं- मानव धर्म, सनातन धर्म एवं आर्य धर्म। जहाँ 'धर्म' शब्द है वह न तो किसी सीमा की परिधि में मापा जा सकता है और न समय की परिधि में आँका जा सकता है। कुल मिलाकर 'सत्य' ही सनातन धर्म है क्योंकि यही धर्म का प्रमुख आधार है। इसी कारण 'सत्यमेव जयते' की गूँज है विश्वास और आस्था के साथ। हर धर्म में परिवार भावना है और विश्व भावना है। समस्त समुदाय में प्रकाश है जो चैतन्य रूप में है, गुरुत्वाकर्षण शक्ति है, गुणवत्ता है- वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से धर्म है। सूत्रपात हुआ है कि "रास्ते अलग-अलग हैं ठिकाना एक है" कहना समीचीन होगा। धर्म में साधना है तो साथ ही साथ साध्य भी एक है। धर्म तो अमरत्त्व का वह द्वार है जहाँ कोरा ज्ञान नहीं, न कोरा भाव, अपितु समग्रता में स्वस्ति का रूप है। जहाँ भक्ति है वहाँ ज्ञान है, प्रेम है। सगुण और निर्गुण भक्ति होते हुए भी भावना एक है। यही निर्गुण भक्ति है तो वहाँ ब्रह्म है, जो निगुण, निराकार, असीम, अनंत, घट-घट व्यापी है- यदि राम है तो वह दशरथ सुत राम है, मर्यादा पुरुषोत्तम राम है- चाहे कोई राम हो सब में राम समाया है। तुझमें राम मुझमें राम समाया सबसे करले प्यार जगत में कोई नहीं पराया। इस प्रकार हम संकल्प करें कि धर्म के नाम पर दुराग्रह की खाई तभी पाट सकेंगे जब एक धर्म के अनुयायी, दूसरे धर्म के विषय में रुचि ले। क्योंकि हर धर्म की विशेषता है, एकात्मभाव है, सभी धर्म यहाँ ईश्वर के पात्र हैं। भले ही कितनी सारी जातियों के लोग इस भूमि में आए। सब के सब एक ही शरीर में समाए और एक हो गए। विश्व की एकता के लिए सत्य, अहिंसा, सद्भाव, प्रेम, बंधुत्त्व आदि गुण समाहित हैं। एकता की अद्भुत अनुभूति रविन्द्रनाथ की कविता 'एई भारतेर महामानवेर सागर तीरे ... ध्वनित तारि विचिय सूर' में प्रतिध्वनित है।

हिंदू धर्म : जब हिंदू हिंदू शब्दों का प्रयोग करता है वहाँ हम सिंधु घाटी में फैली उस सभ्यता को 'हिंदू' कहेंगे। इतिहास को टटोलें तो मोहनजोदड़ों की खुदाई में जिन देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिलीं, उन्हें देखकर मान्यता दर्ज की नारी शक्ति जो सम्पूर्ण सृष्टि की आधारशिला है। मातृदेवी भवो: की पूजा के साथ ही ऐसे पुरुष देवता की भी पूजा की जाती थी जिसकी मुद्रा शिव जैसी थी। अत: शिवपूजा का अनुमान लगाया गया है। पत्थरों, वृक्षों, पशुओं की पूजा के अंदर ऐसा विश्वास था कि इनमें अच्छी आत्माएँ निवास करती थीं। अत: इनको प्रसन्न करने की धारणा हो। मोहनजोदड़ो की खुदाई में भक्तिमार्ग और पुनर्जन्मवाद जैसे दार्शनिक सिद्धांत के चिह्न मिलते हैं। आर्य संस्कृति में पुरुषतत्त्व की प्रधानता और स्त्रीतत्त्व को उसके अधीन माना गया। प्रकृति के पुजारी इंद्र, वरुण, सूर्य, भिन्न आदि देवताओं की आराधना होती थी। वरुण, इंद्र, अग्नि, वायु, प्रजापति आदि देवताओं की पूजा। सूर्य हितकारिणी शक्ति का प्रतीक है, प्रकाश देनेवाला है। अग्नि बिना यज्ञ नहीं होता। अत: अग्नि का प्रमुख स्थान था। इस प्रकार अपनी-अपनी गुणवत्ता से सभी पूज्यनीय हैं। यह कह सकते हैं कि ईश्वर ही विश्व की परम सत्ता है। हर भक्त किसी भी रूप में ईश्वर का स्मरण कर सकता है, प्रसन्न कर सकता है क्योंकि भक्ति में शक्ति है, विश्वास है। जब कर्म सिद्धांत की ओर ध्यान गया तो कर्त्तव्यबोध की भी वृद्धि हुई। हिंदू धर्म में त्रिदेव का महत्त्व हुआ- ब्रह्मा, विष्णु और महेश। विष्णु के कई अवतार हुए। मत्स्यावतार, वराहावतार आदि ... शिव स्वयंभू। कृष्ण को पूर्णावतार माना गया। कालांतर में कृष्ण की पूजा प्रचलित हुई। कृष्ण और विष्णु में कोई भेद माना नहीं गया, दोनों ही एक हैं। सभी की लीलाएँ हैं- राम हो, कृष्ण हो, गणेश हो या शिव हो जो हरि अनंत हरि कथा अनंता को चरितार्थ करते हैं। गंगा, गौ, नारी की पूजा हिंदू संस्कृति का अभिन्न अंग है- नारी को शक्ति का प्रतीक माना गया- नारी के बिना सब अधूरा है- "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:" कहा गया। गाय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देनेवाली है- गाय को माता का स्वरूप दिया गया- उसमें देवता निवास करते हैं। गंगा पाप को धोती है, पुण्य दिलाती है। संक्षेप में कह सकेंगे कि हिंदू धर्म सर्वकल्याणकारी है; अमर है और विश्व की अन्य संस्कृतियों की जननी है। हिंदू धर्म में कई संप्रदाय हैं जिनका अपना इतिहास है, महत्त्व है। इसी प्रकार सार में अन्य धर्मों से हम रूबरू होते हैं जो हमें एकता के सूत्र में पिरोते हैं।

'जैनधर्म' जैन शब्द 'जिन' से बना है जिसका अर्थ है- विजेता जिसने सभी इंद्रियों को जीत लिया। इसलिए 'जिन' की संज्ञा दी गई है। जैन मुनियों ने सांसारिक बँधनों से मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ा। महावीर जी ने अपने संदेश को मानव संस्कृति में फैलाया। दया, परोपकार, अहिंसा, त्याग, सहिष्णुता, तप एवं संयम जैन धर्म में इन बातों पर बल दिया गया- जगत् अनादि है और इसके सभी पदार्थ नश्वर हैं।

आत्मा मोक्ष प्राप्ति का एक सोपान है और जीव ही आत्मा है। आत्मा शुद्ध है और शरीर अशुद्ध, मिथ्या, अवरनि, प्रमाद के कारण ही आत्मा शरीर में बँधती है।

मन आत्मा से भिन्न है, मोह माया और कर्मों के प्रति आकर्षण ही कर्म-बंधन का मूल कारण है, कर्मों से मुक्ति पाना ही परमध्येय है। सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचरण ये मोक्ष प्राप्ति के साधन

हैं। मुक्त आत्मा ही श्रेष्ठ है। जैन धर्म में दो मुख्य समुदाय हैं- दिगम्बर और श्वेताम्बर। इनका अपना महत्त्व है। जैनधर्म में नवकार मंत्र महामंत्र है। पर्युषण इनका महापर्व है।

बौद्धधर्म जो जीवन के एक नवीन पथ की ओर अग्रसर करता है इसमें सामाजिक क्रांति के स्वर मुखरित हैं पर क्रांति के पश्चात् शांति है, इसका प्रमाण है। गौतम बुद्ध ने बताया- इस संसार में दु:ख है, इस दु:ख का कारण वासना है। अत: अष्टांगिक मार्ग है जिसमें सम्यक् दृष्टि सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक् , सम्यक् कर्म, सम्यक् अजीव, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि। बुद्ध ने जीवन को सादगी बनाने का संदेश दिया - ''बुद्धं शरणं गच्छामि'' से विभूषित बौद्धधर्म है जिसमें कहा गया है तुम आत्मदीप बनकर विचरण करो, धर्म को अपना दीपक बनाओ और केवल धर्म की शरण जाओ। बौद्धधर्म में हीनयान और महायान समुदायों का उल्लेख है। बोधिसत्त्व का महत्त्व है जो दया के भाव से मानव जाति के कल्याणार्थ है।

'ईसाई धर्म' इसके प्रवर्तक ईसा मसीह हैं। इस धर्मानुसार मनुष्यों को पाप से क्षमा करने के लिए ईश्वर ने ईसा के रूप में अवतार लिया है। संपूर्ण मानवता का उद्धार किया।

'इस्लाम धर्म' का मूलमंत्र एक ईश्वरवाद है। अल्लाह के प्रति संपूर्ण आत्म-समर्पण और मोहम्मद सल्लम को अल्लाह का रसूल स्वीकारना मुसलमान के लिए अनिवार्य है। पाक कुरान जीवन की आचार संहिता और मोहम्मद सल्लम की हदीस (कथन) उसकी व्याख्या है। इस्लाम धर्म में अल्लाह को रबुल आलमीन और मोहम्मद सल्लम को रहमतुलल्लिआलमन अर्थात् अल्लाह पूरी दुनिया का रब है और मोहम्मद सल्लम पूरी दुनिया के लिए रहमत। मुसलमानों को अमन और भाईचारे की तालीम दी गई है, बराबरी का दर्जा दिया गया है। सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखने की हिदायत है। जक़ात यानी दान राशि को ग़रीबों, मजबूरों और ज़रूरतमंदों में बाँटने का हुक्म है। दान पाने के लिए मुसलमान होना लाज़मी नहीं है। सूद के लेन-देन और शराबनोशी को हराम क़रार दिया गया है। पड़ासियों के साथ अच्छा सलूक रखने, मातहत मुलाज़िमों के साथ नर्मी बरतने का फरमान है।

अन्य धर्मों पर दृष्टि डालें तो मिस्र का बहुदेव प्रधान धर्म- प्रचीन मिस्र में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी जो प्राकृतिक शक्तियों के दैवी रूप 'एटन' मूलत: सूर्यदेव को ही कहते हैं। 'गौ' का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान था। सुमेरिया के निवासी पृथ्वी को देवी, वायु को सबसे बड़ा देवता, पुजारियों का प्रभुत्त्व होने से यहाँ पुरोहित प्रधान धर्म का प्रचलन हुआ, मंदिरों में देवदासियाँ भी होती थीं। जापान का प्राचीन धर्म पशु पूजा, पूर्वजों की पूजा, इंद्रिय पूजा का धर्म था। देवताओं, आत्माओं पर विश्वास किया जाता था। 'शिंतो' का शाब्दिक अर्थ 'देवताओं का मार्ग' देवी शक्तियों का निवास नदियों, वृक्षों पर्वतों,- पशुओं विशेषत: सूर्य और चंद्रमा आदि किसी में भी हो सकता है। यहूदी धर्म न्याय, दया, विनम्रता की शिक्षा देता है। विश्वास रखता है कि मावन मात्र से प्रेम करता है और पश्चाताप करने पर क्षमा कर देता है। 'सिख धर्म' जिसके उपदेश गुरुमुखी लिपि में लिपिबद्ध हैं। इसने एकेश्वरवाद का प्रचार किया। ईश्वर एक है, अद्वितीय है सत् अकाल और सर्वव्यापी है पूज्यनीय है, प्रेममय है। उनका ज्ञान गुरु की कृपा से केवल नाम जपने से हो सकता है। खालसा पंत ने हिंदू धर्म गौ आदि की रक्षा के लिए सैनिक वेश में दीक्षा प्राप्त की। सिख धारण करना गौरव का प्रतीक है। केश जिसे सभी धारण करते आए, कड़ा नियम तथा चेतावनी देते रहने के लिए कृपाण आत्म-रक्षा के लिए है। सिखों के प्रमुख गुरुद्वारे हैं जहाँ गुरुग्रंथ साहब के पाठ होते हैं यहीं उनके प्रमुख पर्व मनाए जाते हैं। इस प्रकार संक्षेप में धर्मों की जानकारी ''तुम चंदन हम पानी'' के भेद को हटाते हैं। 'तुम' और 'मैं' में कोई द्वैत नहीं रह जाता। वही चंदन है वही पानी, वही घिसनेवाला, वही चढ़ानेवाला, वहीं माथे पर स्वीकार करनेवाला। चंदन लगाते-लगाते सभी धर्म 'हरि' हो गए हैं, 'ओम' हो गए हैं जो अमरत्त्व के पर्याय बन गए हैं।

प्रेममंजरी, डी॰-२०, चोमू हाऊस,जगन पथ, सी॰ स्कीम, जयपुर (राज॰)

कर्त्तव्य की राह

O राजेन्द्र 'राज'

काँटे भी होंगे राह में
ख़तरे भी होंगे राह में
अपने कर्त्तव्य न भूलना
राह पर इसके चलते रहो ...

धरा पर हमने जन्म लिया
अपने क़र्ज़ उतारने
चुकाकर जाना है हमें
फिर है जीवन सँवारने
न ढलना तुम कभी
सूरज की तरह उगते रहो ...

क़र्ज़ है उस देश का
जिसने हमें है पाला
क़र्ज़ है उस माँ का
मेरी उँगली हाथों में डाला
ज़िंदा हैं हम उसकी बदौलत
धरा, माता पूजते रहो ...

कर्म से पहले कभी
कामना नहीं करना
राह में हैं कठिनाइयाँ भी
जीवन में है कुछ कर दिखाना
पीछे न मुड़ना तुम कभी
अपने मक़सद में पलते रहो ...

संपर्क : ग्रा॰-पो॰-बलुआ कलियागंज, जिला- अररिया बिहार-८५४३३३

सर्वथा उत्कृष्ट, अभिनव एवं कमनीय कहानी

परमानंद दोषी

परमानंद दोषी लब्धप्रतिष्ठ जीवनी लेखक हैं, इन्होंने जंगे आज़ादी के महानायकों और अहमतरीन शख़्सियतों की मिसाली क़ुर्बानियों और प्रेरणादायी कारनामों को आनेवाली उन पीढ़ियों के लिए लिपिबद्ध कर महफ़ूज़ कर दिया है, जिनके दिल में थोड़ी-बहुत उत्सुकता होगी कि गाँधी, नेहरू, अबुलकलाम आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद और अंबेदकर आदि देश रत्नों ने देश और देशवासियों के लिए क्या कुछ किया था एवं बिहार विधान सभा की तरफ़ बढ़ते सात शहीद कौन-कौन थे। जीवनियों के अतिरिक्त दोषी ने कहानियों और लेखों से भी विशिष्ट ख्याति प्राप्त की है। - संपादक

निम्न मध्यम वर्गीय खाते-पीते साधारण मुस्लिम समाज की पारिवारिक कहानी है 'जाले में फँसी मकड़ी'। इसमें एक ऐसी घरेलू गृहिणी की कहानी है, जो जीवन में कामयाब होने के ढेर सारे रंगीन सपने देखती है। खुले हृदयवाली पढ़ी-लिखी तेज़-तर्रार ऐसी महिला के दिलो जिगर सामान्यत: वैसी महत्त्वकाक्षाओं के भरे होते हैं, ख़ासकर जिसके परिवार की अन्य बेटियाँ-बहनें कामयाब ज़िंदगी के ऊँचे ज़ीने पर पहुँची रहती हैं और जो थोड़ी जेहनवाली तेज़-तर्रार महिला हो। रिफ़अत नाम की यह महिला, खुले माहौल में जीवन के शुरुआती वर्ष गुज़ारने की वजह से क़ुदरती मनाज़िर जैसे हसीन चाँद-सितारों की रौनक़ और ख़ूबसूरती का लुत्फ़ उठाने और जायज़ा लेने की भी सलाहियत रखती है।

घर में वैभव-ऐश्वर्य की सारी सुविधाओं के होते हुए भी अपने शौहर की वफ़ादारी से वह वंचित रहती है और शौहर की यही बेवफ़ाई उसकी आँखों की किरकिरी बनी रहती है। शौहर के अपनी ही भाभी से नाजायज़ रिश्ते से पैदा हुई तनावपूर्ण स्थितियों को झेलने में वह इस क़दर ग़मज़दा रहती है कि लगता है कि वह अब टूटेगी कि तब टूटेगी। मगर उस कसक को दबा प्रकृतस्थ बने रहने के स्वांग में भी उसकी दक्षता उतनी ही अहम बनी रहती है।

इसी आलम में पास-पड़ोस की महिलाओं से संबंध बनाए रखने, निकट और दूर के रिश्तेदारों की जिज्ञासा से भरी पृच्छाओं का माक़ूल जवाब देना और सुषमा सरीखी प्यारी सहेली की चुहलबाजियों और छेड़छाड़ को झेलने में जैसी स्वाभाविकता और सहजता का वह परिचय देती है, जिससे लगता है कि उसका जीवन तालाब की भाँति निहायत शांत है, उसमें कोई तूफ़ान-झंझावात नहीं।

इसी मुख़्तसर-सी कथा-वस्तु को बड़े ही रोचक ओर कौतूहलबर्धक अंदाज़ में कहानीकार ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है। कथाक्रम के विकास में जो शिथिलता है, वह कोई दोष नहीं होकर कहानी में औतसुक्य बनाए रखनेवाला एक अच्छा-ख़ासा गुण है। शब्दों का चयन, मुहावरों का सटीक प्रयोग, नए-नए बिंब, भाषा की लुभावनी पुरकशिश छटा कहानी की इस दुर्लभ विशेषताओं की वजह से 'जाले में फँसी मकड़ी' पाठकों को शुरू से आख़िर तक बाँधे रखती है और कहानीकार की वर्णन-शैली के अनूठे कौशल से परिचित कराती है।

> परमानंद दोषी को डॉ॰ शाहिद जमील की अप्रकाशित कहानी 'अनाम कहानी' के रूप में निष्पक्ष और बेलाग समीक्षा हेतु उपलब्ध कराई गई थी।
>
> पाठकों से 'जाले में फँसी मकड़ी' और परमानंद दोषी की प्रस्तुत समीक्षा पर व्यक्तिगत, दो टूक-निष्पक्ष तथा अतिसंक्षिप्त प्रतिक्रिया प्रकाशनार्थ आमंत्रित है।
>
> '**समीक्षा**' स्तंभ अंतर्गत साहित्यकार किसी भी साहित्य विधा में मौलिक एवं अप्रकाशित एक कथा/नाटक आदि या पाँच ग़ज़ल / कविता आदि की कंपोज स्वच्छ दो प्रति फोटोग्राफ़-जीवनवृत सहित उपलब्ध करा सकते हैं।
>
> **O संपादक**

हिंदी कहानी ही नहीं, संसार भर की तमाम भाषाओं के कहानी-लेखन के शिल्प, गठन, रूप-स्वरूप में निरंतर प्रयोग और परिवर्तन होते रहे हैं, फलस्वरूप कहानी-विधा के मूल रूप में बहुत सारी तब्दीलियाँ आई हैं। हमारा हिंदी और उर्दू साहित्य भी इस प्रभाव से अछूता नहीं रहा है, मगर कहानी साहित्य की कुछ ऐसी मूलभूत विलक्षणता रही है, जिसके चलते उसका कहानीपन लेशमात्र भी नहीं बदला है। मोपाँसा, चेखव, ओ हेनरी, टाम्स हार्डी, गाल्सवर्दी, लू शुन जैसे सफल कथाकार विश्व के अदबी धरातल पर अपनी कहानियों की अमिट लकीरें खींच गए हैं, जो आजतक न धूमिल हुई हैं और न अनद्यतन (आउट ऑफ डेट) होकर नकारी जा सकी हैं।

जिस प्रकार हिंदी में प्रेमचंद, यशपाल, अश्क, अमृतलाल नागर, रेणु, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर जैसे कहानीकारों की कथाओं की शाश्वता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता, उर्दू के मंटो, कृष्णचन्दर, इस्मत चुग़ताई, रामलाल, राजेन्द्र सिंह बेदी जैसे कहानीकारों की कहानियाँ आए दिन अपनी सार्थकता की मौजूदगी का अहसास हमें कराती हैं- 'जाले में फँसी मकड़ी' कहानी भी वैसी ही कभी पुरानी नहीं पड़नेवाली उन्हीं कालजयी क्लासिक कहानियों की शृंखला की एक अहम कड़ी प्रतीत होती है। पता नहीं, इस कहानी का अनाम कहानीकार कौन है, मगर यह कहानी जिसकी भी है, उसे इसे गढ़ने में पूरी कामयाबी हासिल हुई है। कहानी साहित्य को यदि जीवित रहना है और अपूर्णता-अनगढ़ापन, कुरूपता, हल्कापन और फूहड़ता जैसे दोष से ग्रसित हो सरेआम होनेवाली बदनामी से बचना है, तो 'जाले में फँसी मकड़ी' जैसी कहानी के कहानीकार जैसे सधे हाथों से इसका सृजन करवाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी होगा।

'जाले में फँसी मकड़ी' जैसी सर्वथा उत्कृष्ट, अभिनव एवं कमनीय कहानी के अनाम स्रष्टा को मेरी शतश: बधाइयाँ, इस कामना और शुभकामना के साथ कि 'वह उसने कहा था' नामक एकमात्र कहानी की सफल रचना करके हाथ खींच लेनेवाले अमर कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की तरह कहानी लेखन की तरफ़ से हाथ खींच न लें, बल्कि इस दिशा में अपने सद्लेखन के दौर को बरक़रार रखें।

संपर्क : विशेष कार्य पदाधिकारी, बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक, बुद्ध मार्ग, पटना- ८०००१

संवेदना के स्तर पर झकझोरती मयुरा की रचनाएँ

समीक्षक : उदय कुमार 'राज'

'विचार दृष्टि' त्रैमासिकी पत्रिका के संपादक द्वारा संपादित 'मयुरा' पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ जिसमें तीन लेखकों - मनु सिंह, युगल किशोर प्रसाद एवं राजभवन सिंह की कविताएँ, निबंध, कहानियाँ एवं ग़ज़ल इत्यादि संकलित हैं। मयूर, मयूरी तो सुना था परंतु 'मयुरा' एक नया शब्द मेरे सम्मुख आया जिसे पढ़कर भ्रम में पड़ना कोई नयी बात नही है। मयुरा वास्तव में अर्थहीन शब्द है परंतु भूमिका तथा संपादकीय पढ़ने से यह भ्रम समाप्त हो गया कारण कि मनु सिंह का 'म' युगल किशोर सिंह का 'यु' और राज भवन सिंह का 'रा' मिलाकर 'मयुरा' पुस्तक बनी।

वैसे तो भूमिका एवं संपादकीय में पुस्तक की समस्त रचनाओं पर विहंगम दृष्टिपात किया गया है मगर मुझे जो प्रभावित किया वह है इन तीनों रचनाकारों का अवकाशोपरांत साहित्य एवं काव्य विधा से अटूट लगाव तथा सट्ठे पे पट्ठा वाली बात को चरितार्थ करना कथाकार तथा कलाकार की कोई उम्र सीमा निर्धारित नही होती। आम जब पूरा पक जाता है तो और भी मीठा हो जाता है। इन तीनो रचनाकारों मे एक अजीब सी ऊर्जा देखने को मिली जो मेरे लिए एक नयी अनुभूति है। कहावत है कि रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। इन रचनाकारों के हृदय में काव्य का अंकुरण संभवत: उनके यौवन काल में हुआ होगा जो उम्र के इस पड़ाव तक आते-आते एक विशाल वृक्ष में पल्लवित होकर हमारे सामने खड़ा दिख रहा है और हम उसकी छाया पाकर आह्लादित हो रहे हैं। उम्र और अनुभव की चासनी में सनी मयुरा की सारी रचनाएँ हमें कुछ न कुछ संदेश तो देती ही हैं साथ ही साथ हमें कुछ सोचने को बाध्य करती हैं। मै इन रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ कि जब लोग सेवानिवृत होकर-निढल्ले की जिंदगी जीते हैं वैसे में ये लोग नयी उर्जा एवं संकल्प लेकर हिंदी साहित्य की सेवा में अपना बहुमूल्य योगदान कर रहे हैं एवं हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

स्थापित एवं प्रतिष्ठित लेखकों/रचनाकारों की रचनाएँ प्राय: हमें प्रभावित करती हैं परंतु अगर हम गंभीरता से इनको पढ़ें तो शब्द संरचना के मापदंड पर ये भी अपना स्थान बनाने में सक्षम हैं। कोई भी रचनाकार शरीर से भले ही बूढ़ा दिखे मगर विचार, कल्पना, भावना एवं अभिव्यक्ति की धरातल पर वह चिर युवा रहता है और उसकी रचनाधर्मिता उसे सदाबहार बनाए रखती हैं। रचनाकार मौसम की तरह अपना मिज़ाज नहीं बदलता, बल्कि समाज एवं देश की घटनाओं को आत्मसात करता हुआ अपने हृदय के उद्‌गार को कभी वेदना के स्वर में, कभी हास-परिहास के माध्यम से, तो कभी प्रेम के द्वारा प्रकट करता है। मनु सिंह अपनी 'सैलानियों से प्रश्न पूछता भिखारी' शीर्षक कविता में जब यह भिखारी से कहलवाते हैं - और फर्क उसमें मुझमें इतना है सिर्फ/कि वह छोड़ा है घर अपना/और हमसे छूटी है घर अपना/ दिल तार-तार हो जाता है इस सच्चाई

> समीक्ष्य पुस्तक : 'मयुरा'
> समीक्षक : उदय कुमार 'राज'
> लेखक : मनुसिंह, युगल किशोर प्रसाद एवं राजभवन सिंह
> प्रकाशन : सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-९२
> मूल्य : १०० रुपए
> पृष्ठ संख्या : ९६

को अनुभव करके। उपर्युक्त शब्दों में जो दर्द उभर कर सामने आता है, संवेदना के स्तर पर झकझोर देता है। यहाँ पर कवि अपनी कलम तोड़ देता है। 'नवही' नामक निबंध में लेखक ने एक अलग ढंग से अपनी बात कही है। युगल किशोर प्रसाद ने 'मंथन' निबंध लिखकर यह प्रतिपादित कर दिया कि पौराणिक कथाओं एवं विषयों पर उनकी पकड़ सराहने योग्य है। 'पगडंडियाँ' जब पढ़ रहा था तो मुझे लगा कि में स्वयं लेखक द्वारा बनाए/रचित पंगडंडियों पर स्वत: चला जा रहा हूँ। अपने भाव में बहा ले जाने की कला युगलजी में भरपूर है। 'निर्लजता की हद' पढ़कर तो समाज में बाहुबली द्वारा निरीह नारी की दुर्दशा का हम मार्मिक चित्रण पाते हैं।

राज भवन सिंह की कुछ रचनाओं पर अपनी राय देना चाँहूगा। जैसा कि जीवन-वृत से पता चला कि पिछले 25 वर्षो से वह साहित्य साधना में रत हैं और महाकाव्य तथा खण्ड काव्यों की रचना भी की है। इसमें कोई शक नहीं कि सिंह साहब एक प्रबुद्ध रचनाकार हैं मयुरा में अपनी कविताओं के माध्यम से समाज की कुछ कुरीतियों को उन्होंने प्रस्तुत किया है और हमारे सामने प्रश्न चिन्ह खीचा है। ग़ज़ल खंड में तो इन्होंने कमाल ही कर डाला है। इस विधा में तो

उन्हें महारत हासिल है। जैसा कि मैंने उपर कहा है कि रचनाकार खासकर गीत, ग़ज़ल लिखनेवाला दिल से जवान बना रहता है चाहे वह शरीर से बूढ़ा ही क्यों न हो। एक बानगी देखिए : पहले से बढ़कर याद आ रहे हैं/चाहा था जिनको हमने भुलाना/उनकी मुहब्बत कैसे मिटा दूँ/जीने का कोई हो तो बहाना। हम क्या सुनाएं गीत - ग़ज़ल कह तो ये 'बेताब'। महफिल ये सूनी-सूनी है जब तू न पास है।

पृष्ठ 84 पर जो ग़ज़ल है यदि उसे नज़्म का नाम दिया जाता तो अच्छा था।

हिंदी में तार सप्तक एवं साठ्‌ठोत्तरी कविता के बाद यह प्रयास तीन कवियों ने मिलकर किया है जो सचमुच सराहने योग्य है। आशा है इस तरह के प्रयास के लिए नए आयाम खुलेंगे और जो रचनाकार अंधकार में विलीन हैं तथा जिन्हें कोई मंच नहीं मिला है अपनी बात एवं उद्‌गार को व्यक्त करने के लिए उन्हें मयुरा की तर्ज पर अपनी रचना को हमारे सामने रखने का अवसर मिलेगा और संभवत: इस तरह के प्रयास से हिंदी को और भी सिपाही और सेवक प्राप्त हो जायेंगे।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि जिस पत्रिका एवं पुस्तक के संपादक श्री सिद्धेश्वर जी हों तो इसमें लेकिन के लिए कोई स्थान नहीं होता और स्तरहीन रचनाओं का संपादन उनके कर कमलों द्वारा असंभव है। जिस तरह नाई बढ़े हुए तथा अनावश्यक बिखरे बालों को काट-छाँट कर आदमी को सवार देता है और वह निखर उठता है ठीक उसी तरह सिद्धहस्त सिद्धेश्वर जी की लेखनी से संपादित होकर जो रचनाएँ पाठकों तक पहुँचेगी उसमें बहुत कुछ अलग हटकर होगा। ठीक वैसा ही मयुरा में हुआ है। संपादक सहित इसके लेखकों का हमारी हार्दिक बधाई। हमें विश्वास है कि साहित्य संसार में इस पुस्तक का तहेदिल से स्वागत किया जाएगा।

संपर्क : एस-107, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली

उपेक्षित पात्र को नायकत्व प्रदान करता खण्डकाव्य

भगवती प्रसाद द्विवेदी

आज लघु कथा के इस दौर में, जबकि ज़्यादातर छोटी-छोटी स्फुट कविताएँ ही रची जा रही हैं और कई तरह के बेतुके व अराजक प्रयोग किए जा रहे हैं, प्रबंधकाव्य और खण्डकाव्य का सृजन वाक़ई मायने रखता है। खण्डकाव्य 'कालजयी बर्बरीक' का प्रकाशन एक ऐसी सुखद घटना है, जिसमें कवि ने सर्वथा उपेक्षित, अल्पज्ञात पात्र को नायकत्त्व प्रदान कर काव्य के उच्च आदर्शों की पुनर्स्थापना की है। हिंदी के साथ ही बिहार की कई लोकभाषाओं में समान अधिकार, सामर्थ्य के साथ लंबे अरसे से साधनारत कवि विशुद्धानंद की यह कालजयी कृति कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है और ख़ास चर्चा एवं मूल्यांकन की माँग करता है।

बर्बरीक महाभारत का यों तो एक पराक्रमी योद्धा था, पर उसके जीवनचरित पर विस्तार से रोशनी डालने की कभी ज़रूरत नहीं समझी गई। बर्बराकार घुंघराले बालवाले बर्बरीक के पितामह थे भीम, जिन्हें एक दफ़ा मल्लयुद्ध में अनजाने में बर्बरीक के हाथों मुँह की खानी पड़ी थी। भीम के पुत्र घटोत्कच बर्बरीक के जनक थे और माँ थीं मुर दैत्य की पुत्री मौर्वी या कामकण्टका। वीरांगना मौर्वी ने एक बार कृष्ण को भी युद्ध के लिए ललकारा था। पिता घटोत्कच की पत्नी हिडिंबा भी तो राक्षसी ही थी। मगर बर्बरीक ने नवदुर्गा की उपासना से अपराजेय बल अर्जित कर लिया था। मगध देश के ब्राह्मण विजय के सत्संग का ही प्रभाव था कि उसने विद्या, बुद्धि और ज्ञान के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया था। बर्बरीक धर्मात्मा भी था और उसमें विनयशीलता व करुणा भी कूट-कूटकर भरी हुई थी। जिन दिनों द्रौपदी के साथ पांडव वनवासी थे, वे महीसागर-संगम क्षेत्र में जा पहुँचे थे। वहाँ प्यासे भीम ने जब एक कुंड में पानी पीना चाहा तो वहाँ मौजूद बर्बरीक ने उन्हें ऐसा करने से रोका और जब कुपित भीम उससे लड़ने पर आमादा हो गए तो उसने न केवल उन्हें परास्त कर दिया, बल्कि उठाकर समुद्र में भी फेंकना चाहा था। तभी भगवान शिव की आकाशवाणी गूँजी थी कि वह जिनका सफ़ाया करने जा रहा है, वह उसके पितामह भीम हैं। फिर तो उसने दादाजी से क्षमा-याचना की थी। वनवास की अवधि बीत जाने के बावजूद जब दुर्योधन ने पांडवों को राज्य वापस नहीं लौटाया तो कुरुक्षेत्र में महाभारत-युद्ध हुआ था।आरंभ में ही जब अर्जुन ने महज एक दिन में पूरी कौरव-सेना का सफ़ाया करने की बात की थी तो बर्बरीक का अभिमान जाग उठा था और उसने सिर्फ़ एक मुहूर्त में ही समूची कौरव-सेना को मटियामेट करने का ऐलान किया था मगर कृष्ण उसकी गर्वोक्ति पर चुप नहीं रह सका था और उन्होंने बर्बरीक का छलपूर्वक सिर क़लम करने का अक्षम्य अपराध किया था। यह है कालजयी बर्बरीक के जीवनचरित का सार।

'कालजयी बर्बरीक' खण्डकाव्य के मानदंड और छंदानुशासन पर हर दृटि से खरा उतरता है। यह खण्डकाव्य सात सर्गों में विभक्त और प्रबंध के नियमानुसार इसका फैलाव कई छंदों से होकर मुक्तछंद तक है। पहले सर्ग में वंदना, प्रस्तावना दूसरे सर्ग में कुरुक्षेत्र-प्रवेश, तीसरे सर्ग में पुरुषार्थ की परीक्षा, चौथे सर्ग में निरशाकृत्य व महादान का संकल्प, पांचवें सर्ग में कृष्ण की प्रार्थना, छिन्नमस्तक, छठे सर्ग में युद्ध-द्रष्टा, निर्णायक तथा सातवेंसर्ग में कालजयी, परिस्थिति, प्रदूषण, आशंका, विडंबना, बर्बरीक उवाच प्रसंगों को शामिल किया गया है। कवि ने शूरवीर बर्बरीक की संघर्षशीलता, पराक्रम, बलिदान की लोमहर्षक कथा को इतनी सहजता, भावप्रणता और प्रवाहमानता के साथ अभिव्यक्त किया है कि पाठक अपनेआप कथा के साथ बहता चला जाता है और कहीं वह रोमांचित हो उठता है तो कहीं उद्वेलित। एकलव्य और कर्ण की तरह ही बर्बरीक जैसे पराक्रमी और सर्वगुणसंपन्न योद्धा असमय ही काल के गाल में समा जाता है और पढ़नेवाला मर्माहत हुए बग़ैर नहीं रहता।

कालजयी बर्बरीक (खण्डकाव्य)
कवि : विशुद्धानंद
प्रकाशक : आनंदाश्रम प्रकाशन, पटना
मूल्य : १८० रु०,
प्रथम संस्करण : २००४
समीक्षक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

'कालजयी बर्बरीक' के रचयिता बर्बरीक की कथा को आज के समय-संदर्भ से जोड़ने में काफ़ी हद तक कामयाब है और दलित-विमर्श की दिशा में भी सोच-विचार के लिए विवश करता है। कल्पनाशीलता और चिंतन भी क़दम-क़दम पर प्रवाहित होता है। भाषा का प्रवाह और छंद की छटा देखते ही बनती है। कहीं-कहीं तो उपमेय-उपमानों की झड़ी-सी लग गई है। विषयानुरूप कहीं-कहीं संस्कृत के शब्दों का आधिक्य हो गया है। मगर सहज ढंग से बड़ी बात कहने की कला में कवि को महारत हासिल है। यही वजह है कि अनास्था, बाजारवाद, नैतिक मूल्यों की क्षरणशीलता, आतंकवाद की विभीषिका के इस दौर में 'कालजयी बर्बरीक' का आदर्श चरित्र, मानवीय संवेदना जगाने और जीवनमूल्यों से जुड़ने-जोड़ने की दिशा में सार्थक व सकारात्मक पहल करता है। विश्वास है, इस कृति का स्वागत पूरी हार्दिकता के साथ होगा।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित :
मे. सुपर सिमेंट ट्रेड़िग
लफार्ज सीमेंट के ए.सी.सी., के.सी. थोक एवं खुदरा विक्रेता
संपर्क करें:-
सिद्धेश्वर कॉम्प्लेक्स
मीठापुर, खगौल रोड, पटना-८००००१
संस्थापक : स्व0 सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan & Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285, 54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDC Tarapur,

Dahisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 28974777, Fax: 28972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

संसद को शर्मसार किया बिकाऊ जनप्रतिनिधियों ने

सिद्धेश्वर

पिछले दिनों एक निजी टेलीवीजन ने तहलका से प्रसिद्धि पाए पत्रकार अनिरूद्ध बहल के कोबरा पोस्ट डॉट कॉम के एक दल के द्वारा चलाए गए खुफिया 'ओपरेशन दुर्योधन' के दौरान भाजपा, बसपा, काँग्रेस तथा राजद के कुल ग्यारह सांसदों को संसद में जनहित के प्रश्न पूछने के लिए 15 हजार रुपए से एक लाख 10 हजार रुपए तक घूस लेते हुए रंगे हाथों कैमरे के सामने पकड़ा गया। खुफिया पत्रकारों के इस दल ने संसद में 56 से अधिक वीडियो टेप और 70 से अधिक ऑडियो टेप बनाए तथा 900 से अधिक फोन कॉल रिकार्ड कर संसद में सवाल पूछने के लिए पैसे बटोरने के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया। जो सांसद कैमरे के सामने रिश्वत लेते दिखाए गए हैं उनके पार्टी सहित नाम और घूस के पैसे की तस्वीर प्रस्तुत है। इस प्रकार इन बिकाऊ जनप्रतिनिधियों ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सर्वोच्च स्तंभ संसद को शर्मसार किया जिससे आम जनता भी हतप्रभ रह गई। जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल में भी महाराष्ट्र से लोकसभा सदस्य एच०जी० मुद्गल को इसी आरोप के चलते सदस्यता गवानी पड़ी थी।

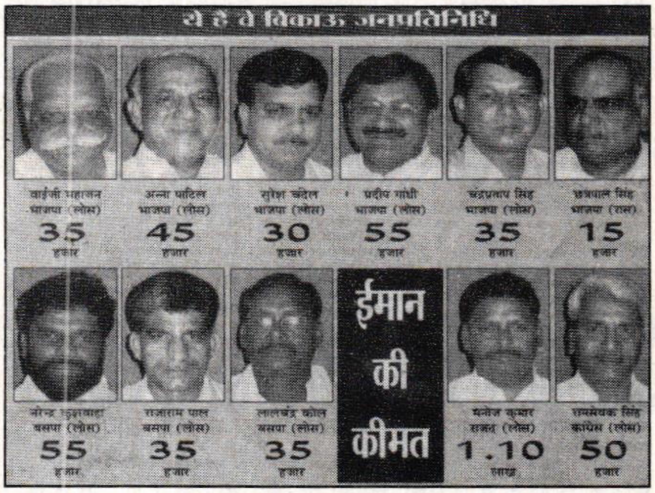

बहरहाल 'ऑपरेशन दुर्योधन' से सबसे ज्यादा सकते में भाजपा है क्योंकि अपनी रजत जयंती की तैयारी कर रही भाजपा के छह सांसद इस प्रकरण में लिप्त पाए गए हैं। इस ऑपरेशन की सीधी मार उस भाजपा पर है, जो अपने को अन्य राजनीतिक दलों से अलग बताती रही है और शुचिता का दम भरती रही है। सभी ग्यारह सांसदों का आचरण न केवल संसदीय पद्धति पर लांछन है, बल्कि यह राजनीतिक कहे जानेवाले वर्ग को शर्मसार कहे जाने के लिए काफी है।

'ऑपरेशन दुर्योधन' के कलंक से संसद अभी उबरी भी नहीं थी कि एक निजी चैनल स्टार न्यूज के 'ऑपरेशन चक्रव्यूह' में चैनल ने पिछले दिनों भाजपा के तीन, खुद को पाक-साफ करार देनेवाली सपा के एक तथा काँग्रेस एवं बसपा के एक-एक सांसद के अतिरिक्त संत से सांसद बने राज्यसभा के साक्षी महाराज सहित कुल सात सांसदों को सांसद निधि जारी करने की एवज में सौदा तय करते हुए दिखाया। इन सात सासदों सौदा तय करते हुए दिखाया। इन सात सासदों में भाजपा से पूर्व केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, चन्द्र प्रताप सिंह, रामस्वरूप कोली, बसपा के राज्यसभा सदस्य ईशाम सिंह, सपा के पारसनाथ यादव तथा काँग्रेस से गोवा के पूर्व मुख्य मंत्री एवं दक्षिण गोवा के वर्तमान सांसद चर्चिल अलेमाओ हैं।

हालांकि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि राजनीतिक दलों को इसकी जानकारी नहीं थी कि उनके कुछ सांसद संसद में सवाल पूछने के बदले पैसे लेते हैं, लेकिन किसी भी दल ने अपने ऐसे सांसदों के खिलाफ कोई कार्रवाई करना आवश्यक नहीं समझा। संभव है यदि समय रहते उनपर कोई सही कार्रवाई की जाती तो भारतीय राजनीति, संसद और लोकतंत्र को शर्मसार नहीं होना पड़ता।

संसद भारतीय लोकतंत्र का मंदिर है जहाँ देश का भविष्य तय होता है। अगर वहाँ भी रिश्वत, लालच और बिकाऊपन की गंदगी फैली है तो यह देश किस करवट बैठेगा, इसकी कल्पना मात्र से ही झुरझुरी, होने लगती है, सिर शर्म से झुक जाता है। लोकतंत्र का मंदिर कहलानेवाला सांसद खंडित और दागी मूतियों से भरा नजर आने लगा है। मंदिर में खंडित और दागी मूर्तियों की अराधना नहीं होती, उन्हें बदल दिया जाता है। इस दृष्टि से यदि विचार करें तो संसद रूपी मंदिर की पवित्रता बनाए रखने के लिए दागदार हो चुकी सांसदरूपी इन मूर्तियों को बाहर करने की आवश्यकता है।

इन बिकाऊ सांसदों के घटिया आचरण से सार्वजनिक जीवन को पतन की पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया है। चिंता की बात तो यह है कि इस 'दुर्योधन चक्रव्यूह' में फँसनेवाले सांसद तो छोटी-छोटी मछलियाँ हैं बड़े-बड़े मगरमच्छों पर तो हाथ पड़ना अभी बाकी है। न जाने कितने हजारी मल मारे गए करोड़ी मल मूछों पर ताव दिए घूम रहे हों। बिक्री के लिऐ तैयार बैठे इन सांसदों ने यह सिद्ध कर दिया है कि नैतिकता के धरातल पर जरा-सी फिसलन उन्हें पतित करने के लिए पर्याप्त थी। इन्होंने संसद रूपी लोकतंत्र के मंदिर को तो कलंकित किया ही है, आम आदमी के भरोसे को भी तोड़ा है। लोकतंत्र के मंदिर की छबि दूध से धुले जैसी स्थापित की जाए और यह तभी हो सकता है जब राजनीतिक दलों के सभी सांसद दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मंदिर में फैली गंदगी को साफ करने का संकल्प लें। किंतु मौजूदा नेताओं, सांसदों से क्या ऐसी उम्मीद की जा सकती है? कदापि नहीं। इसलिए देश को जरूरत है आज ऐसे नेता की जो भ्रष्टाचार, रिश्वत, लालच और बिकाऊपन में डूबे सार्वजनिक जीवन को एक नई दिशा दे सके। चूंकि राजनीति समाज को दिशा देनेवाली व्यवस्था है और वह जीवन के हर स्तर को प्रभावित करती है इसलिए जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक स्तर पर फैला भ्रष्टाचार हर हाल में दूर हो।

यदि भविष्य में ऐसे कुकर्मों और दुष्परिणामों का सामना करने से बचना है तो

सभी राजनीतिक पार्टियों और उसके नेताओं को ईमानदारी से यह कोशिश करनी होगी कि राजनीति में ईमानदार, निष्ठावान, साफ और स्वच्छ छविवाले लोग ही आगे आएँ। इसके लिए उन्हें अनिवार्य रूप से आम सहमति बनानी होगी तभी राजनीति की गंदगी दूर होगी और राजनीति के जरिए समाज और राष्ट्र की भलाई हो सकेगी।

जहाँ तक रिश्वत लेने के आरोप से धिरे इन सांसदों को सजा देने का सवाल है चाय की दुकानों से लेकर पान की गुमटियों तक, राजनीति पर बहस करनेवाले यह बात स्वीकारते हैं कि राजनीतिज्ञों को सजा दिलाना लोहे के चने चबाने की तरह है। वैसे, पैसे लेकर सवाल पूछने का यह पूरा मामला प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट 1988 के तहत पब्लिक सर्वेंट के घूस लेने की तरह है। इस एक्ट की धारा-7 के अंतर्गत दोष साबित होने पर सांसदों को छह महीने से 5 साल तक की सजा हो सकती है। दूसरी ओर संसद की कमिटी यदि इस नतीजे पर पहुँचती है कि सदन की अवमानना हुई है, तो उस स्थिति में वह आरोपी सांसदों की सदस्यता भी समाप्त कर सकती है।

इस बीच तहलका प्रकरण से लेकर अब सांसदों द्वारा रिश्वत लेने के पश्चात् सार्वजनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार ने कारपोरेट जगत को भी सकते में डाल रखा है और वह भी अब राजनेताओं की आचार संहिता के बारे में सोचने लगा है। यहाँ तक कि पहली बार सोच के द्वारा राजनीतिक जवाबदेही को लेकर कानून बनाने के लिए सरकार पर दबाव बनाए जाने की बात की जा रही है। यह सच भी है कि लोक जीवन में नैतिकता, अच्छे आचार व व्यवहार जरूरी है और इससे देश के आर्थिक विकास पर भी सीधे असर पड़ता है। सच तो यह है कि भ्रष्टाचार न केवल देश के विकास में ही बाधक है, बल्कि वह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमारे देश की छबि को भी धुमिल करता है जो इस देश के लिए अच्छी बात नहीं। इसलिए उम्मीद की जाती है कि राजनीतिक जवाबदेही कानून बनाने से उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार व अनैतिक आचरण पर अंकुश लगेगा।

सामाजिक आंदोलन के लिए सुश्री उमा भारती की राम रोटी यात्रा

विचार कार्यालय, सतना

भाजपा से निष्कासित म०प्र० विधान सभा सदस्य तथा पार्टी की तेज तर्रार नेता सुश्री उमा भारती 28 नवंबर को मध्य प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन के दौरान शिवराज सिंह चौहान को मुख्य मंत्री बनाए जाने के तत्काल बाद सामाजिक आंदोलन के लिए आयोध्या तक की पैदल **राम रोटी यात्रा** पर निकल पड़ी हैं जिन्हें मार्ग में अपार जनसमर्थन मिल रहा है। सुश्री उमा की सभा में जुट रही भारी भीड भाजपा महासचिव अरुण जेटली के उस बयान का जवाब भी है जिसमें उन्होंने कहा था कि सुश्री उमा भारती के साथ मुट्ठी भर लोग भी नहीं रहेंगे। सुश्री भारती 28 दिसंबर को महोबा के रास्ते म०प्र० से उत्तर प्रदेश की सीमा में प्रवेश कर गईं हैं। इसके बाद उनकी यह पदयात्रा बांदा, फतेहपुर, रायबरेली और फैजाबाद होते हुए 14 जनवरी 2006 को अयोध्या पहुँचेगी।

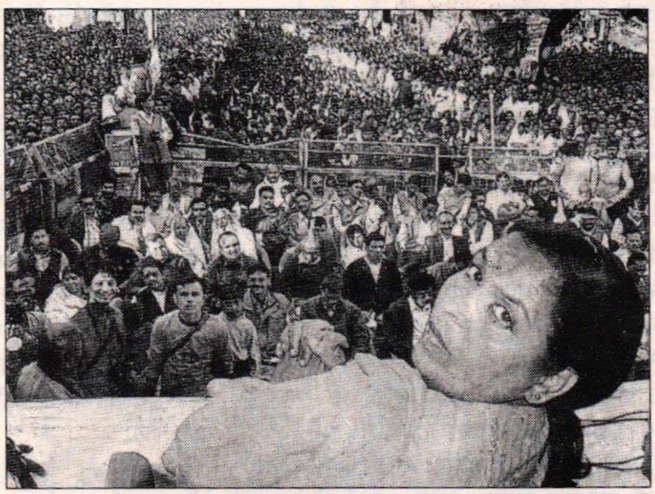

सुश्री उमा के लिए जुटती भीड़ को देख अब कई नेता उनके साथ नए राजनीतिक समीकरणों के लिए सक्रिय हो गए हैं। ऐसा लगता है कि उमा भाजपा और उसके दिग्गजों के लिए नेताओं की पेशानियों पे पर बल पड़ते नजर आ रहे हैं। खैर, जो हो, इतना जरूर है कि इस ठिठुरन भरी ठंढ में उमा भारती ने मध्य प्रदेश का राजनीतिक पारा अवश्य बढ़ा दिया है।

– प्रतिनिधि डॉ० रामसिया सिंह पटेल, सतना से।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY & GERMAN HOMOEO STORES

Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)
Offers a wide range of mother Tinchers, Billutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad **D.M.S.(Patna)**
Dr. Arum Kumar **D.H.M.S. (Patna)**

Spcialist in chronic Diseases

बिहार की जनता के आहत स्वाभिमान का प्रश्न

○ डॉ॰ कलानाथ मिश्र

जनतंत्र को परिभाषित करते हुए सतत् यह जुमला पढ़ा जाता रहा है कि जनता का, जनता के लिए और जनता के द्वारा बनी सरकार। ठीक ही है, जो सरकार जनता के द्वारा चुनी जाएगी वह जनता के लिए भी होगी और जनता की भी। परंतु जनता के द्वारा सरकार चुनने की प्रक्रिया के लिए विगत दो दशकों से जो चुनावी महायज्ञ बिहार में हुए, उसी में सरकार वोट से कम और 'लूट' से अधिक चुनी गई और इसीलिए बिहार की आम जनता उन सरकारों के साथ अपनी सहभागिता भी सुनिश्चित नहीं कर सकी। विगत सरकार के शीर्ष नेता भी यह समझ बैठे थे कि सरकार बनाने की प्रक्रिया वोट से अधिक 'लूट' के माध्यम से सार्थक एवं कारगर होती है।

हज़ार जातियों में विभक्त बिहार की कमज़ोर जनता अपनी आँखों के सामने निरीह भाव से अपने जनतांत्रिक अधिकारों को लुटती हुई और अपहृत होती हुई देखती रहती थी और उसका स्वाभिमान आहत होता रहा। ऐसी परिस्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि नेता जनता की इच्छाओं, आकांक्षाओं और उसकी विकास की अभिलाषाओं को उपेक्षित और तिरस्कृत करते रहे। खुलेआम उन्होंने यह कहना प्रारंभ कर दिया कि बिहार के चुनाव में विकास कोई मुद्दा ही नहीं है। बिहार की जनता इन बातों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल तो देती थी पर उसका मन इन अभियोगों से आहत होती रही। वह जानती थी कि जो दल विकास को मुद्दा मानने से भी इनकार करता हो उसकी सरकार से विकास की आशा रखना ही बेमानी है। पर सुननेवाला कौन था? सत्तासीन नेताओं की दृष्टि में आम जनता की उपेक्षा ऐसे लोगों की इच्छाओं का अनुसरण करना अधिक आवश्यक था जो चुनाव के नाम पर उन नेताओं के लिए अपने बाहुबल के आतंक से जनता का मत लूट लेते थे। बिल्कुल उसी तरह जैसे किसी भूखे इंसान के मुँह से वे उसका नेवाला छीन लेते थे। धीरे-धीरे उन मतलूटेरों, वोट के ठेकेदारों ने अपनी शक्ति और चुनाव के लिए अपरिहार्यता को पहचाना और अपनी उस शक्ति का प्रयोग ख़ुद के लिए करने लगे। परिणाम अप्रत्याशित नहीं था। उन बाहुबलियों, मतलूटेरों को संवैधानिक कवच लग गया। अब नेता के साथ-साथ जनता का क़ानून भी उन दबंगों का अनुसरण करने को विवश दिखने लगी। देखेते ही देखते हत्या, लूट, अपहरण, बलात्कार जैसी जघन्य अपराधों का केंद्र बन गया। क़ानून और पुलिसिया तंत्र उन बाहुबली नेताओं और उनके सहयोगियों की इच्छाओं का दास बन गया। पूरे देश में बिहार की जनता का मखौल उड़ाया जाने लगा। अन्य प्रांतों के लोग बिहार की जनता को इस लाचारी और विवशता को उसकी इच्छा और नपुंसकता मान बैठे।

किंतु चुनावी प्रक्रिया को अंजाम देनेवाला तंत्र अर्थात् चुनाव आयोग भीतर ही भीतर बिहार के चुनाव की इस ख़ामी को महसूस कर रहा था। निश्पक्ष चुनाव संपन्न कराने की अपनी इस ज़िम्मेदारी तथा इस प्रक्रिया में बाधक हो रहे तत्त्वों की ओर ध्यान जा रहा था। वे इस बात को भली-भाँति जान रहे थे कि जब तक वोट के तथाकथित बाहुबली ठेकेदारों और मतलूटेरों पर क़ाबू नहीं पा लिया जाता, बिहार में चुनाव की निश्पक्षता बहाल नहीं की जा सकती है। आयोग ने मत लूटेरों पर क़ाबू पाने के लिए केंद्र से भारी संख्या में अर्ध सैनिक बलों को मँगाना शुरू कर दिया। किंतु बिहार की निरंकुश शासन व्यवस्था और भयाक्रांत पदाधिकारियों और कर्मचारियों के असहयोगात्मक रवैयों के कारण उन केंद्रीय बलों का वे सही उपयोग नहीं कर पा रहे थे केंद्रीय बलों को मतकेंद्रों तक पहुँचाने में आयोग आज के पूर्व असफल रहा था। बाहुबलियों की दासता में बिहार के पदाधिकारियों का ज़मीर या तो मर गया था या सरकार का उनपर इतना दबाव रहता था कि वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन दिखते थे। बाहुबली नेता की इच्छा नहीं थी कि केंद्रीय बल मतकेंद्रों पर जाकर मत को अपहरण मुक्त करा दें और जनता उनसे बेक़ाबू हो स्वतंत्र, निर्भीक होकर स्वेच्छा से अपने मताधिकारों का प्रयोग करें।

इस बार परिस्थिति बदल गई। चुनाव आयोग ने इतने दिनों से जो बिहार में निश्पक्ष चुनाव की तैयारी कर रखी थी उसको मुर्तरूप देने के लिए श्री के॰जे॰ राव जैसे अनुभवी, निश्पक्ष और कृतसंकल्प साठ वर्ष का नौजवान सलाहकार मिल गया। पिछले चुनाव में श्री राव ने आयोग को आंशिक सफ़लता तो दिया ही साथ ही अपनी सीमाओं और कठिनाइयों को भी सूक्ष्मता से पहचानने और उसे दूर करने के उपायों पर विचार किया। अनपेक्षित रूप से शीघ्र ही बिहार को पुनः चुनावी महासमर का सामना करना पड़ गया और श्री राव चुनाव के महानायक बन गए। आयोग के संवैधानिक अधिकारों और इस महानायक श्री राव के दबिश ने बिहार के पदाधिकारियों को अपने कर्तव्यों का एहसास कराया। आयोग के अभेद्य सुरक्षा कवच के साए में बिहार की जनता बिल्कुल निर्भीक भाव से अपने मताधिकार का प्रयोग कर रही है। जनता की आँखें पथरा-सी गईं, उसकी विकास की आकांक्षा तरल हो चली। इस बार उसकी आँखों में विकास का सपना झलक रहा था।

बिहार में निश्पक्ष चुनाव कराना केवल निश्पक्ष जनतांत्रिक सरकार चुनने का प्रश्न नहीं था। यह बिहार को भय मुक्त माहौल प्रदान करने का प्रश्न था, मर्माहत बिहार की जनता के घावों पर मरहम लगाने का प्रश्न था, बिहार को विकास के रास्ते पर ला खड़ा करने का प्रश्न था और सबसे अधिक यह बिहार की जनता के आहत मान-स्वाभिमान का था। श्री के॰जे॰ राव ने बिहार में निश्पक्ष चुनाव कराकर मात्र चुनाव आयोग के दक्ष सलाहकार के कर्तव्यों का ही पालन नहीं किया, उन्होंने बिहार की जनता का खोया हुआ स्वाभिमान उसे वापस दिला दिया है। बिहार की जनता इस उपकार के लिए चुनाव आयोग और श्री राव के प्रति आभार प्रकट करती है।

संपर्क : 'अभ्युदय', ई॰ ११२, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१

संत आचार्य श्री तुलसी

O रतनलाल कोठारी

आचार्यश्री तुलसी के बहुआयामी व्यक्तित्त्व के कारण समय-समय पर उन्हें अनेक उपाधियों से नवाज़ा गया। युग-प्राण अणुव्रत अनुशास्ता, अध्यात्म योगी, धर्मचक्र प्रवर्तक, मनीषी संत, भारत ज्योति, दिव्य पुरुष आदि आदि। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व निराला था। विरोध को विनोद समझा, संघर्ष और सहिष्णुता उनके संतत्व की थाती थी। उनमें स्व-कल्याण की भावना के साथ-साथ पर-कल्याण की भावना कूट- कूटकर भरी हुई थी। आत्म-कल्याण के संकल्पित जैन आचार्य होते हुए भी जन-हिताय, जन-सुखाय, जन कल्याणी वाणी से मानवता के उद्धार एवं राष्ट्र निर्माण में वे सदैव लगे रहे।

मानवीय आचार संहिता के जनक आचार्य तुलसी मूल रूप में मानवता के मसीहा थे। उनका व्यापक और विशद् चिंतन मानवता के पुनर्निमाण पर केंद्रीत था। मुझे जैन नहीं मुझे मौन चाहिए। इस उद्घोष में स्वतंत्र भारत के नागरिक का डिजाइन और दायित्व की तस्वीर छिपी हुई है। उनकी निगाहें प्रारंभ से ही मूल पर केंद्रीत व्यक्ति, समाज और राष्ट्रहितैषी आचार्य तुलसी का राष्ट्र संत के रूप में योगदान अद्वितीय है। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राधाकृष्णन ने आचार्य श्री तुलसी के मिशन को उनकी विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक ''लिविंग विथ दी परपस'' में चौदह महापुरुषों के मिशन में आचार्यश्री तुलसी एक थे।

सन् 1947 ई॰ भारत की स्वतंत्रता का वर्ष था। आचार्यश्री तुलसी का आचार्य-काल दूसरे दशक में प्रवेश कर रहा था। आज़ादी के प्रथम दिवस (15 अगस्त, 1947) पर असली आज़ादी अपनाओं का शंखनाद किया। असली आज़ादी से उनका अभिप्राय था भौतिक विकास। इस तथ्य को सामने रखकर उसका प्रायोगिक स्वरूप बना अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन।

अणुव्रत की विकास-यात्रा के अनेक चरण हैं। सामाजिक और सांप्रदायिक समस्या के संदर्भ में नए-नए उन्मेष सामने आए। हिंदुस्तान का विभाजन सांप्रदायिक अभिनिवेश के कारण हुआ था। सांप्रदायिक कट्टरता के कारण सभी लोग त्रस्त और आक्रांत थे।

धर्मान्ध और राजनीति के पहलवान सांप्रदायिकता को हवा देकर अपना स्वार्थ साध रहे थे। ऐसी विषम परिस्थिति में आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि में मानव समाज को एक मंत्र दिया।

''धर्म का स्थान पहले है। संप्रदाय का स्थान दूसरा है। संप्रदाय अनेक हो सकते हैं। पर धर्म हम सबका एक है।''धर्म का

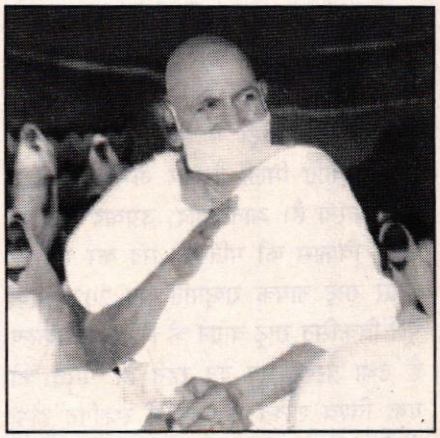

काम है समाज को, राष्ट्र को स्वस्थ मार्ग-दर्शन देना। मानवीय समरसता, एकता पर बल देना। उनमें सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व की प्रेरणा से शांतिमय परिवेश निर्माण करना। व्यक्ति सुधर जाए तो समाज सुधर जाएगा, सामूहिकता बढ़ेगी। समाज सुधर गया तो राष्ट्र स्वयं सुधर जाएगा। धर्म और संप्रदाय की वास्तविकता को समझने की प्रेरणा मिली। इस चिंता ने प्रबुद्ध चिंतकों को झकझोर डाला। आचार्यश्री तुलसी ने कहा- नैतिकता शून्य धर्म-उपासना, धर्म का उपहास है। उनकी स्पष्ट मान्यता रही कि धर्म केवल परलोक के लिए नहीं है। उससे वर्तमान जीवन सुधरना चाहिए। जिसका वर्तमान जीवन नहीं सुधरा तो परलोक कभी नहीं सुधर सकता। चरित्र पक्ष मुख्य, उपासना गौण, द्वितीय अंक पर है।

यह गुरु-मंत्र अपनी साधना में सदा पाया आचार्यश्री तुलसी ने समाज और राष्ट्र को समय-समय पर जो प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया, उन्हीं के शब्दों में उनकी बात जनहित में समर्पित है :-

1. हिंदुस्तान से विदेशी हुकूमत का अंधकार मिट गया लेकिन आंतरिक अंधकार की तहें ज्यों की त्यों जमी हुई हैं। उन्हें हटाए बिना बाह्य स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं हो सकता।

2. हिंदुस्तान ने कभी आक्रमण नीति को प्रश्रय नहीं दिया पर इसका अर्थ यह नहीं है कि देशवासी अपनी रक्षा न करें।

3. सदियों से चली आ रही अज्ञानपूर्ण मान्यताओं, अस्पष्टयता जैसी अमानवीय धारणाओं और जातिवाद संकीर्ण परंपराओं से मुक्ति मिलने पर ही हिंदुस्तान की गरिमा बढ़ सकती है।

4. यदि 'हिंदू' शब्द धर्म के साथ न जोड़कर संस्कृति और राष्ट्रीयता से जोड़ा जाए तो परिणामत: सभी भारतीय इस शब्द के नीचे एकत्रित हो सकते हैं। हम सब भारतीय बन जाएँगे।

5. वेदों का प्रमाण माननेवाले ही हिंदू हैं- इस परिभाषा के साथ हिंदू शब्द को धर्म के साथ जोड़ना उसे सांप्रदायिक और संकीर्ण बनाता है।

6. यदि हिंदू शब्द को राष्ट्र वाचक मान लिया जाए तो करोड़ों-करोड़ों मुसलमान,

ईसाई आदि जो हिंदुस्तान में रहते हैं उन्हें भी हिंदू कहलाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

7. ''स्टैंडर्ड ऑ लाईफ़'' के नाम पर भौतिकवाद, सुविधावाद और असंस्कारों का जो समावेश हिंदुस्तानी जीवन शैली में हुआ है, या हो रहा है, वह निश्चित रूप से चिंतनीय है। इस हिमालयी भूल का प्रतिकार इसी शताब्दी में हो जाए तो बहुत शुभ है।

8. हिंदुस्तानी जनता अभी तीन मुख्य रोगों से त्रस्त है- अज्ञान और अशिक्षा, अभाव और मूढ़ता। अनेक मतदाताओं को अपने हिताहित का ज्ञान नहीं है। इसलिए वे हित-साधक व्यक्ति या दल का चुनाव नहीं कर पाते हैं। अनेक मतदाता अभाव के कारण अपने मत को पाँच-दस रुपये में बेच डालते हैं। अनेक मतदाता मोहमुग्ध हैं इसलिए उनका मत बोतल के पीछे लुढ़क जाता है।

9. हिंदुस्तान की पावन भूमि जहाँ राम-भरत की मनुहाटो में चौदह वर्ष पादुकाएँ राज सिंहासन पर प्रतिष्ठित रहीं, महावीर और बुद्ध जहाँ व्यक्ति का विसर्जन कर विराट् बन गए, कृष्ण ने जहाँ कुरूक्षेत्र में गीता का ज्ञान दिया और गाँधीजी संस्कृति के प्रतीक अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर एक आलोक छोड़ गए, उस देश में सत्ता के लिए छीना-झपटी, कुर्सी के सिद्धांतों का सौदा, वैभव के लिए अपवित्र प्रतिस्पर्द्धा और विकास (भ्रष्टाचार) सने हाथों से राष्ट्र प्रतिभा का अनावरण सचमुच कैसा लगता है। राष्ट्र नायक राष्ट्र हित में चिंतन करें।

आचार्यश्री तुलसी जैन संप्रदाय के प्रमुख आचार्य ही नहीं थे, वे सर्वागीण विकास के उदगाता थे। वे राष्ट्र की गौरवशली परंपरा क्रे अनुरूप भारत को आदर्श राष्ट्र के रूप में गौरवान्वित होते देखना चाहते थे। वे भारत के सर्वहारा वर्ग के चेहरे पर और मुस्कान देखना चाहते थे।

वे राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से भी संपन्न देखना चाहते थे। अर्जन और विसर्जन राष्ट्र के विकास में सर्वोपरि मानते थे। एक शक्ति संपन्न और ज्ञान संपन्न राष्ट्र की कल्पना संजोई थी। भारत जो विश्व गुरु माना जाता था उसे पुनः उसी पद पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे। ऐसे भारत देश के स्वरूप (सपनों) की कल्पना उन्हीं के शब्दों में :-

1. देश में गरीबी न रहे (भूखा उठे न भूखा सोए)।

2. किसी प्रकार का धार्मिक संघर्ष न हो- सह अस्तित्व समन्वय और धार्मिक सहिष्णुता का मान हो।

3. कोई किसी को अस्पृश्य माननेवाला न हो।

4. खाद्य पदार्थों को किसी भी रूप में मिलावट न हो।

5. कोई रिश्वत लेनेवाला न हो। भ्रष्टाचार मुक्त जीवन-यापन हो। प्रामाणिक जीवन-शैली का विकास हो। कोई शोषण करनेवाला न हो। न शोषक और न शोषित।

7. कोई दहेज देनेवाला न हो। यह सामाजिक व्यवहार पर कलंक है।

8. मतों (वोटों) का बिक्रय न हो।

9. पर्यावरण प्रदूषण फैलाकर प्रकृति को दूषित करनेवाला न हो। सभी नशामुक्त जीवन जिएँ।

क्रमशः भारत आर्थिक संपन्नता और शक्ति संपदा की दौड़ में प्रगति पर अग्रसर है। विकसित-अविकसित और विकासोन्मुख राष्ट्रों में भारत के व्यक्तित्व को स्वीकृति मिली है। पर अभी हमें बहुत कुछ करना है। आतंकवाद, उग्रवाद का भूत हमारे विकास की गति को मंद कर रहा है। हमारे राष्ट्र नायक राष्ट्रपति सन् 2020 तक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कृतसंकल्प हैं तथा प्रेरणा-सूत्र देते रहते हैं। भारत को एक विश्व शक्ति के रूप में स्थापित होना है। पर इन सबके ऊपर राष्ट्रपपिता गाँधी की बात नहीं भूलना है कि विकास की योजना में अंतिम छोर पर खड़ा हमारा भाई उससे कितना लाभांवित होता है। इस लक्ष्य को सुनिश्चित करने पर ही राष्ट्र में शांति संभव है।

संपर्क : अर्हम्- सी०/१६, जमना नगर, सोडाला, जयपुर -३०२००६

अधमुँही पलकें

O कृष्ण मित्र

नयन की बात अधरों पर
उतर आए तो कैसा हो
मिलन की बात तारों में
बिखर जाए तो कैसा हो

समर्पण के पलों को आज
ख़ुशबू की ज़रूरत है
चमन की बात फूलों से
सँवर जाए तो कैसा हो

उनीदीं अधमुँही पलकें
कथानक है खुमारी का
सपन की बात आँखों में
उभर जाए तो कैसा हो

विगत की हर क्रिया जो
मौन आमंत्रण सरीखी थी
कथन की बात श्रवणों को
अखर जाए जो कैसा हो

संपर्क : मुक्त प्रकाशन, हतसील मक्पाउंड, गाजियाबाद (उ०प्र०)

नव वर्ष की बधाइयाँ

O आदित्य प्रकाश सिंह

बधाई हो नव वर्ष की
सीमा नहीं है हर्ष की।
सुखमय मंगलमय हो वर्ष
घर आँगन में खेले हर्ष।
सदा ख़ुशियों की हो बरसात
घी के दिए जलें दिन रात।
जीवन गुलाब-सा खिला रहे
मधु रस जीवन में घुला रहे।
साहित्य सुगंघ फैले चहूँओर
जगत में हो आपका ही शोर।

पथ सं०-३७, गर्दनीबाग, पटना-२

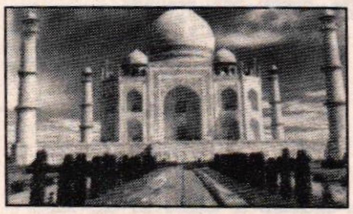

ताजमहल का ३५० वाँ वर्ष

अलौकिक प्रेम का अद्‌भुत-चिरस्मरणीय प्रतीक

○ अंजलि

जिस तरह पीसा की झुकी मीनार, स्टैचू ऑफ लिबर्टी, मिश्र के पिरामिड और चीन की दीवार विश्व प्रसिद्ध हैं उसी तरह ताजमहल की विश्वभर में पहचान है। इसके बिना हिंदुस्तान की पहचान अधूरी है। ताजमहल उस राज्य में है जहाँ गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम है और सूर, कबीर और तुलसी की जनमस्थली, प्रेम के सौहार्द की यह इमारत आगरा में है, जो मोहब्बत और प्रेम की प्रेरणा देता है। ताजमहल मौन होकर भी आज संदेश दे रहा है कि आदमी मर सकता है लेकिन मोहब्बत का प्रतीक हमेशा जिंदा रहता है।

विश्व का आठवाँ आश्चर्य, सम्राट शाहजहाँ का अपनी बेगम मुमताज के प्रति अगाध स्नेह, प्यार और समर्पण, प्रेम का शाश्वत प्रतीक संगमरमर के पत्थरों से बना स्मारक, आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र और विश्व भर को प्रेम का संदेश देनेवाला यह ताजमहल आगरा की ख़ूबसूरती में चार चाँद लगाता है। प्रागेतिहासिक सभ्यता के केंद्र के बाबत जो कुछ तथ्य इतिहास के पन्नों में है उनके अनुसार आगरा सूरसेन महाजनपद का अंग था। कालक्रम की मान्यता में यह भी कहा जाता है कि यहाँ भगवान श्रीकृष्ण के मामा कंस ने एक दुर्ग बनवाया था।

बेमिसाल इमारत और दुनिया के हरेक पर्यटक की चाहतवाला यह ताजमहल एक ऐसा स्मारक है जिसकी ताजदारी कभी छिन नहीं सकती है। ताजमहल के आसपास कोई भवन ऐसा नहीं पाया जो ताज की ताजदारी को प्रभावित कर सकता। कारण कि ताजमहल में शाहजहाँ और मुमताज़ की कब्रें हैं और कब्रें शांति पसंद होती हैं। यही वजह है कि ताजमहल के साए में हुए कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सके।

ताजमहल का निर्माण मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी बेगम अर्जुमंद बानो, जो मुमताज़ के नाम प्रसिद्ध थी, के इंतक़ाल के बाद उनकी याद में कराया था। मुमताज़ ने अपने शौहर शाहजहाँ से अपनी अंतिम इच्छा ज़ाहिर की थी कि उनकी याद में एक ऐसी इमारत तामीर की जाए जिसे दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा हो। उनके इस ख़्वाब को पूरा करने के लिए शाहजहाँ ने अपने ख़ज़ाने का मुहँ खोल दिया था। इस इमारत की तामीर के लिए दूसरे देशों से बुलाए गए विशेषज्ञ मिस्त्रियों में उनके अधीक्षक मोहम्मद हनीफ़, डिजाईनर उस्ताद अहमद लाहौरी कैलीग्राफ़र अमानत ख़ान शीराज़ी समारक पर क़ुरान की आयतों के डिजायनर कवि जियाउद्दीन, गुंबद के निर्माता इसमाइल ख़न आफ़रीदी थे। इस इमारत के निर्माण में प्रतिदिन 22,000 मज़दूर कार्य करते थे और निर्माण में प्रतिदिन 28 प्रकार के पत्थर प्रयुक्त किए जाते तथा ये पत्थर विभिन्न स्थानों से मंगाए गए जैसे लाल पत्थर फतेहपुर सिकरी से, जैस्पर पंजाब से, जेड एवं क्रिस्टल चीन से, टुर्काज तिब्बत से, लैपिस लजूली एवं नीलम श्रीलंका से, कार्नोलियन अरब से, हीरा-पन्ना नामक स्थान एवं सफेद संगमरमर मकराना से मँगाए गए। निर्माण सामग्री की ढुलाई के लिए 1000 हाथियों को लगाया गया। इस इमारत का कार्य पूरा होने में 22 वर्ष का समय लगा।

आज प्रतिदिन तक़रीबन 6000-8000 पर्यटक ताजमहल का अवलोकन करते हैं और लगभग 3000 परिवार इस कला से भरण-पोषण कर रहे हैं। ताजमहल के सौंदर्य की अनुभूति क्षण-प्रतिक्षण ताज़गी का एहसास कराता है तो वहीं सूर्यास्त के वक़्त प्रेम की गहराई का एहसास होता है। पूर्ण चँद्रमा की रात्रि में ताजमहल अपनी अनुपम छटा बिखेरती है।

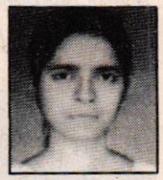

इसी क्रम में हम यह भी बताते चलें कि बहुत कम ही लोगों को यह पता है कि आगरा में इस सफ़ेद ताजमहल के अतिरिक्त तीन ताजमहल और है। यथा एक ताज है एत्माद्दौला जिसे नूरजहाँ अपने पिता मिर्ज़ा गया बेग की याद में बनवाया था उसे बेबी ताज के नाम से जाना जाता है। दूसरा लाल ताज के नाम से जाना जानेवाला ताज भगवान दास टॉकीज के निकट स्थित है जिसे कर्नल जॉन विलियम हेसिंग ने 18 वीं सदी में अपने बेटे और बेटी की याद में बनवाया था। तीसरे ताज के विषय में कहा जाता है कि सम्राट शाहजहाँ की इच्छा थी कि मुमताज की याद में निर्मित सफ़ेद ताज के पार्श्व में एक काला ताजमहल बनवाया जाए। इतिहास के पन्नों में उल्लिखत इस काले ताजमहल के स्थल को अब महताब बाग के नाम से जाना जाता है। किंतु यमुना किनारे मुमताज की याद में बनाया गया भव्य संगमरमरी और प्रेम का शाश्वत प्रतीक सफ़ेद ताजमहल आज भी मौन खड़ा होकर दुनिया के पर्यटकों को जो प्रेम का संदेश दे रहा है वह बेमिसाल है। कहा तो यह जाता है कि आगरा शहर की किसी ऊँची इमारत पर खड़े होकर और शीशे का पारदर्शी गिलास में पानी भरकर ताज की दिशा की ओर करने पर गिलास के अंदर ताज दिखने लगता है। कहते हैं कि;

मोहब्बत की ठेस हर दिल में उठा करती है,
लाख दबाओ, दबा नहीं करती है,

अब तक बन जाते लाखों ताजमहल,
पर हर दिल में मुमताज नहीं बसा करती है।

संपर्क : ए॰-१५३, जनकपुरी, साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद, उ॰ प्र॰

'विचार दृष्टि' की सहायक संपादक अंजलि परिणय सूत्र में बँधी

विचार कार्यालय, दिल्ली

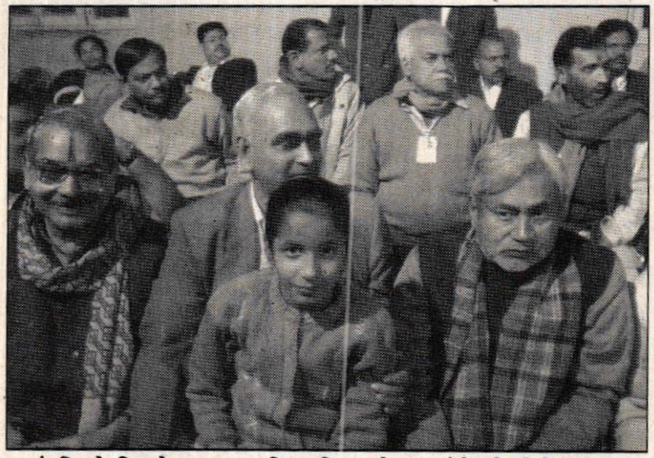

अंजलि के विवाहोत्सव पर उपस्थित बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के साथ बैठे हैं अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, कार्यालय मंत्री पं. ओम प्रकाश कौशिक एवं सिमरन

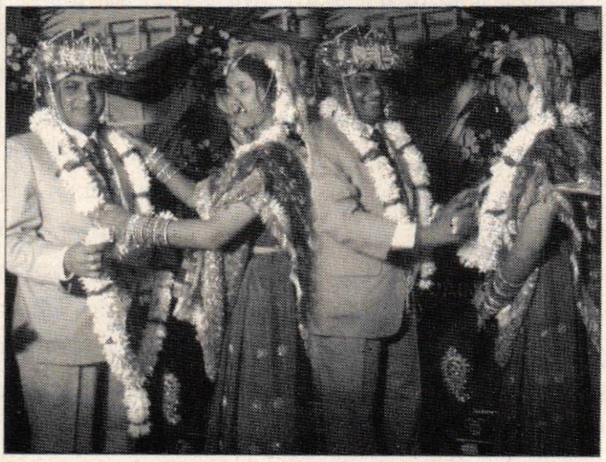

बारात आगमन पर जयमाला का दृश्य

'विचार दृष्टि' की सहायक संपादक अंजलि साहिबाबाद (ग़ाज़ियाबाद) के जनकपुरी निवासी श्री नंद किशोर 'नयन' के बड़े सुपुत्र श्री प्रवीण कुमार के संग पिछले 10 दिसंबर की रात परिणय सूत्र में बँधी। दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातक तथा कंपनी सेक्रेट्रीशिप की परीक्षा में उतीर्ण श्री प्रवीण संप्रति भारत संचार निगम लि० में कनीय लेखाधिकारी के पद पर उ० प्र० के आजमगढ़ में पदस्थापित हैं। इनके पिता श्री 'नयन' जी भारत इलेक्ट्रॉनिक में कार्यरत हैं तथा छोटे भाई श्री नवीन कुमार अभी-अभी 12 दिसंबर को भारतीय रिजर्व बैंक में संवर्ग-एक के पद पर प्रधान कार्यालय, मुंबई में पदभार ग्रहण किया है।

ध्यातव्य है कि पटना विश्वविद्यालय की स्नातक (प्रतिष्ठा) एवं मल्टी मीडिया के ग्राफिक्स व डिजाइनिंग में हाइयर कोर्स कर रही। श्रीमती अंजलि 'विचार दृष्टि' के यशस्वी संपादक श्री सिद्धेश्वर जी की सबसे छोटी बेटी है जिसका इस पत्रिका के शब्द-संयोजन, सुसज्जित करने तथा नियमित प्रकाशन में न केवल उल्लेखनीय योगदान है, बल्कि संपादक के सचिव के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर इनके कार्यों में सदैव सहयोग कर रही है।

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था राष्ट्रीय विचार मंच तथा उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' से जुड़े रहने के कारण राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली तथा देश के कोने-कोने से वर-वधू के सुखमय दांपत्य जीवन के लिए साहित्यकारों, पत्रकारो, लेखकों, पाठकों सहित संपादक श्री सिद्धेश्वर के मित्रों, सहकर्मियों, सहयोगियों, शुभेच्छुयों, सामाजिक तथा राजनीतिक नेताओं

एवं कार्यकर्ताओं की ढेर सारी शुभकामनाएँ व बधाईयाँ प्राप्त हुई हैं। बिहार के नए मुख्य मंत्री श्री नीतीश कुमार ने स्वयं इस शुभ अवसर पर दिल्ली पधारकर न केवल वर-वधू को स्नेहाशीष दिया है, बल्कि इस वैवाहिक कार्यक्रम को एक गरिमा प्रदान किया है। श्री सिद्धेश्वर जी ने माननीय मुख्यमंत्री सहित इन सभी शुभेच्छुओं एवं अत्मीयजनों के प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रकट की है। मैं भी 'विचार दृष्टि' की ओर से सभी बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

– विचार प्रतिनिधि उदय कुमार 'राज', दिल्ली से।

Wish you a very happy new year 2006

The only institute in Delhi run by working Professionals in Graphics & Multimedia

Advertising Design

Pre-Press

3D modeling

Interactive Multimedia

Web Design

Character Animation

Compositing

Non Linear Editing

H-71, NDSE-1, New Delhi-49, Ph: 55648689

U-110, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-92, Ph: 55956038

web: www.tgcindia.com, mail: info@tgcindia.com

tgc

लौह पुरुष सरदार पटेल की १३० वीं जयंती नई दिल्ली में संपन्न राष्ट्रीय एकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्र निर्माता लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 130 वीं जयंती राष्ट्रीय

एकता दिवस के रूप में विगत 31 अक्टूबर 2005 को दिल्ली में राष्ट्रीय विचार मंच, आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास समिति एवं पटेल फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई। दो चरणों में आयोजित इस कार्यक्रम के प्रथम चरण में नई दिल्ली के 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित अणुव्रत भवन के प्रांगण में लौह पुरुष सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात् सैकड़ों मोटर साइकिल की एक राष्ट्रीय एकता यात्रा प्रारंभ होकर महानगर के दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए लगभग पच्चीस किलोमिटर की दूरी तय कर महरौली के छतरपुर रोड स्थित अध्यात्म साधना केंद्र के अणुव्रत सभागार में लौह पुरुष के 130 वें जयंती-समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने संभागियों को विशेष संबोधन में कहा कि व्यक्ति से बड़ा परिवार, परिवार से बड़ा समाज, और समाज से राष्ट्र बड़ा है। इसे मद्देनजर रखते हुए व्यक्ति की निष्ठा को व्यापक आधार देना होगा और राष्ट्रीय एकता के सूत्र खोजने होंगे। आज की राजनीति और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जिस प्रकार भ्रष्टाचार और नैतिकता में गिरावट आ रही है उसे देखते हुए लोकतंत्र के विकल्प खोजने पर भी विचार किया जाना चाहिए।

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारत के पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त श्री यू० सी० अग्रवाल ने समारोह में अपने अध्यक्षीय उद्गार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की दिशा में राष्ट्रीय विचार मंच के प्रयासों की विस्तार से चर्चा की। राष्ट्रीय एकता के

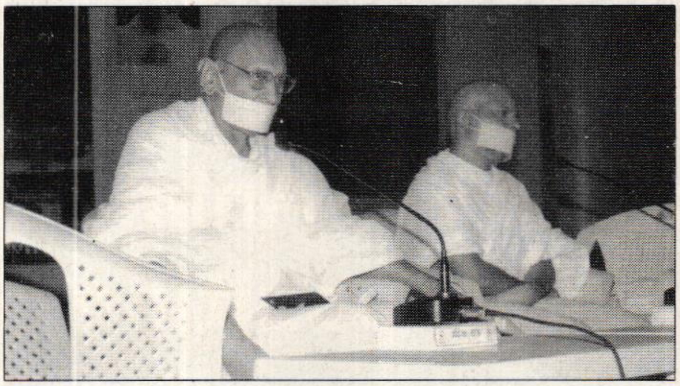

समक्ष खड़ी चुनौतियों के संदर्भ में उन्होंने बेरोजगारी, नैतिक शिक्षा का अभाव, गरीबी, राष्ट्रीयता की भावना की कमी एवं युवकों की दिशाहीनता को उत्तरदायी करार दिया। लौह

पुरुष सरदार पटेल के विचारों एवं आदर्शों के रास्ते पर चलकर तथा देश के प्रति उनके त्याग, सेवा एवं समर्पण के भाव से प्रेरणा ग्रहण कर ही राष्ट्रीय एकता की चुनौतियों का समाधान निकाला जा सकता है। यह देश का सौभाग्य था कि सरदार पटेल जैसे दूरदर्शी तथा चरित्रवान नेता देश की विषम परिस्थितियों में देश के कर्णधार बने और जिन्होंने सारे देश को एक परिवार समझते हुए उसकी सेवा में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। जातिवाद क्षेत्रीयता तथा धार्मिक कट्टरता आदि से ऊपर उठकर देश की एकता को बरकरार रखने हेतु भारतीय संविधान में कई प्रावधानों का समावेश किया। उन्होंने देश के प्राय: सभी क्षेत्रों में नैतिकता की गिरावट और मानव मूल्यों के पतन पर चिंता जताते हुए राजनीति का अपराधीकरण और असमाजिक तत्त्वों से बचाने हेतु देश के सभी सजग नागरिकों से अपनी जिम्मेदारी समझकर नेताओं और शासकों पर दृष्टि रखने की सलाह दी, क्योंकि Vigilance is the price of

liberty. इसी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय विचार मंच की स्थापना हुई है और इसके देशभर में फैले सदस्य समय-समय पर राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं पर चिंतन व मनन करते हैं तथा संचार माध्यमों एवं अपने मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के माध्यम से देश के अन्य नागरिकों

तक उन्हें पहुँचाते हैं।

इस अवसर पर युवाचार्यश्री महाश्रमण ने अपने प्रेरणा पाथेय से संभागियों को प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इस राष्ट्र के लोगों को हिंसक प्रवृत्तियों पर काबू पाने के साथ-साथ समाज में समता और समानता भी

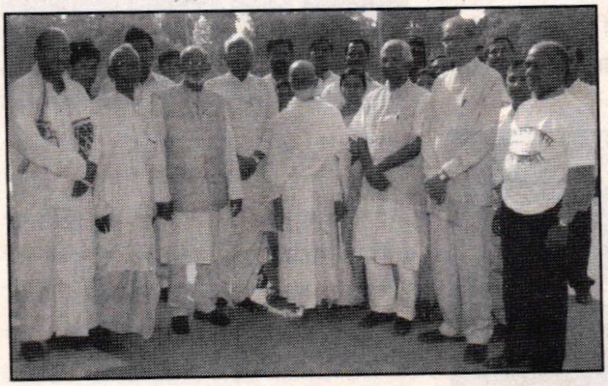

लानी होगी। मुनि श्री सुखलाल ने युवकों में देशभक्ति, मानवता, नैतिकता और धर्म के प्रति उदार, समुचित दृष्टिकोण, जिसमें प्राणीमात्र के प्रति दया का भाव हो, को राष्ट्रीय एकता के सामने खड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए जागृत करने पर बल दिया।

विचार दृष्टि के दिल्ली प्रतिनिधि कविवर उदय कुमार 'राज' के राष्ट्रीय गीत से प्रारंभ इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में पधारे मान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक श्री सिद्धेश्वर ने निर्धारित विषय 'राष्ट्रीय एकता : चुनैतियाँ और समाधान' का प्रवर्तन किया। विषय प्रस्तुत करने के क्रम में उन्होंने कहा कि राष्ट्र की एकता तभी मजबूत हो सकती है जब देश में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को उचित सम्मान मिले और साथ ही उनमें भाईचारे का विकास हो। किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता और एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए वहाँ के नागरिकों की राष्ट्रीय चेतना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इस राष्ट्रीय चेतना को बाँधे रखने के लिए लोगों में सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता के सूत्र होने चाहिए।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि' ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नागरिकों को आज जो शिक्षा दी जा रही है। उससे नृजातीय आंदोलन, धार्मिक कट्टरपन तथा अंतर सामूदायिक संबंधों में कड़वाहट आ रही है जिसके दृष्परिणाम भाषाई संबंधों, क्षेत्रवाद तथा उपक्षेत्रवाद की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकता पर आज खतरे मंडरा रहे हैं। डॉ० शशि ने निम्न पंक्तियों से राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेम पर बल देते हुए अपने उद्‌गार समाप्त किए-

हमने अपने दर से पूछा
हमारा घर कहाँ है?
दर ने कहा-सारा जहाँ-जहाँ है,
हमने सवाल किया-
बंधु, सारा जहाँ कहाँ है?
दर का जवाब था-
प्यार जहाँ-जहाँ है।

गुजरात के भावनगर विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी प्राध्यापक तथा साहित्य मनीषी डॉ० सुन्दरलाल कथुरिया ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आतंकवाद, उग्रता, हिंसा और राष्ट्र को विखण्डित करने की चेष्टाएँ, नेताओं में बढ़ता भ्रष्टाचार, उकी उपेक्षा आदि से आज राष्ट्रीय एकता के समक्ष चुनौतियाँ हैं। इसके समाधान के लिए पहले के समान राष्ट्र नेताओं में त्याग, सेवा एवं समर्पण की भावना तो आवश्यक है ही, राजनीति में बढ़ती आपराधिक प्रवृति और माफिया के बढ़ते प्रभाव को भी रोकना जरूरी है। इसके साथ ही युवकों में प्रारंभ से ही देशभावना एवं नैतिकता का विकास करना होगा।

समारोह में पधारे अतिथियों एवं सुधि श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पटेल फाउंडेशन के श्री मिथिलेश कुमार ने मंच फाउंडेशन तथा प्रवास समिति के सभी अधिकारियों और एकता यात्रा के संभागियों को समारोह एवं एकता यात्रा को सफल बनाने हेतु हार्दिक धन्यवाद दिया।

-कार्यालय मंत्री, पं० ओमप्रकाश कौशिक, दिल्ली से

'दुष्यंत कुमार रचनावली' का लोकार्पण

सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने विजय बहादुर सिंह के संपादन में चार खंडों में किताब घर की ओर से० प्रकाशित 'दुष्यंत कुमार रचनावली' का लोकार्पण त्रिवेणी सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में किया। श्री सिंह ने इस अवसर पर कहा कि दुष्यंत के व्यक्तित्व में कुछ खास बात थी। साहित्यकार कमलेश्वर ने भी कहा कि दुष्यंत में कुछ खास बात थी जो हमें जोड़े रही। कवि कन्हैयालाल नदंन तथा संपादक राजेन्द्र यादव ने भी दुष्यंत के साथ बिताए दिनों को याद कर उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को श्राताओं के सामने प्रस्तुत किया।

– पत्रिका प्रतिनिधि, दिल्ली से।

हैदराबाद की चिट्ठी

O चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

त्योहार : सितंबर माह के साथ भारत में त्योहारों का सिलसिला शुरू हो जाता है। 17 सितंबर को गणेश-चौथ के अवसर पर विनायक की प्रतिमाएँ शहर-गाँव के हर गली-मुहल्ले के नुक्कड़ों पर देखने को मिलीं। बड़ी धूम-धाम से गणेशोत्सव

गणपति बप्पा मोरया -

मनाया गया पर अंत चौदस को प्रभू के विसर्जन ने भक्तों के मन में कई सवालात उछाले। क्या भक्ति भावना का अंत यही है कि जिस प्रतिमा की पूजा-अर्चना होती रही, उसका ऐसा तिरस्कार हो?

बंगाल में दुर्गापूजा का पर्व बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अब यह त्योहार देश भर में भी व्यापक रूप में मनाया जाने लगा है। हैदराबाद भी इसका अपवाद नहीं है। बंगाली समिति ने यहाँ के राम कृष्ण मठ मार्ग पर विशाल दुर्गापूजा का आयोजन किया जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने पूजा-अर्चना करके माँ का आशीर्वाद लिया।

सम्मान : किसी भी व्यक्ति को अपनी कर्मठता पर प्रशंसा मिले तो यह गौरव की बात होती है। फ़िल्मी क्षेत्र में ऐसी ही उपलब्धि पानेवाले कर्मठ हैं रामोजी राव, जिन्हें वर्ष 2004 के फ़िल्मफ़ेयर लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

किया गया है। प्रतिघटना, मयूरी, मौना पोराटम जैसी प्रसिद्ध तेलगु फ़िल्मों के निर्माता के अलावा रामोजी राव ई-नाडू पत्रिका और ई॰टी॰वी॰ चैनल के संस्थापक भी हैं। 68 वर्षीय रामोजी राव की कर्मठता का यह सफ़र अभी जारी है।

कुछ व्यक्तित्त्व अमर होते हैं, जिनकी ख्याति का मृत्यु से कोई नाता नहीं होता। ऐसे ही एक व्यक्तित्त्व का नाम राजा दीनदयाल है, जिनकी पुण्यतिथि 5 जुलाई 2005 को मनाई गई। स्वर्गीय राजा दीनदयाल भारत के उन महान छाया चित्रकारों में से एक हैं, जिनके खींचे गए चित्र आज भी आकर्षण का केंद्र हैं। वह छठे निज़ाम मीर महबूब अली ख़ाँ के दरबारी छायाकार थे तथा उन्होंने सन् 1903 में आयोजित दिल्ली दरबार की फ़ोटोग्रफ़ी की थी।

कला : लक्षणा आर्ट गैलरी, शांतिनगर में 21 से 26 सितम्बर 2005 तक एक चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें चेन्नई से पधारे प्रसिद्ध चित्रकार जी॰ रमणा, एस॰एस॰ मेनियम, पी॰ ऑगस्टीन, अनबालागन, एस॰ शांति आदि ने भाग लिया।

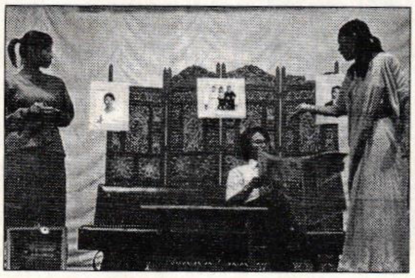

ग्रामीण क्षेत्रों पर आधारित इन चित्रकारों की कलाकृतियों को दर्शकों ने बहुत सराहा।

कला का एक पहलू है नाटक। जापान से आए कलाकारों ने हिंदी और उर्दू के नाटकों का मंचन करके दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जापान के ओसोको विश्वविद्यालय के छात्रों ने राजेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित हास्य नाटक ''एक राग दो स्वर'' तथा टोकियो विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने ''हिरोशिमा की कहानी'' का मंचन करके वाहवाही लूटी।

नाटक का ही एक पहलू कहा जा सकता है सर्कस को, क्योंकि पारंपरिक सर्कस के जानवरों से अधिक, आधुनिक सर्कस में मानव के करतब देखने को मिलते हैं- और वह भी मंच पर। ऐसे ही अद्भुत करतबों को लेकर आया फ़्रांस का टूर डे सर्के ग्रूप, जिसने रवींद्र भारती में ''दि बाल्स एन बेल्लेस'' का प्रदर्शन करके दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया।

पर्यटन : हैदराबाद के आँध्र प्रदेश राज्य संग्रहालय में 6 नई गैलरियों के उद्घाटन के साथ जहाँ संग्रहालय के प्रति पर्यटकों की रुचि बढ़ी है, वहीं पुरातत्व

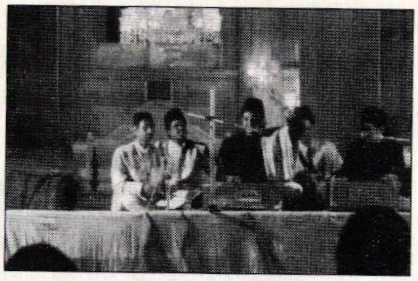

विभाग का यहाँ के मिस्र की 'ममी' की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ी है। यह 'ममी' उन छः 'ममी' में से एक है जो भारत के विभिन्न संग्रहालय में रखी गई है। अब यह क्षतिग्रस्त होती जा रही है। यह 'ममी' सोलह वर्षीय कुँवारी लड़की 'नसीहूं' की है जो मस्रि के छठे फाराओं की लड़की थी।

ऐसे शाही महल जहाँ कभी आम जनता का जाना वर्जित था, अब पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन रहे हैं। न केवल इन शाही महलों के ठाठ देखे जा सकेंगे, बल्कि अब वहाँ होनेवाले कार्यक्रमों का आनंद भी पर्यटक उठा सकेंगे। ऐसा ही एक महल है 'चौमोहल्ला महल' जो अब पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के कवि रूप पर विचार एवं काव्य गोष्ठी

''यदि मैं भगवान होता, तो इस पृथ्वी पर एक भी बुद्धिमान नहीं होता''

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

''यदि मैं भगवान होता, तो इस पृथ्वी पर एक भी बुद्धिमान नहीं होता।''

ये पंक्तियाँ हैं अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जिसे उन्होंने 24 अक्टूबर, 2005 को अहिंसा यात्रा केंद्रीय समिति की ओर से दिल्ली के महरौली स्थित अध्यात्म साधना केंद्र में आयोजित विचार एवं काव्य गोष्ठी में काव्य-पाठ के दौरान पढ़ी। सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता डॉ॰ लक्ष्मीमल सिंघवी की अध्यक्षता में आयोजित इस गोष्ठी में युवाचार्यश्री महाश्रवण ने जहाँ आचार्यश्री के काव्य-दर्शन से संदर्भित अपने कई संस्मरण सुनाए वहीं साध्वी कनकप्रभा ने महाप्रज्ञजी को एक शब्द-साधक के साथ-साथ अशब्द का साधक भी बताया।

इस अवसर पर साहित्यकार एवं पटना के पूर्व सांसद डॉ॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने आचार्यश्री के काव्य रूप पर अपने संक्षिप्त विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महाप्रज्ञजी ने अपनी कविताओं के माध्यम से हिंदी की नई परिभाषा दी है कि हिंदी हृदय की भाषा है। इनकी अध्यात्म एवं भक्ति-परक कविताएँ इतिहास के साथ-साथ

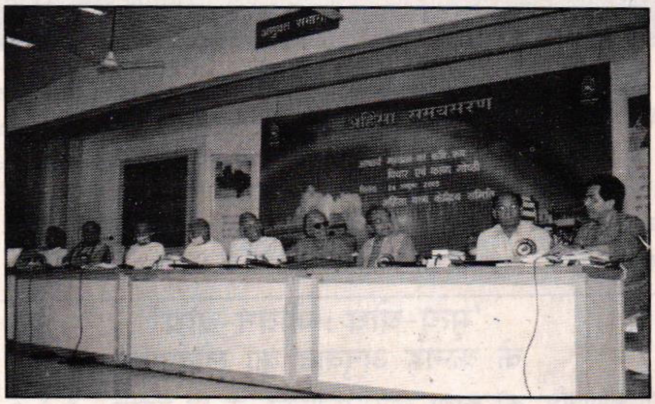

समस्त मान्यताओं को भी चुनौती देती हैं। इसी प्रकार हिंदी भवन, दिल्ली के मंत्री, डॉ॰ गोविन्द व्यास ने कहा कि महाप्रज्ञजी के भीतर का हलचल उनकी कविताओं में दिखता है।

संचालन के क्रम में प्रो॰ अशोक चक्रधर ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की प्रायः सभी कविताओं में सकारात्मक सोच तथा जीवन का सत्य रेखांकित है। उनकी चिंता-प्रक्रिया बहुत अद्भुत है। वे पुष्प से नहीं, उसके पराग से प्रेम करते हैं। इनके काव्य-संग्रह की कहीं से भी कविताएँ पढ़ लीजिए आपको उजाला ही नज़र आएगा। दिल्ली दूरदर्शन से जुड़े अधिकारी एवं कवि डॉ॰ लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने इन पंक्तियों से सुधी श्रोताओं को अपने काव्य-सुधा-रस का पान कराया।

हम तो अभिशापों से वरदान जुटा लेते हैं
हम तो आँसूओं से भी मुस्कान जुटा लेते हैं।

श्रीमती प्रभा किरण जैन ने बताया कि आचार्यश्री की कविताओं में और बातों के अलावा व्यंग्य के पुट भी देखने को मिलते हैं। डॉ॰ शेरजंग गर्ग ने जहाँ आचार्यश्री की कविताओं पर एक रचनावलि प्रकाशित कराने का सुझाव प्रस्तुत किया, वहीं कवि बनेचंद मालू ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के संपूर्ण जीवन को एक काव्य जीवन क़रार दिया। डॉ॰ कुँवर बेचैन ने अपनी कविता की इन पंक्तियों से महाप्रज्ञजी के जीवन-दर्शन को लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया-

सूखी मिट्टी से कोई भी सूरत न कभी सज पाएगी,
जब हवा चलेगी यह मिट्टी धूल बनकर उड़ जाएगी।

सुप्रसिद्ध कवि प्रो॰ उदयभानु हंस की कविता की इन पंक्तियों ने श्रोताओं को कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया-

मेरा घर भी जल गया तो क्या
गाँव में रोशनी तो हो गई।

प्रारंभ में मंच का संचालन किया गोष्ठी के संयोजक कवि राजेश चेतन ने तथा अतिथियों को प्रतीक चिह्न भेंटकर स्वागत किया श्री मांगीलाल सेठिया ने। श्री जितेन्द्र कुमार के सरस मंगलाचरण तथा मुनि जय कुमार की विषय-प्रस्तुति के दौरान पढ़ी गई कविताओं ने सुधिश्रोताओं को सराबोर किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ॰ सिंघवी ने आचार्यश्री के कवि रूप पर विस्तार से व्याख्या करते हुए बताया कि उनके काव्य में करुणा-रस, वैराग्य-रस, चिंतन-रस, साधना-रस के साथ-साथ उससे समता और समानता का भी बोध होता है। इनके शब्दों में एक ऐसा अमरत्त्व है जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे मनुष्य और समय के लिए बेचैन हैं।

– दीपक कुमार, दिल्ली से

....हैदराबाद की चिट्ठी को शेष भाग

खेल-जगत खेल के मैदान में अपने जौहर दिखाने पर सरकारी सम्मान पाना किसी खिलाड़ी के लिए एक गौरव का विषय है। यदि देश का सर्वोच्च सम्मान 'अर्जुन अवार्ड' मिले, तो सम्मानित खिलाड़ी का हर्ष दुगुना हो जाता है। आँध्र प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि इस राज्य के तीन खिलाड़ों को इस सम्मान से नवाज़ा गया है। टेनिस में अपना विशेष स्थान बनानेवाली युवा खिलाडी सानिया मिर्ज़ा, रोइंग में अपने चप्पू की चपलता दिखानेवाले जे॰ कृष्णन तथा एथेलेटिक्स में अपना जौहर दिखानेवाली धावक जे॰जे॰ शोभा को 'अर्जुन अवार्ड' दिए जाने से राज्य गौरवान्वित हुआ है।

संपर्क : १-८-२८, यशवंत भवन, अलवाल, सिकंदराबाद ५०००१० (आँ॰प्र॰)

उपराष्ट्रपति द्वारा 'उजाले का शिल्पी' का लोकार्पण

कहानी समाज के नवनिर्माण का ऐसा माध्यम है जो सरलता के साथ लोगों के हृदय में उतर जाती है। कहानीकारों ने मानव चिंतन को दिशा दी है। आज भी ऐसी कहानियों की आवश्यकता है जो जन-जन में नव चेतना और मानवीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार करें। यह उद्गार महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावतजी ने अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ धर्मेन्द्र नाथ की कहानियों के संग्रह "उजाले का शिल्पी" का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के प्रेस सचिव डॉ॰ परमानंद पांचाल ने इस अवसर पर अपने संक्षिप्त भाषण में विश्व में कहानियों के विकास में भारत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "उजाले का शिल्पी" की ये कहानियाँ अन्याय को देखकर मौन रहने की संस्कृति का विरोध और अहिंसात्मक ढंग से जूझने का आह्वान है। इसमें प्रकृति एवं मानव स्वभाव का चित्रण सुंदर ढंग से किया गया है। भाषा में गंगा-यमुनी संस्कृति झलकती है।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विश्वप्रकाश गुप्ता ने अपने संयोजन में लेखक के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि यह कहानियाँ डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ की विरासत तथा समाज सेवा के क्षेत्र में अनुभवों से प्रभावित है।

श्री ओमप्रकाशजी कौशिक के अथक प्रयास से आयोजित इस समारोह के प्रारंभ में सुविख्यात व्यंगकार डॉ॰ रमाशंकर श्रीवास्तव ने विद्वतजनों का उपराष्ट्रपतिजी से परिचय कराया और आभार ज्ञापित किया।

पं॰ ओमप्रकाश कौशिक,
नई दिलली से

'मृत्यु-बोध : जीवन-बोध' के कन्नड़ अनुवाद का लोकार्पण

हिंदी साहित्य की बीसवीं साताब्दी के उत्तरार्द्ध के यशस्वी साहित्यकार लब्धप्रतिष्ठ कवि डॉ॰ महेंद्र भटनागरजी की काव्य-कृति 'मृत्यु-बोध : जीवन-बोध' के कन्नड़ अनुवाद का मैसूर नगर के 'श्रीशिवरात्रीश्वर महिला महाविद्यालय' में लोकार्पण करते हुए 'महाराजा कॉलेज', मैसूर के अँग्रेज़ी प्राध्यापक, प्रख्यात-विमर्शक, लेखक प्रो॰ नागण्णाजी ने कहा, "देश में भावैक्यता की वृद्धि, भिन्न-भिन्न राज्यों में रहनेवाले लोगों की परस्पर जानकारी की दृष्टि से श्रेष्ठ कृतियों के अनुवादों के आयोजन से महत्त्वपूर्ण हैं। अनुवादिका श्रीमती शशिकला सुब्बण्ण ने इस दृष्टि से प्रस्तुत कार्य किया है। इन्होंने श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा', श्री जयशंकर प्रसाद का उपन्यास 'तितली', बच्चनजी की 'मधुशाला', 'मधुकलश', काव्य-कृतियों, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्य-कृति 'गीतांजलि' के भी कन्नड़ अनुवाद किए हैं। आज वे डॉ॰ महेंद्र भटनागरजी की काव्य-कृति 'मृत्यु-बोध : जीवन-बोध' का कन्नड़ अनुवाद प्रस्तुत कर रहीं हैं। इस

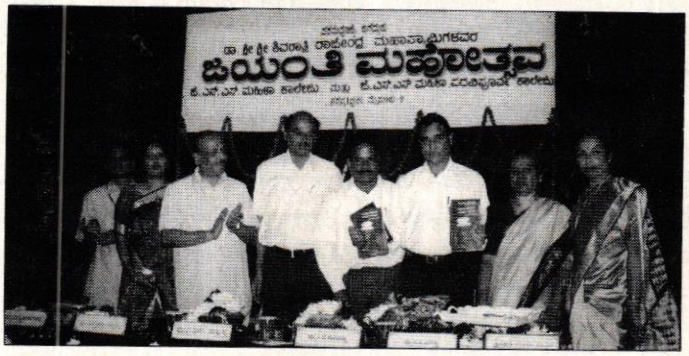

कृति के रचयिता डॉ॰ महेंद्र भटनागरजी हिंदी-काव्य के मूल कवि हैं। इस काव्य-कृति में कवि मृत्यु की अनिवार्यता, अटलता और चिंरतनता को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि "उसका सामना या स्वीकर निर्भीकता और दृढ़ता से करना चाहिए।" इस पर ज़ोर देने के लिए उन्होंने भारतीय साहित्य के 'सावित्री', नचिकेता, महर्षि अरविंद और विदेशी साहित्यकार टी॰एस॰ इलिएट, विलियम शेक्सपीयर आदि का उल्लेख किया, जिन्होंने मृत्यु पर विशेष विमर्श किया है। डॉ॰ महेंद्र भटनागरजी का समग्र साहित्य छह सम्पुटों में संकलित हुआ है। उसके बाद भी उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण काव्य-कृतियाँ दी हैं, जिनमें 'मृत्यु-बोध : जीवन-बोध' एक है। उनके साहित्य पर देश के अनेक विश्वविद्यालयों में शोध हो चुका है। डॉ॰ महेंद्र भटनागरजी ने अपनी इस विशिष्ट कृति 'मृत्यु-बोध : जीवन-बोध' में मृत्यु का रहस्योद्घाटन करते हुए, उसे केंद्र-बिंदु बनाकर विभिन्न मन:स्थितियों की पचास कविताएँ प्रस्तुत की हैं। इनका कन्नड़ अनुवाद भी यदि स्वीकार करेंगे तो मेरा परिश्रम सार्थक होगा।"

श्रीमती शशिकला सुब्बन्ना
मैसूर से

अणुव्रत आंदोलन का ५४ वां वार्षिक अधिवेशन संपन्न

नैतिक और चरित्र विकास को लेकर पिछले 55 वर्षों से सतत अभियानरत अणुव्रत महासमिति का चार दिवसीय अधिवेशन अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली में महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में 10-13 नवंबर, 2005 को अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

अहिंसा समवाय की अवधारना को लेकर सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें अहिंसा में विश्वास करनेवाली संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री विमल प्रसाद (पूर्व राजदूत, नेपाल) मुख्य अतिथि थे।

देश के प्रमुख साहित्यकार डॉ॰ परमानंद पांचाल की अध्यक्षता में अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ॰ महेंद्र कर्णावट ने अणुव्रत पाक्षिक द्वारा प्रकाशित 616 पृष्ठों का अर्धशती अंक लोकार्पण हेतु आचार्यश्री महाप्रज्ञ को भेंट किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत लेखक मंच को वर्तमान मीडिया के परिप्रेक्ष्य में एक विकल्प का रूप लेने का आह्वान किया। उन्होंने अप-सांस्कृतिक मूल्यों का निरीक्षण करने के लिए मंच को एक सशक्त प्रतिरोधात्मक शक्ति का संवाहक बनने की आवश्यकता का प्रतिपादन किया। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पुरस्कार ''अणुव्रत लेखक पुरस्कार'' जयपुर के प्रमुख्य मीडिया

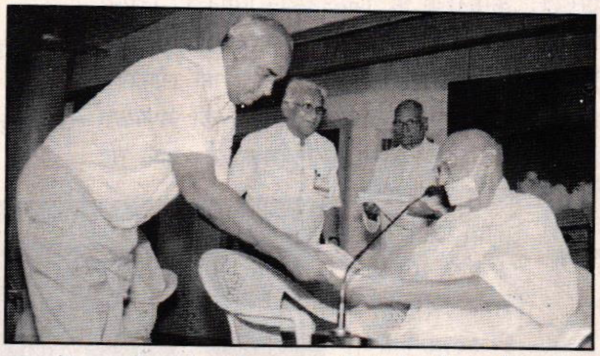

कर्मी एवं साहित्यकार डॉ॰के॰के॰ रितु को प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत 31 हज़ार रु॰, प्रशस्तिपत्र एवं चिह्न भेंट किया।

देश भर के समागत अणुव्रत कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि भ्रष्टाचार आजकल शिष्टाचार बनता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में देश भर में फैले हुए अणुव्रत के सक्रिय कार्यकर्ताओं को एक सशक्त अभियान चलाना चाहिए।

नैतिकता एवं संयम के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने की दृष्टि से असम के उग्रवादी क्षेत्र में अहिंसाक अलख जगानेवाले श्री हेम भाई को अणुव्रत पुरस्कार से नवाज़ा गया। एक लाख पच्चीस हज़ार एवं सम्मानपत्र से ''जय तुलसी फाउंडेशन'' द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

अधिवेशन में विभिन्न संगोष्ठियों में अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने गहन चर्चा के बाद अणुव्रत पाक्षिक के संपादक एवं अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष डॉ॰ महेंद्र कर्णावट को आगामी दो वर्ष के लिए अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

इस चतुर्दिवसीय कार्यक्रम में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, युवाचार्य महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, मुनि सुखलालजी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ॰ धमेंद्र नाथ 'अमन' आदि अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

सभी कार्यकर्ताओं ने अधिवेशन के संदेश को आत्मसात् करते हुए पूरे देश में नैतिकता और आध्यात्मिक जागरण का संकल्प लिया।

पं॰ ओमप्रकाश कौशिक,
नई दिल्ली से

'जोतिपुंज महात्मा फुले' का लोकार्पण

मानव संसाधन विकास मंत्री श्री वृषिण पटेल ने 10 दिसंबर, 2005 को गाँधी मैदान, पटना के पुस्तक मेला में प्रख्यात साहित्यकार एवं राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार शाखा के अध्यक्ष श्री जिया लाल आर्य के सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'जोतिपुंज महात्मा फुले' का लोकार्पण करते हुए कहा कि ''महात्मा फुले भारतीय समाज के रचनात्मक सुधारवादी आंदोलन के प्रेरणास्रोत थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और डॉ॰ भीमराव अंबेदकर ने भी उनको अपना आदर्श और गुरु माना। बिहार के स्कूली पाठयक्रम में महात्मा फुले के सामाजिक, शैक्षिक एवं अन्य महत्त्वपूर्ण अवदानों को शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि श्री आर्य की इस पुस्तक से समाज को रोशनी मिलेगी। ज्ञानियों को समाज के कल्याण कार्यों में आगे आना होगा तभी अभिवंचित वर्गों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकेगा।

प्रख्यात सौंदर्यशास्त्री व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ कुमार विमल ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जिया लाल आर्य का उपन्यास वस्तुतः इतिहास के कलेवर में समकालीन चिंता के निराकरण का रहस्योद्घाटन कर रहा है। महात्मा फुले उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री और समाज सुधारक थे। उन्होंने ही भारत में प्रथम बार सायंकालीन पाठशाला और कन्या पाठशाला की स्थापना की।

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के पूर्व निदेशक, डॉ॰ अमर कुमार सिंह ने कहा कि महापुरुषों एवं महानायकों ने साहित्य-संस्कृति और समाज को सदैव प्रभावित किया है। जिया लाल आर्य का यह उपन्यास इसका सफल उदाहरण है। विधान पार्षद् श्री केदार नाथ पांडेय ने कहा कि महात्मा फुले सच्चे अर्थों में लोक शिक्षक थे।

'दस्तक साहित्य परिषद' और 'आर्य सेवा फाउंडेशन' के तत्त्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करनेवालों में उपन्यासकार श्री जिया लाल आर्य, डॉ॰ राधाकृष्ण, डॉ॰ शिवनारायण,

श्री राम उपदेश सिंह 'विदेह', डॉ॰ कुणाल कुमार, श्री आ॰एन॰ झा आदि प्रमुख थे।

उपन्यासकार श्री कृष्णानंद, डॉ॰ रामशोभित प्रसाद सिंह, डॉ॰ शाहिद जमील, श्री आर॰एन॰ दास, श्री विशुद्धानंद, डॉ॰ उषा किरण खान, श्री विशेश्वर दास, भगवती प्रसाद द्विवेदी, राजेन्द्र 'राज', मो॰ नसीम और डॉ॰ नरेश पांडेय चकोर के अतिरिक्त बहुत सारे साहित्यकारों एवं पत्रकारों आदि ने अपनी उपस्थिति से लोकार्पण समारोह की गरिमा को चार चाँद लगाया।

आगत अतिथि का स्वागत राकेश आर्य और धन्यवाद ज्ञापन श्री हरिश्चंद्र शर्मा ने किया।

पटना डॉ0 शाहिद जमील, से

डॉ॰ शरण की अमेरिका यात्रा

पिछले दिनों हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक तथा मगध विश्वविद्यालय, गुरुगोविंद सिंह कॉलेज के पूर्व प्राध्यापक एवं 'विचार दृष्टि' के लेखक प्रो॰ डॉ॰ दीनानाथ 'शरण' अमेरिका की यात्रा कर स्वदेश वापस आए हैं। प्रो॰ 'शरण' ने अपनी यात्रा के दौरान अमेरिका के मुहल्ले-पड़ोस, बाज़ारों और गलियों की घटनाओं के साथ-साथ वहाँ के नागरिकों द्वारा प्रयोग की जानेवाली हिंदी को बड़े ही दिलचस्प ढंग से देखा। उनके साथ उनकी जीवन-संगिनी और उनकी सद्य : प्रकाशित पुस्तक 'शैला के प्रति' की जीवंत नायिका श्रीमती शैलजा सक्सेना भी यात्रा में शामिल थीं। यात्रा के दौरान प्रो॰ 'शरण' ने मंदिर, गुरुद्वारों और अमेरिका में हिंदी की सच्ची स्थिति प्रिंसटन, हार्वर्ड, मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय, अमेरिका की महानदी हड्सन, जार्ज वाशिंग्टन ब्रिज, एटलांटिक महासागर, अमेरिकी जीवन शैली, लिटिल इंडिया और अमेरिका के प्रख्यात व्यंग्य लेखक मार्क टवैन (1805-1910) के स्मारक सह पुस्तकालय आदि का गहन अध्ययन-निरीक्षण कर अपने साथ काफ़ी सामग्री लाए हैं। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से उनसे अनुरोध है कि वे उसे शब्द-बद्धकर एक यात्रा-वृतांत के रूप में प्रस्तुत करें।

सहायक संपादक

डॉ0 परमानंद पांचाल की पुस्तक का लोकार्पण

लेखक तभी बड़ा होता है जब वह अपनी विरासत को लेकर चलता है। 'डॉ॰ परमानंद पांचाल ने 'दक्खिनी हिंदी' 'इतिहास और शब्द-संपदा' लिखकर बहुत बड़ी विरासत दे दी है। ये उद्गार हैं ख्यातिलब्ध कथाकार कमलेश्वर के, जिसे उन्होंने विगत 13 दिसंबर को नई दिल्ली के साहित्य अकादमी सभागार में डॉ॰ पांचाल की उक्त पुस्तक का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता कर रहे अकादमी के निदेशक, प्रो॰ गोपी चंद नारंग ने कहा कि नागरी लिपि परिषद के मंत्री, संघ लोक सेवा आयोग के निदेशक तथा राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के राजभाषा सलाहकार के पद पर रहकर डॉ॰ पांचाल ने तो हिंदी साहित्य की सेवा की ही, आज के लोकार्पित महत्वपूर्ण पुस्तक को लिखकर दक्खिनी हिंदी की शब्द-परंपरा को भी इन्होंने सुरक्षित रखा है।

इस अवसर पर उर्दू साहित्य के विद्वान प्रोफेसर डॉ॰ सैयद सादिक अली ने लोकार्पित पुस्तक की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए यह आशा व्यक्त की कि यदि हिंदी और उर्दू इन दोनों भाषाओं का एक समग्र इतिहास लिखा जाए तो भाषाई झगड़े खत्म हो जाएँगे। अमेरिका से पधारे सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं डॉ॰ पांचाल के सहपाठी डॉ॰ वेद प्रकाश 'बटुक' ने अपने उद्गार में साझी विरासत की भाषा का प्रचार-प्रसार भाषाई एकता की दृष्टि से अच्छा माना।

पवार कानपूरी के मंगलाचरण से प्रारंभ इस समारोह में डॉ॰ रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' ने कहा कि दक्खिनी हिंदी पर पुस्तक लिखकर डॉ॰ पांचाल ने एक कष्ट साध्य कार्य किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस कृति का बड़ा महत्व है। दक्खिनी हिंदी समाज के आम आदमी से जुड़ती है। लेखकीय उद्गार में डॉ॰ पांचाल ने दक्खिनी हिंदी की पृष्ठभूमि पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम का सफल संचालन किया डॉ॰ कृष्ण कुमार गोस्वामी ने। इस अवसर पर दिल्ली के जाने-माने साहित्यकार-पत्रकार सहित 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर तथा सुप्रसिद्ध शायर प्रो॰ धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा को बढ़ाया।

-विचार प्रतिनिधि उदय कुमार राज,
दिल्ली से।

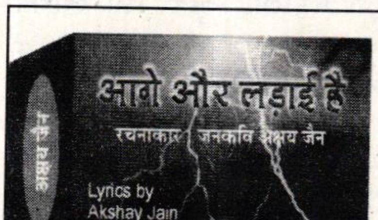

एक ईंट आपकी भी लगे

आत्मगौरव, देशप्रेम और भारतीय जीवनशैली को समर्पित ऑडियो कैसेट और सीडी

'आगे और लड़ाई है'

का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। मधुर संगीत और दिलकश गायकी से भरपूर इस कैसेट को जन-जन तक पहुँचाने के अभियान से आप जुड़ें।

निर्माता-रचनाकार जनकवि अक्षय जैन

के ओजस्वी बोल इस कैसेट को अद्भुत और अविस्मरणीय बनाते हैं।

इस प्रोजेक्ट के सहयोगी सदस्य बनिए।

आकर्षक प्रस्तावों के लिए संपर्क कीजिए-

संपर्क : दाल-रोटी

१३, रशमन अपार्टमेंट, उपासनी हॉस्पिटल के ऊपर, एस. एल. रोड, मुलुंड (प), मुंबई-४०० ०८०. फोन : ०२२-२५६० १५८८ (सुबह १० से १ बजे तक)

एक गरीब किसान युवक नरेन्द्र साहनी के ईमान को एक अरब रुपया भी नहीं डिगा सका

राज्य के उद्यम सिंह नगर जिले के अंतर्गत खटीमा के भारतीय स्टेट बैंक में 18 वर्षीय एक गरीब किसान युवक नरेन्द्र साहनी के बचत खाते में बैंक की लापरवाही के चलते 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 65 रुपए जमा हो गए और वह युवक रातो रात गरीबी से निकलकर अरबपति बन गया, किंतु उस युवक की ईमान को यह एक अरब रुपया भी नहीं डिगा सका। हुआ यूँ कि श्री साहनी के मुंबई स्थित मामा ने उसके लिए पिछले नवंबर माह में केवल 99 हजार रुपए उसके खाते में हस्तांतरित किए थे। वह उन्हीं रुपयों को निकाल रहा था कि पूरी धनराशि, निकालने के बाद जब उसने अपने खाते में करोड़ों रुपए शेष देखे तो उसने तत्काल बैंक शाखा प्रबंधक आर०सी० सक्सेना से मुलाकात कर तथ्यों का खुलासा किया और इस प्रकार उसने न केवल बैंक को एक अरब रुपए का नुकसान होने से बचा लिया, बल्कि अपनी ईमानदारी का एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

– रविशंकर प्रसाद

दिल्ली में दर्शनीय अक्षरधाम मंदिर का उद्घाटन

दिल्ली में यमुना पार स्वामीनारायण के स्मारक के रूप में नवनिर्मित अक्षरधाम

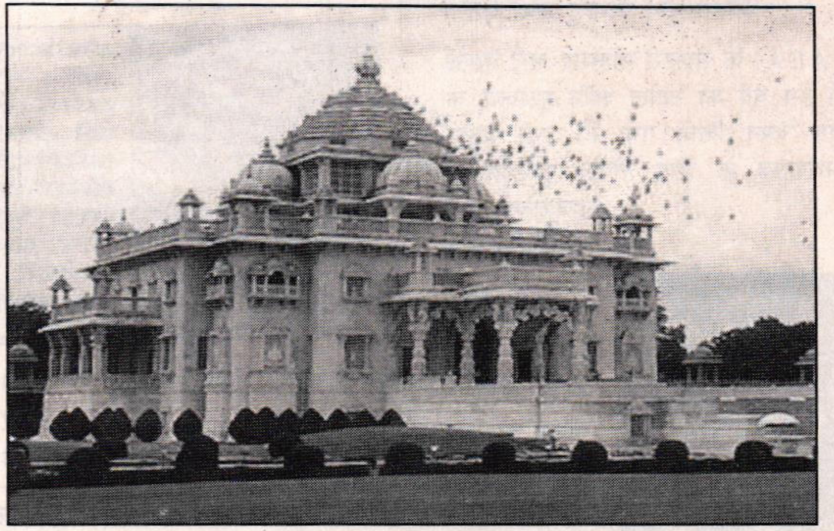

मंदिर देखने योग्य है। विगत 6 नवंबर को जब देश के राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

और प्रधान मंत्री डॉ० मनमोहन सिंह एक साथ कहीं उपस्थित होकर किसी मंदिर का उद्घाटन करें तो यह मानना ही होगा कि वह कोई बड़ा आयोजन होगा। कहा जाता है कि यमुना किनारे बने देश के विशालतम मंदिरों में से यह अक्षरधाम मंदिर एक है, जो एक सौ एकड़ में फैला है और मंदिर परिसर में 20,000 मूर्तियाँ हैं। स्वामीनारायण की पंचधातु की मूर्ति 11 फुट ऊँची है और इसका परिक्रमा पथ 2 किलोमीटर लंबा है। इसमें 1152 खंभे गुलाबी पत्थर पर उत्कीर्ण 148 हाथियों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इसके पत्थर और मुख्य स्मारक में अहम स्थानों पर दुनिया का सबसे मंहगा इटली का करारा मार्बल लगाया गया है और 7000 कलाकारों-शिल्पियों ने इसे 5 साल में निर्मित किया है। इसके निर्माण में 200 करोड़ रुपये की लागत आई है।

अक्षरधाम के वास्तुकारों, डिजाइनरों तथा शिल्पियों के बारे में पूछने पर यही जवाब मिलता है कि उनके सेवकों ने इसे बनाया है। इसकी सबसे बड़ी खासियत 12 मिनट की नौका यात्रा है जो आपको 10,000 वर्षों की वैदिक सभ्यता से गुजरेगी, वह भी मेट्रो की तरह एस्केलेटर के जरिए। इतना के बाद एक बार इसे देखने का आपना मन अवश्य हो गया होगा। तो बन जाए दिल्ली की यात्रा का एक कार्यक्रम ताकि दुनिया का आधुनिकतम मेट्रो रेल के साथ-साथ देश के विशालतम अक्षरधाम मंदिर का मजा आप ले सकें। आपका स्वागत है।

उदय कुमार 'राज', दिल्ली से।

नोबेल शांति पुरस्कार

मोहम्मद अल बरदोई को

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा ऐजेंसी (IAEA) के सेक्रेटरी मोहम्मद अल बरदोई को इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। इसी प्रकार 'अर्थशास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार से इज़रायल के राबर्ट जे॰ अमन तथा अमेरिका के थॉमस सी॰ सेलिंग को उनके अलाइड गणित की एक शाखा गेम सिद्धांत के शोध के लिए दिया गया।

विज्ञान के चिकित्सा, रसायनशास्त्र एवं भौतिकी में तीनों क्षेत्रों में इस साल जिन वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार दिए गए हैं उसकी विशिष्टता यह है कि वे बड़े दायरे के सैद्धांतिक कार्य की बजाय विशिष्ट समस्याओं पर केंद्रित व्यावहारिक कार्य को संबोधित करते हैं।

चिकित्सा- डॉ॰ बेरी मार्शल
रसायनशास्त्र- यव्ज शौवां
भौतिकी- राय जे॰ ग्लौबर- अमेरिकी भौतिकशास्त्री
जान एल॰ हाल- अमेरिकी भौतिकविद्
श्योडार डब्लू हैंश- जर्मन भौतिकशास्त्री

ब्रिटिश नाटककार हेरोल्ड पिंटर को वर्ष 2005 के साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया है। 'द वर्थडे पार्टी' और 'द केयर टेकर' श्री पिंटर के बेहतरीन नाटक माने जाते हैं। उन्होंने अपने नाटकों में रंगमंच के मूलभूत अवयवों को बरकरार रखा है, जिसमें बंद प्रेक्षागृह और अप्रत्याशित संवाद शामिल हैं।

अनुज कुमार, दिल्ली से

अन्नान को 'जायद पर्यावरण पुरस्कार' से सम्मानित

संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव कोफी अन्नान को संयुक्त अरब अमीरात यूएई के दस लाख डॉलर के 'जायद पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार सतत विकास में पर्यावरण को बुनियादी स्तंभ के रूप में प्रचारित कर इस मुद्दे पर राजनीतिज्ञों और आम लोगों का ध्यान आकृष्ट कराने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए दिया गया है।

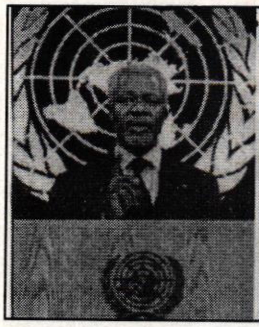

भ्रष्टाचार गरीबों को जबरदस्त हानि पहुंचाता है। भ्रष्टाचार की वजह से ही जो कोष गरीबों की उन्नति और मूलभूत आवश्यकताओं के लिये खर्च होना चाहिए, वह दूसरी तरफ चला जाता है। इससे असमानता और अन्याय तो बढ़ते ही हैं, विदेशी निवेश और सहायता में भी कमी आ जाती है।
- कोफी अन्नान

पं॰ ओमप्रकाश कौशिक सम्मानित

नई दिल्ली के सुविख्यात समाजसेवी पं॰ ओमप्रकाश कौशिक, कार्यालय मंत्री, दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति को अणुव्रत आंदोलन में कई दशकों से अच्छा कार्य किया है। इनका संपर्क सूत्र काफ़ी मज़बूत है। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अणुव्रत वार्षिक सम्मेलन की आम सभा में ''अणुव्रत सेवी'' संबोधन से सम्मानित किया है। कौशिक जी लगभग 50 वर्षों से अणुव्रत आंदोलन से जुड़े हुए हैं तथा विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं को अपना सहयोग दे रहे हैं। ज्योतिषाचार्य पं॰ ओमप्रकाश कौशिक के इस सम्मान का दिल्ली के समाजसेवी कार्यकर्ताओं ने हार्दिक स्वागत किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा, कौशिकजी निष्ठावान कार्यकर्ता हैं, "जिन्होंने इनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है।"

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि ''कौशिकजी अणुव्रत से लंबे समय से जुड़े हुए हैं। इनकी सेवाओं के संबंध में सभी जानते हैं।''

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा कि ''पंडितजी को आचार्यश्री द्वारा ''अणुव्रत सेवी'' के संबोधन के शुभ अवसर पर अपना आशीर्वाद दिया।

डॉ॰ राजेंद्र सुराणा, नई दिल्ली से

डॉ॰ शत्रुघ्न 'स्वदेश प्रभाकर' सम्मान से सम्मानित

पिछले दिनों जमशेदपुर के तुलसी भवन में आयोजित 'अक्षर कुंभ 2005' में बिहार के डॉ॰ शत्रुघ्न प्रसाद को उनके राष्ट्रीय चेतना के ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए उन्हें 'स्वदेश प्रभाकर' से सम्मानित

किया गया। राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकार डॉ॰ प्रसाद को सम्मान स्वरूप 11 हज़ार रुपये नक़द तथा प्रशस्ति-पत्र व अंगवस्त्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर डॉ॰ प्रसाद के अलावा कविश्रेष्ठ अनूपलाल शर्मा, लखन विक्रांत, श्रीमती उषा कुशवाहा, ईश्वरचन्द्र द्विवेदी और प्रो॰ एन॰के॰ सिंह को भी सम्मानित किया गया। श्रीराम सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ॰ नरेंद्र कोहली तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में इसकी शोभा बढ़ा रहे थे डॉ॰ विश्वमोहन तिवारी। पुरस्कृत डॉ॰ प्रसाद ने अपने उद्‌गार में कहा कि अक्षर में 'क्षर' नाशवान तथा 'अक्षर' अमर है।

विचार प्रतिनिधि, राँची

मिस आइसलैंड बनी विश्व सुदरी

मिस आइसलैंड उन्नूर बिरना विल्जाम्सडॉटिर के सर पर इस वर्ष की विश्व सुंदरी का ताज आया है। दक्षिणी चीन के सान्या समुद्र तट पर हुए एक भव्य समारोह में मिस मेक्सिको डेफ्रे मोलिना लोना दूसरे और मिस प्यूटोरिको इनग्रिड मेरी रिवेरा सेंटोस तीसरे स्थान पर रहीं। उन्नूर ने भारत की सुंदरी सिंधरा गड्डे सहित दुनिया भर से पहुँची 102 सुंदरियों को पीछे छोड़ते हुए ताज पर कब्ज़ा जमाया।

21 वर्षीय 'विश्व सुंदरी- 2005' उन्नूर बिरना विल्जाम्सडॉटिर मानव विज्ञान एवं क़ानून की छात्रा व अंशकालिक पुलिस ऑफ़िसर हैं और भविष्य में वकील बनना चाहती हैं। चीन के रिसॉर्ट द्वीप हैनान में हुई 55 वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के अंतिम दौर में भारत की डायना हैडेन सहित नौ भूतपूर्व मिस वर्ल्ड सुंदरियों ने इनका चयन किया। दुनिया भर के टेलीविज़न दर्शक भी इस ऐतिहासिक अवसर को देख रहे थे। मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का आयोजन लगातार तीन वर्षों से चीन में ही हो रहा है। उन्नूर अब एक वर्ष तक सद्‌भावना दूत होने के साथ ही बच्चों की बेहतरी के लिए धन जुटाने का काम भी करेंगी। ताज मिलने के बाद उन्होंने कहा कि ''आपका काम जैसा होगा वैसा ही भविष्य होगा।'' उन्होंने सफलता का श्रेय माँ के सिखाए गुर और उनकी आशीर्वाद को दिया। ग़ौरतलब है कि उन्नूर की माँ भी पूर्व ब्यूटी क्वीन रही हैं। उन्होंने 1983 में विश्व सुंदरी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था। उन्होंने कहा कि अपनी भावना व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। इतिहास में तीसरी बार आइसलैंड की सुंदरी को विश्व सुंदरी के खिताब से नवाज़ा गया है।

विचार कार्यालय, दिल्ली

तीन बिहारी महिलाएँ सम्मानित

देश के पिछड़े राज्यों में शुमार होने के बावजूद महिलाओं के सामाजिक उत्थान में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए सात सम्मानों में से तीन सम्मानों को अपनी झोली में बटोरकर बिहार की तीन महिलाओं ने बिहार के गौरव में चार चाँद लगा दिया है। उल्लेखनीय है कि विभिन्न क्षेत्रों की सात महिलाओं को महिलाओं के उत्थान में उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 2004 के वुमेन ऑफ़ सब्सटेंस एवार्ड से सम्मानित किया गया। ग़ौर तलब है कि सम्मान पानेवाली अमेरिका देवी और तिलीया देवी बिहार के मधुबनी जिले की हैं, जिन्हें 2005 के शांति नोबेल पुरस्कार के लिए भी मनोनीत किया गया था। इस एवार्ड को देने वाली संस्था रेयान फ़ाउंडेशन के निदेशक, गेस पिंटो ने कहा कि इस एवार्ड का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए किए गए प्रयासों और संघर्षों को उचित सम्मान देना है। काँग्रेस समिति की महासचिव माग्रेट अल्वा ने इन महिलाओं को एवार्ड देते हुए कहा कि ये ज़मीन से जुड़ी हुई महिलाएँ हैं जिन्हें संघर्ष का अर्थ पता है और जिन्होंने अपने क्षेत्रों में सही अर्थ में सफलता हासिल की है। इस सम्मान को पानेवाली बिहार की एक अन्य महिला हैं शशिलता वर्मा जिन्होंने राज्य के पिछड़े हुए सारण जिला में महिलाओं में उच्च शिक्षा हेतु उल्लेखनीय कार्य किया है। उनके अतिक्ति संजना गोयल, डमगी थॉमस सिद्दी, मदर स्टैनिसलाउँस और शीतल सुंदर अय्यर को यह सम्मान दिया गया है। उल्लेखनीय है कि अय्यर को देश की पहली अंपायर होने का गौरव प्राप्त है।

विचार कार्यालय, पटना

२१ युवा वैज्ञानिकों को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली

पिछले दिनों प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 21 युवा वैज्ञानिकों को वर्ष 2004-05 के लिए शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार प्रदान किए। वर्ष 2004 के लिए पुरस्कार पाने वालों में डॉ० गोपाल चंद्र कुंडू, डॉ० रमेश

वेंकेट सोन्टी, डॉ० विनोद कुमार सिंह, डॉ० शिवा उमापति, डॉ० चेतन एकनाथ, डॉ० नंदन राव, डॉ० सुजाता रामदोराई, डॉ० अरुण बोस, डॉ० विवेक विनायक रानाडे तथा डॉ० सुभाशीष चौधरी हैं। इसी तरह वर्ष 2005 के लिए डॉ० के० कुंडू, डॉ० शेखर सी० मांडे, डॉ० समरेश भट्टाचार्य, डॉ० एस० रामकृष्णन, डॉ० निबिड़ मंडल, डॉ० जावेद एन० ओमवाला, डॉ० संदीप पी० त्रिवेदी, डॉ० कपिल हरि परांजये, डॉ० प्रबल चौधरी, डॉ० पी० रामगोपाल राव, डॉ० कल्याणमय देव हैं। इस अवसर पर वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी०एस०आई०आर०) के महानिदेशक डॉ० आर० एम० माशेलकर भी मौजूद थे। सम्मानित वैज्ञानिकों को प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र सहित दो-दो लाख रुपए प्रदान किए गए।

'समाज को तोड़नेवाली ताकतों को मिटा दें'

– उपराष्ट्रपति

डॉ० कर्ण सिंह को राष्ट्रीय एकता पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारत के उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने राज्यसभा सदस्य तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह को देश ही नहीं विदेश तक में सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की ओर से 'राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने कहा कि मौजूदा दौर में 'अल्पसंख्यक' और 'बहुसंख्यक' राजनीतिक नारा बन गया है और जब तक यह नारा रहेगा तब तक दोनों की समस्याओं का हल नहीं हो सकता। समाज को तोड़नेवाली ताकतों को मिटा दें। डॉ० कर्ण सिंह ने इस मौके पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि देश ने धर्म निरपेक्ष संविधान को स्वीकारा है, लिहाजा इसमें कट्टरपंथ के लिए जगह नहीं होनी चाहिए। वह नुकसानदेह है।

पत्रिका प्रतिनिधि उदय कुमार राज, दिल्ली से।

२२ रचनाकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली

विभिन्न भाषाओं के 22 रचनाकारों को वर्ष 2005 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। हिंदी के प्रख्यात कथाकार और धारावाहिक लेखक मनोहर श्याम जोशी को यह पुरस्कार उनके उपन्यास पानेवालों में येशे दोरजी थोंगची (असमिया), राधवेंद्र पाटिल (कन्नड़) कृष्ण सिंह भोक्तान (नेपाली), जी० तिलकवती (तमिल), सुरेश दलाल (गुजराती), हमीद कश्मीरी (कश्मीरी) विवेकानन्द ठाकुर (मैथिली), स्व० अरुण कोल्हटकर (मराठी), स्वामी रामभद्राचार्य (संस्कृत), ढोलन राही (सिंधी) कृष्ण शर्मा (डोगरी), एन० शिवदास (कोंकणी), जीवी मक्का नाडन (मलयालम), एम० नवकिशोर सिंह (मणिपुर), रामचन्द्र बेहरा (ओडिया), गुरुबचन सिंह मुल्लर (पंजाबी), चेतन स्वामी (राजस्थानी), अब्बूरि छायादेवी (तेलुगु) और जाबिर हुसैन (उर्दू) शामिल हैं।

– दीपक कुमार, दिल्ली से।

कवि 'विराट' को पं० रामेन्द्र तिवारी सम्मान

जबलपुर की साहित्यिक संस्था 'कादम्बरी' द्वारा वर्ष 2005 का प्रतिष्ठित 'पं० रामेन्द्र तिवारी सम्मान इंदौर के कवि चन्द्रसेन 'विराट' को उनके समग्र लेखन हेतु 27 नवम्बर 2005 को जबलपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें सम्मान-राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। 'विराट' की दो दर्जन से अधिक काव्य कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'विचार दृष्टि' की ओर से भाई 'विराट' जी को हार्दिक बधाई।

– विचार प्रतिनिधि, इंदौर से

निर्मल वर्मा

जिन्हें महारत हासिल थी संवेदनाओं को उकेरने में

O सिद्धेश्वर

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद सबसे ख्यातिलब्ध कथाकार निर्मल वर्मा का नाम आते ही ज़ेहन में एक ऐसा प्रयोगधर्मी साहित्यकार का अक्स उभर आता है, जिन्हें संवेदनाओं को उकेरने में महारत हासिल थी और जिसने लधुकथा के क्षेत्र में हिंदी साहित्य को किसी भी समकालीन लेखक की तुलना में अधिक समृद्ध बनाया। 3 अप्रैल, 1929 को शिमला में जन्मे निर्मल वर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की। सन् 1950 में लिखी गई उनकी पहली कहानी एक छात्र पत्रिका में छपी और इसके बाद 1959 में पहला कथा-संग्रह 'परिंदे' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद तो वे हिंदी कथा साहित्य में नए प्रयोग करनेवाले लेखक के रूप में स्थापित हो गए। इसी दौरान आधुनिक चेक लेखकों की रचनाओं को हिंदी में अनुवाद के एक कार्यक्रम के लिए चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग आने का उन्हें निमंत्रण मिला, जहाँ उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'वे दिन' लिखा। सन् 1959 से 1970 के बीच यूरोप के व्यापक भ्रमण के दौरान निर्मल वर्मा ने एक राष्ट्रीय अँग्रेज़ी के लिए बतौर सांस्कृतिक संवाददाता का काम भी किया। कथा और चिंतन में उनके अंदर एक नैतिक साहस था। आपातकाल 1980 में यूरोप के भ्रमण से भारत वापस आने के बाद भारत भवन में निराला सृजन पीठ के वे अध्यक्ष बने और सन् 1988 से 1990 तक शिमला में यशपाल रचनात्मक लेखन संस्थान के वे निदेशक भी रहे।

निर्मल वर्मा ने कथा कहानियों के अतिरिक्त यात्रा-संस्मरण तथा निबंध जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया। साहित्य जीवन के सफ़र में अंतिम पड़ाव पर पहुँचने से पूर्व उनके पाँच उपन्यास , आठ लघुकथा संग्रह, नौ निबंध व यात्रा-संस्मरण प्रकाशित

हो चुके हैं।

निर्मल वर्मा, जिनका आधुनिक कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद सर्वाधिक योगदान माना जाता है उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'अंतिम अरण्य', 'रात का रिपोर्टर', 'वेदना', 'धुंध से आती धुंध', 'शामिल है। उन्हें सन् 1985 में 'भारतीय ज्ञानपीठ' सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें 'कव्वे और काला पानी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिल चुका है। अंतराष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान का फ़ैलो वे रह चुके हैं। सच तो यह है कि वे शेष दुनिया से और हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में सबसे अधिक सुनी जानीवाली आवाज़ थे। निर्मल वर्मा से देश ही नहीं, बल्कि देश के बाहर भी हिंदुस्तान की पहचान बनती थी। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय का मानना है कि उनके विचारों को माननेवाले जितने लोग हैं उनमें ज़्यादा उनकी कहानियों को पढ़नेवाले व सराहनेवाले हैं। उनकी कहानी 'माया दर्पण' पर एक फ़िल्म बनी, जिसे सन् 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिंदी फ़िल्म पुरस्कार प्रदान किया गया। उनकी रचनाओं का कई यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इंग्लैंड के रीडर्स इंटरनेशनल ने उनकी कहानियों को सन् 1988 में एक संग्रह 'द वल्ड एल्सव्हेयर' प्रकाशित किया था। बी॰बी॰सी॰ ने उनपर बनाए गए वृतचित्र का प्रसारण भी किया। मैं इस माने में अपने को सौभाग्यवान मानता हूँ कि दिल्ली में रहने की वजह से निर्मल वर्मा को अनेक बार सुनने-समझने के साथ-साथ उनसे बात-चीत करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ है और उनके विचारों से न केवल बहुत प्रभावित हुआ बल्कि मेरे लेखन और आचारण पर भी उसका गहरा असर पड़ा। भले ही विगत 25 अक्टूबर 2005 को लंबी बीमारी के बाद वे हम सबों के बीच से विदा हो गए, लेकिन अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से हमेशा ही साहित्य प्रेमियों के बीच मौजूद

जैसे तुम्हारे आने पर सदा
तुम्हारा स्वागत करता था
वैसे ही इस उड़ान को
इस जीने को भी
इस घर का भी तिनका-तिनका
तुम्हें अलविदा कहेगा।

इमरोज़ के इन लफ़्ज़ों ने आख़िर एक निष्ठुर हक़ीक़त का जामा पहन ही लिया। एकाएक घोंसले से उड़ गई अमृता प्रीतम ने बिना शादी के इमरोज़ के साथ रहने का फ़ैसला करते वक़्त इमरोज़ से कहा था, "तुम पहले दुनिया देख लो फिर मेरे साथ रहने आना।" इमरोज़ ने कमरे के सात फेरे लगाए, बोले, "लो देख ली दुनिया।" यह होता है प्यार। अमृता प्रीतम के पूरे रचना संसार में यह प्यार बिखरा पड़ा है। अब कौन इस प्यार को ज़ुबान देगा? अब कौन उनके लिए अमृता प्रीतम की तरह शब्द पिरोएगा?

दरअसल अमृता प्रीतम अपने जीवन में न तो कभी टूटीं और न बिखरीं। ख़ुद को समेटकर रिश्तों के किसी मर्तबान में क़ैद करना तो उन्हें गवारा हो ही नहीं सकता था। पीर उनकी थी, लाभ साहित्य को मिला। उनकी कालजयी रचनाओं में भाव, एहसास और कल्पना तीनों ही स्तरों पर उनकी पहचान अद्भुत थी। भावनाओं की जैसी बारिश और कोमल कताई उनकी क़लम करती थी, फिर उससे जो कृति नि:सत होती थी, वह क़लम के मूर्धन्यतम लेखनी से चितेरों को अपनी लेखनी से चमत्कृत कर देती थी।

अमृता प्रीतम की रचनाओं का अनुवाद विश्व की 34 भाषाओं में हुआ है। हिंदी में उनकी सभी कृतियाँ अनूदित होकर प्रकाशित हो चुकी हैं। अँग्रेज़ी में उनकी 14 कृतियों के अनुवाद उपलब्ध हैं। विभाजन के पहले और बाद में उथल-पुथल के दौर में पंजाब में रहते हुए और तेजी से बदलते समाज और सांस्कृतिक युग को जीते हुए उन्होंने अपने समय को अपनी रचनाओं में ईमानदारी से उतारा तथा अपनी कविताओं, उपन्यासों और कहानियों द्वारा उन्होंने स्वर दिया।

अमृता प्रीतम की रचनाओं में एक पूरा युग बोलता है और सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें ज़्यादातर किसी युग से बँधी हुई नहीं हैं। प्रत्येक भाषा में कुछ लेखक ऐसे होते हैं, जो अपने जीवनकाल में ही मिथ की भाँति स्थापित हो जाते हैं। अमृता प्रीतम के साथ भी ऐसा ही हुआ। यों तो वे आजीवन

पंजाबी की लेखिका रहीं लेकिन हिंदी ही नहीं, प्राय: सभी भारतीय भाषाओं के साहित्यप्रेमी उन्हें अपनी ही भाषा की लेखिका मानते हैं, मानते रहेंगे। सच कहा जाए तो वे जीवनकाल में ही न केवल स्थापित हुईं, बल्कि मिथ बनती गईं। मैं अनुभव करता हूँ कि भारतीय कविताओं में अमृता प्रीतम का नाम सदैव अमर रहेगा, क्योंकि उनसे पंजाबी भाषा के जरिए भारतीय अवचेतन तक पहुँचने का हमेशा प्रयास किया।

अमृता प्रीतम ने ताशकंद, मास्को, बुल्गारिया, युगोस्लाविया, हंगरी, रूमानिया, फ्रांस, ओसोलो, नेपाल और अन्य देशों के साहित्यसमागमों में सम्मिलित होने हेतु भ्रमण किया।

अमृता प्रीतम की सुंदरता के विषय में पंजाबी की वरिष्ठ लेखिका अजित कौर कहती हैं कि "अमृता इतनी सुंदर थी कि वह अपनी छोटी उम्र में परदे की आड़ में छुपकर उनकी ख़ूबसूरती निहारा करती थी। उन दिनों उनका गोरा रंग कामनी जैसी भौंहें, पतले सुर्ख़ होंठ, ख़ूबसूरत-सी ठुड्डी उन्हें ख़ूब लुभाती।" आख़िर तभी तो अंतिम समय में इमरोज़ ने जिस प्यार और समर्पण के साथ अमृता की देखभाल की उसकी मिसाल इस दुनिया में मिलना बहुत मुश्किल है। किसी तपस्वी की तरह इमरोज़ दिनरात अमृता प्रीतम की सेवा में डटे रहे। श्रीमती कौर इसकी साक्षी रही हैं। वास्तव में अमृता प्रीतम को ज़िंदगी में भरपूर प्यार मिला और उन्होंने भी जी भरकर ज़िंदगी को प्यार किया। इमरोज़ ने अमृता प्रीतम के देहावसान के बाद उनकी देह को रस्सी से नहीं, बल्कि उनकी रंग-बिरंगी चुन्नियों से बाँधा था और बड़े प्यार से गोद में उठाकर उन्हें चिता पर लिटाया था। यह एक अजीब विडंबना है कि अमृता प्रीतम की मृत्यु दीवाली से ठीक पहले यानी 31 अक्टूबर 2005 वाली रात खिड़की पर बैठी किसी नन्ही चिड़िया के हौले से उड़ जाने की तरह हुई।

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत विभिन्न देशों की अनेक बार यात्रा करनेवाली अमृता प्रीतम के जीवन और कृतित्व पर फ़िल्में और उपन्यास एवं कहानियों पर दस फ़िल्में व टी०वी० धारावाहिक का निर्माण हो चुका है। अमृता प्रीतम राज्यसभा की सदस्य भी थीं।

साहित्य के चितेरों को अपनी लेखनी से चमत्कृत कर देनेवाली कवयित्री अमृता प्रीतम को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि।

○ संपादक

मधु दंडवतेः

जिनके जीवन में अंतिम घड़ी तक समाजवाद प्रतिबिंबित होता रहा

हमारे देश में समाजवादी आंदोलन से जुड़े केंद्र सरकार के मंत्री पद पर रहकर प्रो० मधु दंडवते ने अपने मंत्रालय में जो समाजवादी मानदंड का निर्माण किया वह किसी और समाजवादी मंत्रियों ने विरले ही किया। जार्ज फर्नांडीस, कर्पूरी ठाकुर तथा मधु लिमये को अपवाद में रखा जा सकता है। मधु दंडवते के जीवन में अंतिम घड़ी तक समाजवाद प्रतिबिंबित होता रहा।

सुप्रसिद्ध पत्रकार स्व० उदयन शर्मा ने दंडवते के पहली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल का सदस्य बनने पर एक संस्मरण लिखा था जिसमें कहा गया है कि उनके मंत्री बनने पर समाजवादी नेता सुरेन्द्र मोहन की पत्नी मंजू मोहन और वरिष्ठ नेता एस० एम० जोशी जिस वक्त लड्डू बाँट रहे थे उसी समय इस आयोजन से बेखबर निश्चिंत होकर गुसलखाने में मधु दंडवते थापी से अपने कपड़े धो रहे थे। मंत्री बनने के बाद भी उनके जीवन में कुछ नहीं बदला था। उनके कमरे में दोस्तों और पार्टीजनों का वही पुराना मजमा जमा रहता था और निजी सचिव का कोई नमोनिशान नहीं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सुरक्षा का तामझाम लेने से उन्होंने साफ मनाकर दिया था ताकि कभी भी कोई प्रताड़ित या जरूरतमंद व्यक्ति मंत्री से सीधे मिलकर अपनी व्यथा-कथा सुना सके। मंत्री बनने के बाद भी वही दो कमरों के छोटे से फ्लैट में वे रहते थे।

मधु दंडवते मोरारजी सरकार में रेल मंत्री तथा बाद में वी०पी० सिंह सरकार में वित्त मंत्री भी बने थे। रेलमंत्री का पद ग्रहण करते ही 1977 में उन सब रेल कर्मचारियों को उन्होंने सेवा में बहाल कर दिया था जिन्हें 1974 में सांकेतिक रेल हड़ताल में बरखास्त कर दिया गया था। यही नहीं, बल्कि रेल मंत्री के तौर पर तीसरी श्रेणी के यात्रियों के लिए बनायी गयी लकड़ी की खाली शायिकाओं पर दंडवते जी ने गद्दे लगवा दिए और वे दूसरी श्रेणी की शायिकाओं जैसी बन गयीं। इसके अतिरिक्त गीताजलि एक्सप्रेस जैसी श्रेणी विहीन रेलगाड़ी की भी उन्होंने शुरूआत की।

इसी प्रकार जब मधु दड़वते को वी०पी० सिंह ने वित्त मंत्रालय दिया तो उन्होंने राज्यों की आर्थिक स्थिति सुधारने और आर्थिक व्यवस्था में विकेंद्रीकरण लाने के उद्येश्य से केंद्र द्वारा नियंत्रित समाज कल्याण संबंधी सभी परियोजनाओं को राज्य सरकारों के नियंत्रण में दे दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि समाजवादी आंदोलन की यह आकांक्षा कि राजनीतिक और आर्थिक सत्ता का विकेंद्रीकरण हो, आंशिक तौर पर लागू हो गई।

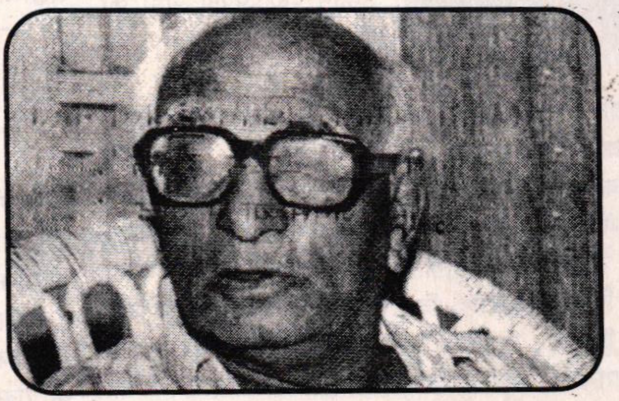

मधु दंडवते ने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया है जिसकी चर्चा भी यहाँ करना लाजिमी है। भारत के संविधान में संपति के अधिकार को बुनियादी अधिकारों की सूची में शामिल करके संविधान सभा के अनुदार सदस्यों ने समाज परिवर्तन के रास्ते ही बंद कर दिए थे। मधु दंडवते ने लोकसभा के सदस्य होते ही संसद में उस आशय के प्रस्तुत विधेयक को दुबारा पेश कर दिया और लोक सभा में उसे मान्य कराया जिसके परिणाम स्वरूप भूमि सुधारों को संपत्ति के मौलिक अधिकारों में संवैधानिक अनुच्छद 19 में संशोधन का अधिकार संसद को मिल सका। दंडवते की इस सामाजिक परिवर्तनवादी उपलब्धि पर स्वभाविक रूप से किसी को भी गर्व हो सकता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रो० दंडवते का राजनीतिक जीवन संघर्षों से भरा हुआ था। सन् 1942 में गाँधीजी के द्वारा छेड़े गए 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेते हुए वे गिरफ्तार होकर तीन वर्ष तक जेल में बंदी रहे। इसी प्रकार गोवा मुक्ति आंदोलन में सत्याग्रहियों की एक जमात का नेतृत्व करते हुए उन्होंने पुर्तगाली पुलिस की इतनी सख्त मार सही कि वे बेहोश हो गए थे। इंदिरा जी के आपातकाल में भी उन्हें उन्नीस महीने की जेल की हवा खानी पड़ी थी। भूमि मुक्ति आंदोलन में वे दो बार जेल गए।

प्रो० दंडवते लगभग 20 वर्षों तक भारतीय विज्ञान संस्थान में भौतिकी के प्रभावशाली प्राध्यापक रहे। प्राध्यापन से मुक्त होने के पैंतीस साल बाद उन्हें भारतीय विज्ञान संस्थान ने सम्मानित किया। प्रो० दंडवते एक सिद्धांतवादी लेखक भी रहे। उन्होंने समाजवाद, मार्क्सवाद तथा 'बापू' के संदेश और धर्मनिरपेक्षता पर अनेक पुस्तकें लिखी। यही नहीं, वे अँग्रेजी साप्ताहिक 'जनता' के कई वर्षों तक संपादक भी रहे। सादगी और सरलता की तो वे प्रतिमूर्ति थे। शान-शौकत-आडंबर से पूरा परहेज, सादा जीवन और उच्च विचार के परिपोषक, निर्भीक संसद सदस्य के तौर पर उनकी विद्वता कौशल और सामाजिक प्रतिबद्धता की याद लोकसभाध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने अभी हाल ही में की। कैंसर से पीडित 81 वर्ष की उम्र में गत 12 अक्टूबर को उन्होंने मुंबई के जसलोक अस्पताल में अंतिम सांस ली और निधन के दो दिन पूर्व ही उनके द्वारा देहदान की घोषणा की वजह से उनके परिजन उनका अंतिम संस्कार तक नहीं कर सके। सादगी से भरे, मृदुभाषी ऐसे मानदंड दंडवते की स्मृति को मेरा प्रणाम।

- संपादक

पूर्वराष्ट्रपति के॰ आर॰ नारायणन : जिनका राष्ट्रपतित्वकाल स्मरणीय रहेगा

केरल के एक निर्धन परिवार में जन्मे और भारत के राष्ट्रपति पद तक पहुँचे कोचेरिल रमण नारायणन अपने उत्तराधिकारियों और देशवासियों के लिए एक उज्ज्वल एवं अनुकरणीय विरासत छोड़ गए हैं। 25 जुलाई, 1997 को देश के दशवें राष्ट्रपति पद पर आरूढ़ हुए के॰आर॰ नारायणन ने अपने कार्यकाल में यह दिखाया कि राष्ट्रपति पद पर आसीन व्यक्ति मात्र सरकार का रबर स्टैंप नहीं, बल्कि संपूर्ण देश की अंतरात्मा की आवाज़ है, जिसे ज़रूरत पड़ने पर परंपरा तोड़कर भी राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों पर हस्ताक्षेप करने से नहीं चूकना चाहिए। इसके साथ उन्होंने संविधान द्वारा उन्हें दी गई ज़िम्मेदारियों को निभाने में न तो शिथिलता दिखाई और न ही उनसे बचने की कोशिश की। आपको याद होगा जब सरकार ने संविधान की समीक्षा के बहाने संविधान को कोसना प्रारंभ किया था तो उन्होंने स्पष्ट किया कि संविधान ने हमें विफल नहीं किया। हमने संविधान को विफल किया है। राष्ट्रपति के नाते के॰आर॰ नारायणन दलिय निष्ठा से ऊपर उठ चुके थे, हालांकि 1992 में उप राष्ट्रपति बनने के पूर्व वह तीन बार काँग्रेस के टिकट पर लोकसभा सदस्य रह चुके थे। यह 1997 के आखिरी दिनों में देशवासियों ने देखा। राष्ट्रपति के रूप में अपने कर्त्तव्य निर्वहन के रास्ते में कोई भी क़ीमत चुकाने में उनको परहेज़ नहीं था। न्यायधीशों की नियुक्ति में दलित के संबंध में उन्होंने अपने विचार निर्भीकता से व्यक्त करते हुए कहा कि उच्च न्यायालयों में दलित और कमज़ोर वर्गों के प्रतिनिधित्त्व की भी कोई व्यवस्था होनी चाहिए और उच्च न्यायालय से उन्होंने इस पर राय भी माँगी। यह दिगर बात है कि उनकी बात नहीं सुनी गई, किंतु उन्होंने अपनी संवैधानिक शक्तियों का खुलकर इस्तेमाल किया। स्वभाव और निष्ठा से धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रपति के समक्ष एक चुनौती यह भी खड़ी हुई थी कि उन दिनों देश में बह रही सांप्रदायिकता की अंतर्धारा के मामले में वह क्या करें। इस संदर्भ में अपनी व्यथा और चिंता को छिपाने का उन्होंने प्रयास नहीं किया।जनवरी 1999 में जब उड़ीसा में सांप्रदायिक भीड़ ने ईसाई मिशनरी फादर ग्राह्मस्टेन्स को उनके दो बच्चों सहित जला दिया तो राष्ट्रपति के॰आर॰ नारायणन ने सार्वजनिक रूप से अपनी चिंता प्रकट की थी। उनके कार्यकाल के अंतिम वर्ष 2002 में जब गुजरात में भीषण दंगे हुए तो उन्होंने पुनः अपनी पीड़ा को दोहराया।

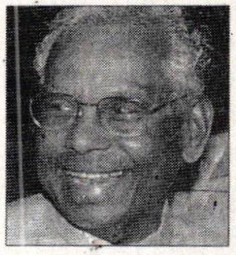

सन् 2000 के गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति के॰आर॰ नारायणन द्वारा दिया गया भाषण हमारे लोकतंत्र के इतिहास में इसलिए स्वर्णिम दस्तावेज़ बनेगा कि जिसने भी वह भाषण सुना होगा वह इसे कभी भूल नहीं सकेगा। कारण कि परंपरा को तोड़ते हुए और वाजपेयी सरकार की आपत्तियों की परवाह नहीं कर उन्होंने अपना मन खोलकर जनता के समक्ष रखा। दरअसल 25 जनवरी, 2000 को दिया गया उनका भाषण एक उत्कृष्ट कविता है जो बंजर हृदयों में आशा की हरियाली पैदा करती है। उसके कुछ अंश का आप भी लुत्फ़ उठाएँ,

"गणतंत्र बने पचास वर्ष पूरे हो गए हैं। फिर भी हम देखते हैं कि सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय हमारे करोड़ों देशवासियों के लिए अभी भी एक अधूरा सपना है। हमारे पास विश्व भर से सबसे अधिक तकनीकविद् हैं लेकिन विश्व की तुलना में निरक्षरों की संख्या भी सबसे अधिक है। हमारे यहाँ मध्यम वर्ग की संख्या भी सबसे अधिक है किंतु ग़रीबी रेखा के नीचे जीनेवालों की संख्या भी सबसे अधिक है और कुपोषण से पीड़ित बच्चों की संख्या भी सबसे अधिक है। हमारे बड़े-बड़े कारख़ाने गंदगी के ढेर से उठते हैं और उपग्रह गरीबी की झोपड़ियों से उड़कर अंतरिक्ष में जाते हैं। महाभारत की द्रौपदी के समय से लेकर हमारी बहनों और माताएँ सरेआम चीरहरण और अपमान की शिकार बनती हैं, जो व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक प्रतिशोध का ज़रिया बन गया है। हमारी सबसे बड़ी राष्ट्रीय कमज़ोरी महिलाओं की स्थिति है और हमारी सबसे बड़ी शर्म दलित की स्थिति है। ...।"

ग़ज़ल परंपरा को तोड़नेवाले पूर्व राष्ट्रपति के॰आर॰ नारायणन, जो देशवासियों के लिए उज्ज्वल विरासत छोड़ गए और जिसकी सोच में समाहित था लोक, को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि।

मौन हुए मुखर नेता एच॰के॰एल॰ भगत

केंद्र में कई मंत्रालयों का दायित्त्व संभालनेवाले और कभी दिल्ली के सबसे प्रभावशाली काँग्रेसी मुखर राजनेता था यश और कीर्तियों की आँखमिचौनी से जूझते हरकिशन लाल भगत अब नहीं रहे। इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद 1984 में हुए दंगों के राक्तरंजित छीटों की चादर से उनका यश और बल ढँक गया था। कहा जाता है कि पिछले एक वर्ष से वे अस्पताल में भर्ती थे और उन्हें भूलने की बीमारी अल्जाइमर्स के अतिरिक्त कई रोगों ने जकड़ रखा था।

4 अप्रैल, 1921 में पाकिस्तान में जन्मे स्व॰ भगत 1947 में दिल्ली आ गए और यहाँ की राजनीति में छा गए। पार्टी की विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में वे सक्षम माने जाते थे। 1982 में उन्होंने ऐशियन गेम्स विलेज के आयोजन में मुख्य भूमिका निभाई थी। ओल्ड फॉक्स के नाम से मशहूर तथा मुखर सांसद के रूप में अपनी पहचान बनानेवाले स्व॰ भगत को 'विचार दृष्टि' परिवार की श्रद्धांजलि।

–उपसंपादक, 'विचार दृष्टि'

अलविदा कह गए रामानंद सागर

87 वर्षीय मशहूरे ज़माना फ़िल्म निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक और साहित्यकार रामानंद सागर का 12 दिसंबर, 2005 को देर रात जुहू स्थित आवास पर उनका निधन हो गया। वे कई महीनों से बीमार थे।

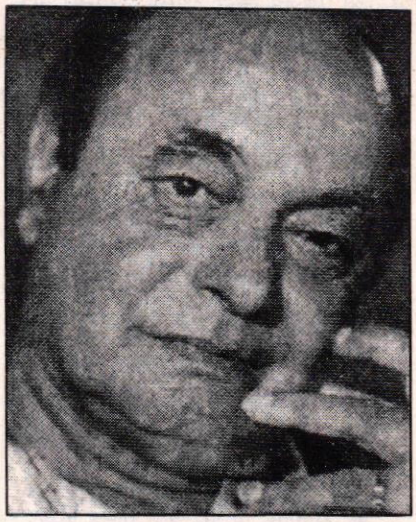

उन्होंने भारतीय सिनेमा को एक ख़ास बुलंदी बख़्शी। दर्शक उनके मनोरंजक फ़िल्मों के दीवाने थे। 'आँखें', 'चरस', 'गीत ललकार के', 'प्यारा दुश्मन', 'अरमान', ' कोहिनूर', 'पैग़ाम', और 'इंसानियत' उनके द्वारा निर्देशित प्रमुख फ़िल्में हैं। उनके द्वारा निर्मित-निर्देशित टेलिविज़न धारावाहिक 'रामायण' को अभूतपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वर्तमान में वे 'साई बाबा' नामक एक अन्य टेलिविज़न धारावाहिक के निर्माण में लगे थे। अपने उपन्यास '... और इंसान मर गया' में देश के विभाजन की त्रासदी का उन्होंने सशक्त रेखांकन किया है।

रामानंद सागर विभाजन के दर्द और उसके अनुभवों को 'और इंसान मर गया' के नाम से शब्द बद्ध किया जो विभाजन की विभीषिका और क्रूरता झेलनेवालों का मार्मिक आलेख साबित हुआ। फिल्मों को अगर उन्होंने रीतिकाल दिया तो धारावाहिकों को भक्तिकाल के बाद रीतिकाल आया था और छोटे परदे पर रीतिकाल के बाद भक्तिकाल। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में धार्मिक धारावाहिकों के आदि पुरुष के रूप में स्व० सागर को याद किया जाएगा।

विचार कार्यालय, मुंबई से।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री सईद का सियोल में निधन

विचार कार्यालय, दिल्ली

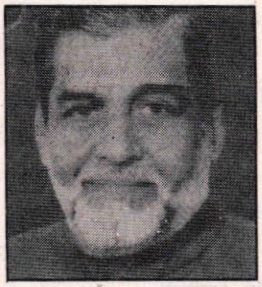

कैंसर से पीड़ित केंद्रीय ऊर्जा मंत्री पी०एम० सईद का दक्षिण कोरिया की राजधानी, सियोल में विगत 18 दिसंबर को हृदयगति रूक जाने के कारण निधन हो गया। दस मई 1941 में लक्षद्वीप के अंडरोथ द्वीप में जन्में पद्यनाथ मोहम्मद सईद सन् 1967 में पहली बार लक्षद्वीप लोकसभा सांसद बने और 1971 के बाद इस सीट से नौ बार विजयी हुए। मई 2005 के आम सभा चुनाव में युवा सांसद मुत्तुकोया से हारने के बाद वे इसी वर्ष राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। उनके द्वारा देश को दी गई उनकी सेवाएँ अमूल्य हैं। नर्म प्रकृति के सईद अपने पीछे हजारों शुभेच्छुओं सहित एक बेटा और सात बेटियाँ छोड़ गए हैं। नेहरू परिवार के बेहद करीबी रहे सईद को श्रद्धांजलि। – विचार कार्यालय, दिल्ली।

कलाक्षितिज से एक तारा टूटकर गिरा

विश्वविख्यात मधुबनी चित्रकला की ख्यातिप्राप्त मधुबनी जिला (बिहार) के ग्राम जितवारपुर निवासी 91 वर्षीया सीता देवी का 12 दिसंबर, 2005 को सुबह करीब साढ़े आठ बजे निधन हो गया।

भारत सरकार की ओर से पद्श्री की उपाधि से नवाज़ी गई सीता देवी ने अपनी प्रतिभा के बल पर मिथिला पेंटिंग्स को अंतर्राट्रीय पहचान दिलाई। बिहार सरकार की ओर से वर्ष 84 में उन्हें 'बिहार रत्न पुरस्कार' अता किया गया। इसके अतिरिक्त केंद्र सरकार के राट्रीय पुरस्कार एवं अन्य सम्मान आदि से भी सम्मनित किया गया।

विचार कार्यालय, पटना से।

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय कानून 1956 नियम 8) के अनुसार विचार दृष्टि के संबंधित विवरण

प्रपत्र-4

1. प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वर
2. प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
3. प्रकाशन अवधि	:	त्रैमासिक
4. मुद्रक का नाम	:	सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	'दृष्टि' - यू०-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
5. प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	'दृष्टि'- यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
6. संपादक का नाम	:	सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
7. मालिक का नाम व पता	:	सिद्धेश्वर, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है

तिथि : 1 जनवरी, 2006

ह०
(सिद्धेश्वर)
प्रकाशक

साभार स्वीकार

पुस्तकें

1. आज भी खरे हैं तालाब
लेखक : अनुपम मिश्र
प्रकाशक : गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली-2
2. कैद में सूरज (काव्य-संग्रह)
कवि : कृष्ण मित्र
प्रकाशक : मुक्त प्रकाशन, तहसील कम्पाउंड, गाज़ियाबाद (उ॰ प्र॰)
3. मानस दर्पण
संकलन : टी॰सी॰ गुप्ता, डी-24, शकरपुर, दिल्ली-92
4. सुखी परिवार अभियान
लेखक : गणिराजेन्द्र विजय
प्रकाशक : श्री विजय इन्द्रटाइम्स परिवार, ई-253, सरस्वती कुँज अपार्टमेंट, 25, आई पी॰एक्स, पहाड़गंज, दिल्ली- 92
5. साँ-साँस मनुहार (दोहा-संग्रह)
कवि : देवेन्द्र आर्य
प्रकाशक : साहित्य सहकार, दिल्ली 32
6. भारतीय लोकतंत्र पर सामूहिक बलात्कार
कर्नल शिव शंकर राय
जानकी प्रकाशन, अशोक राजपथ,पटना-4
7. धूप में पानी की लकीरें
(काव्य-ग़ज़ल संग्रह)
डॉ॰ शांति जैन
अभिरुचि प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, दिल्ली-110032
8. नदी की लहरें (कविता-संग्रह)
डॉ॰ सतीश चंद्र भगत
प्रकाशक : भारतीय पुस्तकालय, बनौली, दरभंगा,
9. संत रविदास (एक सैद्धांतिक नाटक)
अँधेरा (लधुकथा संग्रह)
डॉ॰ स्वर्ण किरण
प्रकाशक : मिथिलेश प्रकाशन, आरा,
10. ब्याज़े बहज़ाद (ग़ज़ल-संग्रह)
बहज़ाद फ़ातमी
प्रकाशक : शहनाज़ फ़ातमी, पटना
11. ब्याज़े बहज़ाद (व्यंग्य-कविता संग्रह)
रज़ा नकवी वाही
प्रकाशक : शहनाज़ फ़ातमी, पटना
12. बादलों के साये तले (ग़ज़ल-संग्रह)
कवि : मो॰ सुलेमान
प्रकाशक : गंगा-यमुना प्रकाशन, पटना
13. कालजयी बर्बरीक (खण्ड काव्य)
कवि : विशुद्धानंद
प्रकाशक : आनंद आश्रम प्रकाशन, पटना
14. दिल्ली और आजादी
लेखक : डॉ. धर्मेन्द्रनाथ
प्रकाशक : स्वतंत्रता सेनानी परिचय समिति, दिल्ली
14. जीवन के खोल-कहानी संग्रह
कवि : बैनी कृष्ण शर्मा, नई दिल्ली-59

पत्रिकाएँ

1. अणुव्रत - अक्टूबर, नवम्बर, दिसंबर-05
अणुव्रत यात्रा अर्द्धशती का विशेषांक
संपादक : डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट
प्रकाशक : अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली
2. भारद्वाज परिवार - जनवरी-मार्च-2005
संपादक : बृजेश चंद्र कटियार
प्रकाशक : 237, कटरा मैनपुरी -205001 उ॰ प्र॰
3. काव्य-गंगा जुलाई-सितंबर 2005
प्र॰ संपादक : डॉ॰ स्वामी श्यामानन्द सरस्वती
प्रकाशक : 895, रानीबाग, दिल्ली 34
4. मिस्अिक इंडिया अगस्त-सितंबर 2005
प्र॰ संपादक : संनील बाबेल
प्रकाशक : एम॰सी॰भेडारी फाउंडेशन, 69, बाग दीवार, दूसरा तल, फतेहपुरी, दिल्ली-6
5. चक्रवाक् अप्रैल-जून 2005
संपादक : निशांतकेतु
प्रकाशक : सुलभ साहित्य अकादमी, सुलभ ग्राम, महावीर इंक्लेव, पालम डाबरी मार्ग, नई दिल्ली 45
6. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद् पत्रिका
सितंबर-अक्टूबर 2005
प्र.संपादक : डॉ बी राम सजीवय्या
प्रकाशक : 58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजीनगर, बैंगलूर 560010
7. श्री विजय इन्द्र टाइम्स सितम्बर 05
प्र॰ संपादक : ललित गर्ग
प्रकाशक : श्री विजय इन्द्रटाइम्स परिवार, ई-253, सरस्वती कुँज अपार्टमेंट, 25, आई पी॰एक्स, पहाड़गंज, दिल्ली- 92
8. पाटलिपुत्र टाइम्स, जुलाई-अगस्त 05
संपादक : जगदीश प्र॰ सिन्हा 'दयानिधि'
प्रकाशन : रामसहाय लेन, महेन्द्रू, पटना-6
9. समतावादी भारत, जनवरी-जून 05
संपादक : सुधीर हिलसायन
प्रकाशक 123, वी॰पी॰ हाउस, रफ़ी मार्ग,नइ दिल्ली-1
10. संकल्प - जुलाई-सितंबर -05
प्र॰ संपादक : प्रो॰ टी॰ मोहन सिंह
प्रकाशक : गोरखनाथ तिवारी
सचिवं, हिंदी अकादमी, हैदराबाद, फ़्लैट न॰- 259/बी॰, ब्लॉक न॰- 11, तीसरी मंज़िल, जनप्रिया टाउनशिप, मसल्लापुर, हैदराबाद, 500076 (आ॰प्र॰)
11. अम्बेडकर मिशन पत्रिका, दिसम्बर-05
संपादक-बुद्धशरण हंस
प्रकाशक-अम्बेडकर मिशन, चितकोहरा, पटना-2
12. बच्चों का देश, दिसम्बर-05
संपादक-कल्पना जैन, 7, उषा कालोनी, मालवीय नगर, जयपुर-17
13. राष्ट्रभाषा, नवम्बर-05
प्रधान संपादक-प्रा. अनन्तराम त्रिपाठी
प्रकाशक-राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003
14. अंजुरि, जनवरी-जून 05
संपादक-बैनी कृष्ण शर्मा, आर-1/17, नवादा हाउसिंग कॉम्पलेक्स, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-59
15. युवादृष्टि, दिसम्बर-05
प्रधाान संपादक-कमलेश चर्तुवेदी
अणुव्रत भवन, नई दिल्ली-2

Tele 0612-2352480

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKERBAGH, PATNA-800020.

HIGHLIGHTS:

1. For members of lower & middle income group of people this society is said to be one of the largest co-operative house construction societies in Asia.
2. In the first phase 131.12 acres of land acquired by Government of Bihar were handed over to this society.
3. The society has got an opportunity to attract 1730 members from lower income group of people.
4. In all 1600 plots were bifurcated in planning out of which 10 plots were reserved for community hall, office building, godown and four-storied building for common utilities.
5. 1400 houses have so far been constructed by the members.
6. 500 members have been given housing loan through this society.
7. Boundary walls in 15 parks have already been constructed by the society.
8. In most of the sectors metalled & cemented roads have also been construcred.
9. Efforts are being made to improve the drainage system, to have plantation and lighting facilities.
10. In the second phase 7 acres of land have been purchased at Jaganpura village in which six houses have been constructed so far.
11. Out of 96 plots 95 plots have already been allotted to the members and one plot has been reserved for common utilities.
12. The society makes available its community hall to the members on priority basis for the marriage ceremony of their sons & daughters at half of the preseribed charges.
13. As far as possible the society tries to provide street light, maintain roads, clean manholes, construct park and other development activities.
14. All those members who have not filled up their nominee forms as yet are requested to deposit the forms duly filled in after getting the forms from the office of the society.

With regards to the members.

L.P.K. Rajgrihar	Sidheshwar Prasad	Prof. M.P. Sinha
Chairman	Vice Chairman	Secrectary

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो

झारखंड

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

परीक्षा

प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रुपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

वर्ष : 8 अंक : 26 जनवरी-मार्च 2006 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

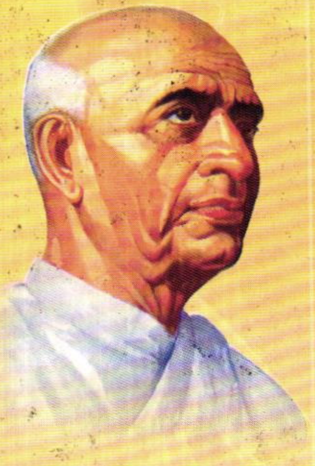

नव वर्ष के अवसर पर हमारी शुभकामनाएँ

संस्था का ध्येय है –

- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

पटेल फाउंडेशन

सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बनें। आपका सहयोग अपेक्षित है।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली

फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

Dr. Vishvendra Kumar Sinha

M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर